

आजादी कीर शूरारी के दीवाने सरहदी पडानो के
कत्रायली जीवन की एक एतिहासिक गाथा

मेजर बाला दुवे का नया उपन्यास :

आवारा सूरज

आवारा सूरज

बाला कृष्ण



आवारा सूरज

सन् अठारह सौ सत्तानवे ।

उत्तर-पश्चिम सरहद पर जज्वातो की एक भयानक आंधी उठी । पठानों के दिल दूने हो गए थे । जिधर देखो उधर ही बन्दूक की नलियाँ दिखाई देती । सबके दिल में एक ही तूफान उठा था । इन दगाबाज फिरंगियों को पथरीली जमीन में दफन कर दो । वजीरस्तान, स्वात, तीराह और काले पहाड़ के कबीलों के सब सरदार दरमई और 'समाना सुख' की ऊँची दरारों को पार करके चगरु कोतल के पास वाले गाँव में इकट्ठे हुए थे । महमंद कबीले के सरदार हिलाल खाँ ने मेहेंदी से रंगी दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहा, 'वतन की पुकार आप सबने सुनी होगी । वतन कुरवानी माँग रहा है, विरादरो ! कबीलो के आपसी इत्तफाक दफन करो । पठान एक हैं, वस यह ही दिल में बसा लो । इन फिरंगी फरेबियों का गुराना अब और नहीं सहा जाता ।'

सभी कबीलो के सरदार मौजूद थे । युसुफजई, उतमानजई, रज्जार, हुसनजई, मीरानजई, कोहाट दर्रे के अफ्रीदी, आका खेल के अफ्रीदी, जका खेल के अफ्रीदी, महमंद, शीरानी, महमूद, रबिया खेल के उरकजई, विजोटी उरकजई, काबुल खेल के वजीर, दरवेश खेल के वजीर, मित्तानी, दुरानी और किंदरजई कबलबाश । काले पहाड़ के छोटे-मोटे कबीले भी एक झडे के नीचे आए थे ।

विद्रोह का तूफान धीरे-धीरे रग बदल रहा था । पीले रंग का आसमान कासा और खूनो होने लगा था । विद्रोह अब जिहाद की शक्ल अख्तियार

करने लगा था। सब सरदारों ने अपनी-अपनी बन्दूकों पर हाथ रखकर क्रसम खाई थी। मुल्ला सैयद अकबर ने आवाज उठाकर कहा, 'हम अपने बुजुर्ग-वार जन्तनशीन अब्दुर्रहमान क्रस की ओलाद हैं। हम उनके तीनों बेटे सरवान, गुरमुस्त और वातान के गजरे की पत्तियाँ हैं। सब सरदार मिलकर क्रसम खाओ कि घरेलू झगड़ों को भूलकर हम अब फिरंगियों को नहीं छोड़ेंगे।'

और वह भी एक खोफनाक समाँ था जब सब सरदारों की आँखों में लाल खून उतर आया था। उन्होंने सामूहिक क्रसम खाई थी।

महमंद के बड़े सरदार नजमुद्दीन, जिन्हें लोग आधा मुल्ला कहते थे, बोले, 'जून के बाद हमले शुरू होंगे। बोलो, मंजूर है?'

सब एक साथ बोले 'मंजूर है'। रुखसत के वक्त सबको शरबत पिलाया गया था। अपने-अपने दिलों में भयानक तूफान कौद किए सब चल दिए।

पठान तंग आ चुके थे। हाल ही में सर मोर्टिमर ड्यूरैंड (जो कि अंग्रेजी सरकार के विदेश सचिव थे) ने वाउंडरी खींची—ड्यूरैंड लाइन। समाना की पहाड़ियाँ, दौर और वाना पर अंग्रेजी सेना ने कब्जा कर लिया और अपनी चौकियाँ बना डाली थीं। अब उन्होंने घाव और भी गहरा कर डाला। कोहाट के नमक पर टैक्स लगा दिया था। पठान तिलमिला उठे। हरेक के दिल में गूँजने लगा 'सौ वार गुलामी से बगावत बेहतर'।

चार जून को मैजर गाँव में पठानों ने एक हिन्दू को सरेआम कत्ल कर दिया था। जब इसकी रिपोर्ट पोलिटिकल अफसर को मिली तो वह अंग्रेजी दस्ते लेकर मैजर आया था। पर जून में सब पठान एक हो चुके थे। उन्होंने अंग्रेजी दस्ते पर हमला बोल दिया। पोलिटिकल अफसर अपने कुछ सिपाहियों के साथ भाग कर दक्ता खेल आ गया पर अंग्रेजी दस्ते का खात्मा हो चुका था।

इसके बाद चारों ओर जिहाद की विसूमिल्लाह हो गई। स्वात में सैदुल्ला खाँ ने लंदाकड़ गाँव से कुछ नौजवानों को साथ लिया। सैदुल्ला खाँ को अब मुल्ला मस्तान कहते थे। देखते-ही-देखते, मुल्ला मस्तान के नेतृत्व में वारह हजार पठानों ने मलाकंद और आठ हजार पठानों ने चकदर्रे पर हमला बोल दिया। लेकिन अंग्रेज माफिल नहीं थे। ऊँचाई पर किलेबन्दी

किए बैठे थे। मुल्ला मस्तान के तीन हजार पठान मारे गए पर उनकी बाँधी ने अंग्रेजों को हिलाकर रख दिया था।

उधर नजमुद्दीन खाँ आधा मुल्ला ने महमंद कबीले के पाँच हजार छोटे हुए जवानों को लेकर पेशावर की घाटी में हमला बोल दिया। हिन्दुओं के गाँव शकरगढ़ और शबकादर की चौकी पर कब्जा कर लिया। पेशावर से एक भारी अंग्रेजी मना नुरन्त आई जिसने बड़ी मुश्किल से महमंदों को वहाँ से हटाया।

सबसे जबरदस्त जिहाद मुल्ला सैयद अकबर के नेतृत्व में हुआ। मुल्ला आज़ा खेल के अफ़्रीदी थे। सब अफ़्रीदी कबीले और उरकजई कबीले तीराह में घुसे। करीब पन्द्रह हजार पठान थे। अंग्रेजों की 'ख़ैबर राइफल' पल्टन ख़ैबर दर्रे की चौकियाँ संभाले हुई थी।

अफ़्रीदियों और उरकजई कबीलों ने समाना पर धावा बोला। उन्होंने ख़ैबर की सब चौकियाँ छीन लीं। शिनवारी पुलिस चौकी जो मीरनजई के इलाके में थी, हथिया ली और हंगू की तरफ दबाव बढ़ाने लगे। फोर्ट लोकहाट और फोर्ट कवागनरी भी हिला दिए।

पठानों की भयकर आँधी ने अंग्रेजों को हिला तो डाला पर उखाड़ नहीं पाई। अंग्रेजों का बहुत नुकसान हुआ, वेइज्जती भी हुई पर वे तुरत ही संभल गए। पठानों के इस जबरदस्त हमले का जवाब शुरू हुआ। सात हजार के दो ब्रिगेड दत्ता भेल पहुँच गए। मद्दा खेल के पठानों को घेर लिया। उनके सतरह 'रिंग लीडर' गिरफ्तार किए, जुर्माना किया और मंत्र गाँव पर भी भारी जुर्माना किया।

स्वात में अंग्रेजी फौज वाज़ीर, चामला और उतमान खेल के इलाकों में घुस पड़ी। भारी जुमनि लिए। वनेर में घुसकर खुदू खेल और गदूर के युमुफ़जई कबीलों ने जुमनि वमूल किए। मुल्ला मस्तान को देश निकाला दिया और दीर और स्वात में भगा दिया। और यह काम 'मलाकद फ़ील्ड फोर्स' ने किया जिसमें तीन ब्रिगेड और डिवीजन का अंश मिला था और दस हजार गोरे चढ़ आए थे।

महमंद कबीले पर दो ब्रिगेड का हमला हुआ। इनायत किला माफ़ कर दिया गया और आधा मुल्ला अफ़गानिस्तान भाग गया। चुराए हुए

हथियार और जुर्माना वसूल किया गया। सबसे बड़ा अंग्रेजी हमला तीराह पर हुआ। मीरानजई के रास्ते शिनवारी के ऊपर होते हुए जनरल लॉकहार्ट दो डिवीजन लेकर गया। दरगई पर जबरदस्त लड़ाई हुई। फ्रोंजें मैदान और वाड़ा में घुस गईं। पठान वहादुरी से लड़े। उरकजई ने हथियार डाल दिए पर अफ्रीदी सीना ताने खड़े रहे। दिसम्बर सन् अठारह सौ निन्यानवे में ही अंग्रेज फिर से खैवर की चौकियाँ ले पाए। इस मुहासरे में जनरल लॉकहार्ट तीस हजार आदमी लेकर चढ़े थे। फिर वह उदास माहील का दिन भी आया जब मलिकदीन खेल, अक्का खेल, कमराई खेल और कई सरदार, सर विलियम लॉकहार्ट और सर रिचर्ड उडनी के आगे सर झुकाए आए। उन्होंने अंग्रेजों के आगे आठ सौ लूटी हुई राइफल, पचास हजार रुपये और चोरी किए सामान का ढेर लगा दिया।

वज़ीरस्तान में महसूदों ने सर उठाया पर उन्हें दवा दिया गया।

जिस वेग से पठानों के जज्वात की आँधी उठी थी उससे लोगों को उम्मीद होने लगी थी कि हाथ की हथकड़ी टूट जाएगी। पर अफ़सोस, पठान वहादुर देशभक्त तो थे पर युद्ध-कुशल योद्धा नहीं थे। तूफान के बाद एक अजीब शान्ति सरहद पर छा गई। मौत से भी ज्यादा खामोश माहील हो गया था। दिलों में आग अब केवल दबी हुई चिनगारी मात्र रह गई थी। पठान हार गए थे पर मन से हार नहीं गए थे। विद्रोह की भावना नाउम्मीदी की राख से दब गई थी पर गर्मी अभी तक थी।

इसके बाद सब कबीले अपने-अपने इलाकों में चल दिए। ठंडी साँस लेकर वे अपनी पुरानी वन्दूकों को देखते और कभी-कभार एक-दो आँसू भी टपक जाते। उन्हें अहसास हो गया था कि छुपपुट की लड़ाई ही उनका शेवा है। जमकर मोर्चाबिन्दी और मुहासरे उनके वस की बात नहीं है। वे लड़ाई की आँख मिचौली भली-भाँति खेल सकते थे, लड़ाई के मैदान में जम कर शतरंज खेलना नहीं जानते थे।

अब? अब क्या चुप्पी साध लें? नहीं! अगर चुप्पी साध लेंगे तो अंग्रेज समझेंगे कि पठान क्रौम का पानी उतर गया और फिर वे उनके गाँवों-कस्बों में घुसपेठ करेंगे। इसलिए फुटकर लूटमार करना जरूरी है। अंग्रेजों को चैन नहीं लेने देना है वना उनके कबीलों का चैन सदैव के लिए छिन जाएगा।

संघर्ष जारी रहेगा। सब कबीलो ने यही फैसला किया था। हाँ, यह बात दीगर थी कि कबीलों की पुरानी दुश्मनी अपनी जगह पर कायम थी। दुश्मनी पठान के लिए अपने बुजुर्गों की याद, एक मुकद्दस अमानत है। वह भला कैसे भूली जा सकती है।

हाल ही की इस आँधी के बाद नई दुश्मनी भी पनपी। दरगई की लड़ाई के बाद उरकजई कबीलो ने हथियार डाल दिए थे पर यूसुफजई हिम्मत बाँधे अंग्रेजों के छक्के छुड़ाते रहे। उरकजई के इलाके की तरफ यूसुफजई के सरदार ने थूक कर कहा 'जनाने कही के !'

उरकजई का सरदार तिलमिला उठा। उसने चीखकर कहा, 'बहादुर और अकलमन्दी जुदा-जुदा चीज है, गुलाब खाँ। तुम ऊँचाई पर बैठे थे। हम नीचे दर्रे के पास थे। और फिर कहाँ दो हजार उरकजई और वहाँ तीस हजार अंग्रेज। अगर हथियार नहीं डालते तो कबीले में सिवाय देवाओं के कोई नहीं बचता।' पर यूसुफजई के सरदार गुलाब खाँ ने फिर से जमीन पर थूका।

इस बार सरदार तुर्रुँ खाँ ने सरदार गुलाब खाँ के पाँव के पास गोली दाग दी। ठीक उस जगह जहाँ थूका गया था। उरकजई और यूसुफजई कबीलों में दुश्मनी का अंकुर उसी दिन फूट पड़ा। और अब वे दो दुश्मनों को मानते हैं। यूसुफजई कबीलों के दुश्मन अंग्रेज और उरकजई हैं। उरकजई के दुश्मन अंग्रेज और यूसुफजई हैं।

काबुल नदी का पानी कितना ठंडा था। किसी हसीना की कमर की तरह खम खाकर नदी जगह-जगह पर मोड़ खा रही थी। करीब ही लोई डक्का का कस्बा था। खान गुलाब खाँ अपने यूसुफजई कबीले के साथ यहीं रहता था। गुलाब खाँ पत्थर दिल सरदार था। उसके चेहरे पर मुस्कराहट बहुत कम लोगों ने देखी थी। पर संगदिल गुलाब खाँ भी अपनी बेटी महजबी के

रुक्म मोम का बन जाता था। महजवीं कुदरत की इनायत थी। दूधिया रंग और तराशा हुआ बदन। उसके चेहरे पर शरारत विखरी हुई थी। गजाल जैसी आँखें और बेराबहार याकूत जैसे लाल ओंठ। आसपास के कवीलों में जवान लड़के अक्सर आह भरके कहते 'लोई डक्का में दो चाँद उगते हैं, एक ऊपर आस्मान में और दूसरा सरदार गुलाब खाँ के आँगन में।'

महमंद कवीले के सरदार हिलाल खाँ तोर खामा में रहते थे जो खैबर दर्रे के इस तरफ़ था। हिलाल खाँ के बेटे नूर खाँ ने सवाह की हाँट में महजवीं को देखा था। और उसी दिन से वह महजवीं के खवाब देखने लगा। नूर खाँ लंबा तड़ंगा मर्द था पर चेहरे पर एक अजीब वहशियाना साया छाया हुआ था। छटपुट लूटमार और खून-ख़राबा करने लगा था। अब वह अक्सर लोई डक्का की तरफ़ भी घोड़ा मोड़ देता था। महजवीं की सूरत देखने को बेचैन रहने लगा था।

सवाह के पास वाले गाँव वैतुल में उरकज़ई के कवीले के सरदार तुर्रें खाँ रहते थे। उनका बड़ा बेटा हवीव खाँ जाँवाज़ चाँका जवान था। उसके शरीर में अपार बल था। कसरत, घुड़सवारी और हथियार—बस ये ही उसके शौक़ थे। चेहरे पर मासूमियत और हँसती आँखें उसके हुस्न को दोबाला कर देती थीं। तुर्रें खाँ ने बेटे को बड़े जतन से पाला था। जब भी वह दस्तरख़वान पर साथ बैठते तो कहते, 'बेटे, वहादुर को सब कुछ जायज़ है बशर्ते कि वह इज़ारबन्द का सच्चा हो। किरदार ही इन्सान का पानी है। वग़ैर किरदार के आदमी वग़ैर दमक के हीरे के बराबर है। वादा करो, औरत की इज्जत करोगे। भले ही वह दुश्मन के यहाँ की औरत ही क्यों न हो।'

हवीव खाँ की ज़िन्दगी की नींव उसके बाप तुर्रें खाँ ने डाली थी। हवीव खाँ को प्यार से सब हवीवा ही पुकारते। हवीवा कवीले की जान था।

उस दिन अपनी तलवार लिए वह घोड़ा मोड़कर काबुल नदी की ओर जाने लगा था। तुर्रें खाँ ने उसे रोककर कहा, 'बेटे, लोई डक्का में सरदार गुलाब खाँ अपने कवीले में रहता है। हमसे उसकी चश्मक है। उससे होशियार रहना।' हवीव खाँ ने सर झुका कर सुना और फिर घोड़ा हवा से बाँते करने लगा।

सवाह के पास वह हवा की गुनकी का मज्जा लेता जा रहा था कि सहसा उसे किसी लड़की की चीख मुनाई दी। हवीब ठिठका और घोड़ा मोड़कर उमी तरफ़ चल दिया। अनार के पेड़ों के झुरमुट में उसने एक जवान को धायल होकर जमीन पर लोटता पाया। उसके पेट से खून बह रहा था। फिर हवीबा की नज़र एक बेरहम चेहरे पर पड़ी जो किसी फूल जैसी लड़की को जबरन घोड़े पर बैठाने की कोशिश कर रहा था।

हवीबा ने घोड़े को एड दी और पास आकर ललकारा, 'ठहरो !'

बेरहम चेहरे वाला जवान पठान सोहे के आदमी जैसा लगता था। हाँ, वह नूर खाँ ही तो था। महमद कबीले के सरदार हिलाल खाँ का बेटा। उसने हवीबा की ओर खूनी आँखों से देखा और बोला, 'मेरे रास्ते से हट जा वरना तेरी माँ कि गोद सूनी हो जाएगी !'

हवीब ने हँसकर कहा, 'ये तुम्हारा मुग़लता है खान। और तुम पठान होकर एक लड़की पर अपनी ताकत आजमा रहे हो। किम ख़ानसाब कबोले के गरूर हो, खान ?' नूर खाँ तिलमिला उठा। वह झटके से उतरा और तलवार म्यान से खींचता हुआ बोला, 'अपने कबीले का नाम मैं अपनी तलवार की नोक में तेरे सीने पर लिखूँगा !'

नूर खाँ चीने जैसी फुर्ती से हवीबा पर टूट पड़ा। महजबी की कुरती फट गई थी। वह डर की वजह से हाँक रही थी। उसने नूर खाँ की तलवार का जोहर अभी-अभी अपने भाई गुलफ़ाम पर देखा था। गुलफ़ाम को दो मिनट में नूर खाँ ने नाकाम कर दिया था। भाई को नाचार करके ही नूर खाँ महजबी को उठाए ले जा रहा था।

हवीबा ने नूर खाँ के वार को नाकारा कर दिया। बिजली की तरह वे एक दूमरे पर टूटते रहे। सबसे पहले नूर खाँ की तलवार ने ही हवीब की बाईं बांह पर खून निकाला था। खून को देखकर हवीबा विफ़राल भँवर जैसा बन गया। जैसे माँग पर चील झपटती है वैसे ही वह नूर खाँ पर टूट पड़ा।

पहले हाथ में नूर खाँ का कंधा खून में तर हो गया। वह उम पर हावी होने लगा और दूमरे हाथ में उसने नूर खाँ का कूल्हा और पगड़ी काट गिराई। एक भरपूर हाथ उसने नूर खाँ के हाथ में पकड़ी तलवार पर मारा

था। नूर खाँ के हाथ से तलवार झनझना कर दस गज दूर गिर पड़ी। निहत्था नूर खाँ भय से हाँफने लगा।

‘मैं निहत्थे पर वार नहीं करता, खान !’ हवीवा बोला, ‘इस लड़की के आगे घुटने टेक कर माफ़ी माँगो। यक़ीन रखो, मैं अपने कबीले का नाम तुम्हारी छाती पर अपनी तलवार की नोंक से नहीं लिखूँगा।’

नूर खाँ भयभीत उसे देखता रहा।

हवीवा हँसा और फिर अपनी तलवार ज़मीन पर फेंकता हुआ बोला, ‘लो, अब तो ख़श हो। इस लड़की से माफ़ी माँगो।’

तलवार गिरते ही नूर खाँ हवीवा के ऊपर झपटा। पर हवीवा भी लोहे का बना आदमी था। उसने नूर खाँ को लपेट कर कलाजंग दाँव मारा। नूर खाँ वोरी की तरह लह से जा गिरा। उसे आधा मिनट तो उठने में लगा।

‘वक्त खराब मत करो, खान,’ हवीवा बोला, ‘वर्ना मुझे तँश आ जाएगा।’

नूर खाँ आँखें फाड़कर हवीवा को देखता रहा। फिर वह भीगी विल्ली जैसा आया और महजवीं के आगे घुटने टेककर माफ़ी माँगी।

‘हाँ अब ठीक है,’ हवीवा बोला, ‘जाओ अब दफ़ा हो जाओ।’

नूर खाँ आँखों से खून वरसाता हुआ घोड़े पर बैठा और चल पड़ा। महजवी को हवीवा जिब्रील फरिश्ता जैसा लगा। उसकी आवरु की ढाल वन बैठा था हवीवा।

‘एक जवान इधर घायल पड़ा है,’ हवीवा बोला।

‘वह मेरे भाई हैं,’ महजवीं बोली।

‘चलो देर मत करो,’ हवीवा बोला और महजवीं को घोड़े पर बैठा कर उधर चल पड़ा जहाँ महजवीं का भाई गुलफ़ाम घायल पड़ा था। महजवीं भाई की हालत देखकर रो पड़ी।

हवीवा ने उतर कर उसकी नब्ज़ देखी और फिर बोला, ‘घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। चलो, इसे लेकर चल दिया जाए। तुम घोड़ा चला लेती हो?’

महजवीं ने बड़ी-बड़ी वादामी आँखों को झपक कर कहा, ‘हाँ।’

‘तो तुम अपने भाई के घोड़े पर चलो । मैं तुम्हारे भाई को अपने घोड़े पर सँभाल कर चलता हूँ ।’

उसने गुलफाम को अपनी बोतल से पानी पिलाया और फिर खून से लथपथ गुलफाम को सावधानी से अपने घोड़े पर बिठाया ।

आगे-आगे महजबी का घोड़ा चल रहा था । जब लोई डक्का की सर-हद आई तब हबीबा ने पूछा—

‘तुम्हारा कबीला किधर है बानो ?’

‘इधर है लोई डक्का में,’ महजबी बोली ।

हबीबा ठिठका । लोई डक्का में तो उसके दुश्मन रहते हैं, यही तो अब्बा ने कहा था । पर न जाने क्या सोच कर वह पीछे-पीछे चलता रहा ।

लोई डक्का में घुसने ही सबने महजबी और पीछे के घोड़े पर घायल गुलफाम को देखा । कानाफूसी होने लगी ।

जब महजबी घर पर पहुँची उस वक़्त उसके अब्बा गुलाम खाँ तीन-चार लोगों के पास बैठे हुक्का पी रहे थे । बेटी और घायल बेटे को देखकर सन्नाटे में आ गए । इसमें पहले कि वह मुँह खोलें, महजबी बोली—

‘ये अपने मेहमान हैं, अब्बा । इन्होंने मुझे एक दरिन्दे से बचाया और गुलफाम भाई को भी बचाकर हमारी दहलीज़ पर आए हैं ।’

गुलाब खाँ और उसके माचियों ने गुलफाम को उतारा । सब उसके चदन से तर कपड़े उतारने लगे । आनन-फ़ानन ही हकीम सैयद आले इमाम भी आ गए । घाव गहरा नहीं था फिर भी घाव तो घाव ही होता है ।

गुलाब खाँ ने हबीबा को गले लगाया और कहा, ‘मैं तुम्हारा अहसान-मद हूँ बेटे । क्या नाम है तुम्हारा ?’

हबीबा हँस कर बोला, ‘पठान का लड़का हूँ, आक्रा । आप अहसान की बजाय मुझे दुआ दीजिए ।’

• गुलाब खाँ जवाब मुनकर खुश हुआ ।

महजबी अदर से अनार के शरबत का गिलास लेकर आई थी । उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से हबीबा को अब देखा । देखकर न जाने कौन से तार उसके दिल में झनझना उठे । उसे नूर खाँ को हराने वाला मंज़र याद हो आया । हबीबा ने भी महजबी की एक झलक अब ठीक तरह से देखी ।

था। नूर खाँ के हाथ से तलवार झनझना कर दस गज दूर गिर पड़ी। निहत्था नूर खाँ भय से हाँफने लगा।

‘मैं निहत्थे पर वार नहीं करता, खान!’ हवीवा बोला, ‘इस लड़की के आगे घुटने टेक कर माफ़ी माँगो। यक़ीन रखो, मैं अपने कबीले का नाम तुम्हारी छाती पर अपनी तलवार की नोंक से नहीं लिखूँगा।’

नूर खाँ भयभीत उसे देखता रहा।

हवीवा हँसा और फिर अपनी तलवार ज़मीन पर फेंकता हुआ बोला, ‘लो, अब तो ख़श हो। इस लड़की से माफ़ी माँगो।’

तलवार गिरते ही नूर खाँ हवीवा के ऊपर झपटा। पर हवीवा भी लोहे का बना आदमी था। उसने नूर खाँ को लपेट कर कलाजंग दाँव मारा। नूर खाँ बोरी की तरह लद् से जा गिरा। उसे आधा मिनट तो उठने में लगा।

‘घबत खराव मत करो, खान,’ हवीवा बोला, ‘वर्ना मुझे तैश आ जाएगा।’

नूर खाँ आँखें फाड़कर हवीवा को देखता रहा। फिर वह भीगी विल्ली जैसा आया और महजवीं के आगे घुटने टेककर माफ़ी माँगी।

‘हाँ अब ठीक है,’ हवीवा बोला, ‘जाओ अब दफ़ा हो जाओ।’

नूर खाँ आँखों से खून बरसाता हुआ घोड़े पर बैठा और चल पड़ा। महजवी को हवीवा जिव्रील फरिश्ता जैसा लगा। उसकी आवरु की ढाल वन बैठा था हवीवा।

‘एक जवान इधर घायल पड़ा है,’ हवीवा बोला।

‘वह मेरे भाई हैं,’ महजवीं बोली।

‘चलो देर मत करो,’ हवीवा बोला और महजवीं को घोड़े पर बैठा कर उधर चल पड़ा जहाँ महजवीं का भाई गुलफ़ाम घायल पड़ा था। महजवीं भाई की हालत देखकर रो पड़ी।

हवीवा ने उतर कर उसकी नब्ज़ देखी और फिर बोला, ‘घबराने की कोई जरूरत नहीं है। चलो, इसे लेकर चल दिया जाए। तुम घोड़ा चला लेती हो?’

महजवीं ने बड़ी-बड़ी वादामी आँखों को झपक कर कहा, ‘हाँ।’

‘तो तुम अपने भाई के घोड़े पर चलो । मैं तुम्हारे भाई को अपने घोड़े पर सँभाल कर चलता हूँ ।’

उसने गुलफाम को अपनी बोटल से पानी पिलाया और फिर खून में लयराय गुलफाम को मावधानी से अपने घोड़े पर बिठाया ।

आगे-आगे महजबी का घोड़ा चल रहा था । जब लोई डक्का की मर-हृद आई तब हबीबा ने पूछा—

‘तुम्हारा कबीना किधर है बानो ?’

‘इधर है लोई डक्का में,’ महजबी बोली ।

हबीबा ठिठका । लोई डक्का में तो उसके दुश्मन रहने हैं, यही तो अब्बा ने कहा था । पर न जाने क्या सोच कर वह पीछे-पीछे चलता रहा ।

लोई डक्का में घुमने ही मचने महजबी और पीछे के घोड़े पर घायल गुलफाम को देखा । कानाफूसी होने लगी ।

जब महजबी धर पर पहुँची उस वक़्त उसके अब्बा गुलाम खाँ तीन-चार लोगों के पास बैठे डक्का पी रहे थे । बेटी और घायल बेटे को देखकर सन्नाटे में आ गए । इसमें पहले कि वह मुँह खोलें , महजबी बोली—

‘ये अपने मेहमान हैं, अब्बा । इन्होंने मुझे एक दरिन्दे से बचाया और गुलफाम भाई को भी बचाकर हमारी दहलीज पर आए हैं ।’

गुलाब खाँ और उसके मायियों ने गुलफाम को उतारा । सब उसके चदन में तर कपड़े उतारने लगे । आनन-फानन ही हकीम सैयद आले इमाम भी आ गए । घाव गहरा नहीं था फिर भी घाव तो घाव ही होता है ।

गुलाब खाँ ने हबीबा को गले लगाया और कहा, ‘मैं तुम्हारा अहसान-मद हूँ बेटे । क्या नाम है तुम्हारा ?’

हबीबा हँस कर बोला, ‘पठान का लड़का हूँ, आक्रा । आप अहसान की बजाय मुझे दुआ दीजिए ।’

• गुलाब खाँ जवाब मुनकर खुश हुआ ।

महजबी अदर में अनार के शरबत का गिलास लेकर आई थी । उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से हबीबा को अब देखा । देखकर न जाने कौन से तार उसके दिल में झनझना उठे । उमे नूर खाँ को हराने वाला मज़र याद हो आया । हबीबा ने भी महजबी की एक झलक अब ठीक तरह से देखी ।

महजबी के हुस्न की परछाईं हवीवा की आँखों में उतरती गई। शरवत पीकर हवीवा जाने लगा।

‘अपना नाम नहीं बतलाकर जाओगे बेटे,’ सरदार गुलाब खाँ ने कहा।

हवीवा घोड़े पर बैठे-बैठे बोला, ‘मुझे हवीवा कहते हैं आका’। और फिर हवीवा ने जैसे अपनी आँखों से महजबी को आदाव अर्ज किया हो। उसके एक पल को उसे देखा। महजबी के संगमरमर जैसे गालों पर गुलाब की पंखुड़ी बिखर गई हों जैसे। उनकी हया ने शायद हवीवा के आदाव को तस्लीम कर लिया था।

गुलफ़ाम खतरे के बाहर था। कबीले के काफ़ी लोग इकट्ठा हो गए थे। ‘शेर का बच्चा था, ख़ान’ किसी ने हवीवा की तारीफ़ की। फिर महजबी ने नूरखाँ की गुलफ़ाम के साथ लड़ाई बयान की, और फिर हवीवा के जाहूर भी बयान किए। हवीवा कबीले की हमदर्दी लूट ले गया था। महजबी का करार भी लूटा था उसने। पर हवीवा खूद भी तो लुट कर निकला था लोई टनका से। गुलाब खाँ भी बड़े प्रभावित हुए थे।

‘कितना शर्मीला लड़का था। नाम भी बड़ी मुश्किल से बतलाकर गया है।’

तभी काले खाँ आगे बढ़कर बोला, ‘मैं बताता हूँ सरदार वह कौन था। हवीवा उरफ़ाई के सरदार तुर्रे खाँ का बेटा है।’

गुलाब खाँ के चेहरे पर एक काला साया उतर गया। वह एक लम्बी साँम भरकर मन ही मन बोला, ‘सुना गुलाब खाँ! तुम्हारे दुश्मन तुर्रे खाँ का शेर जैसा लड़का था हवीवा। तुम्हारी बेटे की इज्जत बचाने वाला, तुम्हारे बेटे गुलफ़ाम की जान बचाने वाला। तुम्हारे दुश्मन का हौनहार बेटा।’

पेशावर की छावनी के एक छोर पर चीफ कमिश्नर लेफ्टिनेंट कर्नल सर एच० ए० डीन का दफ्तर है। सुबह से काफी हलचल थी। अंग्रेज अफसर आज चमकीली बर्दियाँ पहन कर आए थे। साथ ही में रिमालदार दारा खाँ भी लाल-नीली बर्दों में आए थे। रिमालदार दारा खाँ की चीफ कमिश्नर साहब के यहाँ पेशी थी। दारा खाँ बरामदे के छोर पर खड़े थे। चीफ कमिश्नर साहब के दफ्तर में मेजर स्लेटर रिमालदार साहब के कागज-पत्र समझा रहे थे। मेजर स्लेटर स्वयं रजमक से आए थे। दारा खाँ के चेहरे पर एक मुस्कान थी पर उन मुस्कान के पीछे जिन्दगी के दर्द छुपे थे।

दारा खाँ खैरखाह पठान थे। उनके वालिद मूसा खाँ भी नेक और सीधे-मादे पठान थे। बहुत अर्सा हुआ जब कि गाइड रिमाले ने मेजर रिचर्ड के नेतृत्व में मरघा कबीले पर हमला किया था। मेजर रिचर्ड बहादुर था। शायद वह पहला अंग्रेज था जिसने रजमक में कबीले के दायरे में घुस कर वार किया था। बड़ा भयकर युद्ध हुआ था। अपनी देहरी पर पठान अकसर मेहमाननवाजी करते हैं पर उस दिन उन्होंने अपने मेहमानों की तलवार से खातिरदारी की थी। बरावर की चोट हुई। कबीले का सरदार मारा गया पर मेजर रिचर्ड भी बुरी तरह से घायल हो गया था। उसके घुड़सवार भी ज्यादातर मारे ही गए। रिचर्ड घोड़े पर औंधा पड़ा मरादिन की छावनी की ओर जा रहा था। मरादिन ने एक मील पहले ही वह गिर पड़ा था। एक चट्टान के पास वह पेट से निकलते हुए खून के झरने को दबा रहा था। उसका हलक सूख गया था। जवान चमड़े के टुकड़े की तरह हो गई थी। बार-बार वह किसी अनजाने मददगार से 'पानी-पानी' माँग रहा था। मूसा खाँ उसी समय उधर से अपनी पानी की मशक लेकर गुजरा। कराहने की आवाज सुनकर वह चौका। चट्टान की ओट में खून से सनी बर्दों में अंग्रेज अफसर को देखकर एक बार तो वह घबरा गया। पर फिर न जाने कहाँ से उसे हिम्मत आ गई। उसने मेजर रिचर्ड को मशक से ठंडा पानी पिलाया। रिचर्ड को लगा जैसे वह अमृत पी रहा हो। टूटी आस फिर से लडखडा कर उठने लगी।

'आप धबराइये नहीं साहब,' मूसा खाँ बोला, 'हम आपको छावनी लिए चलते हैं। इन्शाअल्लाह आप बिलकुल ठीक हो जाएंगे।'

रिचर्ड धीरे से हँसा, 'तुम मुझे दिलासा देकर हसीन घोखा दे सकते हो दोस्त । पर मौत किसी के चकमे में नहीं आती । ले चलो मुझे छावनी । पर उठाने से पहले देखो मेरी जेब में कागज और कलम है क्या ?'

मूसा खाँ ने उसकी जेब टटोली । एक कागज निकला । शायद सरकारी चिट्ठी थी कोई । कलम की स्याही सूख चुकी थी । रिचर्ड बोला, 'कोई बात नहीं । मैं अपने खून में डुवो-डुवो कर लिख लूँगा ।'

रिचर्ड ने कागज पर अपने खून से लिखा था : 'इस पठान ने मुझे मरते दम पानी पिलाया और दो शब्द प्यार से बोला । मरते वक्त मीठे बोल मुझे ऐसे लगे जैसे ईसा मसीह मुझे दुलार रहे हों । जो भी इस खत को पाए मेरे लिए इस पठान पर अहसान करे । मेजर पीटर रिचर्ड, फ्रन्टियर लान्सर्स ।'

रिचर्ड ने कागज मूसा खाँ को दिया और बोला, 'मुझे अब छावनी ले चलो । काश मैं वहाँ तक पहुँच सकूँ ।' मूसा खाँ मशक छोड़कर रिचर्ड को उठाकर चल दिया । मरादिन की छावनी नज़र आने लगी थी ।

मूसा खाँ हर्ष से चिल्लाया, 'छावनी आ गई साहब । घबराना मत ।'

रिचर्ड उस वक्त आखिरी प्रार्थना पढ़ रहा था । उसे सलीब में लटके ईसा मसीह मुस्करा कर अपनी फ्रैली बाँहों में ले रहे थे ।

मूसा खाँ ने जब रिचर्ड को दफ़्तर में उतारा, तो वह रिचर्ड नहीं बल्कि उसकी लाश थी । मूसा खाँ की आँखों से आँसू निकल पड़े, 'अल् हम्दो लिल्लाह, बहादुर मैदान में गिरकर अल्लाह को प्यारे होते हैं ।'

रिचर्ड की चिट्ठी ने मूसा खाँ की क्रिस्मत के दरवाजे खोल डाले । मूसा खाँ को दस बीघे मौरूसी ज़मीन और मस में भिश्ती की नौकरी दी गई । फिर मूसा खाँ के बेटे दारा को अंग्रेजों ने स्कूल भिजवाया और जब दारा खाँ की रगों में खून उबलने लगा, तब उसे रिसाले में सवार बनाया गया ।

दारा खाँ का परिवार मरघा में ही रहा । उसका बेटा कासिम शुरू से ही शैतान था । उसने हरचन्द कोशिश की, अपनी बीबी सकीना को मरादिन ले आए पर उसका सुत्तर तुर्की खाँ पक्का सरहद्दी पठान था । कासिम अपने नाना के पास ही पला और जैसा कि दारा खाँ को डर था, वह सरहद्दी नुटेरा बन गया । बाप अंग्रेजों का ख़ैरद्वाह बफ़ादार था और बेटा अंग्रेजों का दुश्मन । नसीबा भी कैसे अजीब-अजीब खेल दिखाता है । कई

दार दारा खाँ ने कासिम को समझाया भी, पर कासिम कब मुनने वाला था।

उस दिन जब कासिम खाँ के गिरोह ने रजमक की एक छोटी सी चौकी पर हमला बोलकर तीन राइफलें उठाई थीं तब रजमक की रिताला पलटन में जोश फैल गया। शिव संकल्प मन में किए कैप्टिन हैरल्ड और रितालदार दारा सिंह अपने सवार लिए चले थे। वजीरस्तान के इलाके को पार करके वे चले जा रहे थे। सरहद के पास उन्हें हमला करना था। बन्दू खाँ मुखबिर ने खबर दी थी कि दरवेश खेज के लुटेरों ने बन्दूकें लूटी हैं। कैप्टिन हैरल्ड ने अपने सवारों को दो दल में बाँटा। पहले दल को वह स्वयं लेकर हमला करेगा। दूसरा दल रितालदार दारा खाँ के साथ 'रिजर्व' रहेगा।

बड़ी सख्त लड़ाई हुई थी। लुटेरों के पावें घंटे भर के बाद उखड़े थे। सभी कासिम खाँ अपने दोस्त को लेकर कैप्टिन हैरल्ड के पीछे से हमला करने आ पहुँचा। रितालदार दारा खाँ ने धूल उड़ती देखकर अंदाज लगा लिया था कि बाहर से किसी की मदद आ पहुँची है। रितालदार दारा खाँ अपने सवारों को लेकर आड़ा चला और बीच में उन्हें ललकारा। लुटेरों की टुकड़ी का सरदार उसका बेटा कासिम खाँ था। रितालदार दारा खाँ हतप्रभ रह गया।

घोड़े की रास थामे वह चिल्लाया, 'कासिम, वापस लौट जाओ। मैं तुम्हें पन्द्रह मिनट का वक्त देता हूँ।'

कासिम भी जाँबाज लडाका था। उसे अपने दोस्त अकरम खाँ को मदद पहुँचाना जरूरी था। अकरम के सवार घिर चुके थे और उनके पैर उखड़ने लगे थे। कासिम यारों का यार था। अकरम उसका जिगरी यार था।

अपने घोड़े पर बंदूक हिलाता हुआ चिल्लाया, 'अब्बा, मेरे बीच में मत पडो। तुम इन फिरंगियों के साथ हमारे इलाके में घुस आए हो, मह मत भूलो।'

दार दारा खाँ बड़ी पशोपश में पड गया था। उसके मातहत सवार सब कुछ सुन रहे थे, देख रहे थे।।

दार दारा खाँ ने आज़िजी से कहा, 'कासिम, मेरा कहना मानो। वापस चले जाओ। मुझे अपना नमक हलाल करने दो। तुम मेरा खून ही बेटे। मेरा कहना मान लो।'

कासिम हँसकर बोला, 'अब्बा, आज यही देखना है कि पठान खून को नमक पर तरजीह देता है या नहीं। हट जाओ अब्बा मेरे रास्ते से।'

दारा खाँ की आँखों में आँसू भर आए। आसमान की तरफ़ देखकर वह बोला, 'या अल्लाह, तू मेरा इम्तहान ले रहा है शायद। नमकहराम से बेहतर होगा कि अपने जिगर का खून खुद पी डालूँ।' रिसाल्दार दारा खाँ ने तलवार निकाल कर कहा, 'चार्ज !' रिसाला कासिम पर टूट पड़ा। लड़ाई घमासान हुई। रिसाल्दार दारा खाँ लड़ते वक्त खूँखवार और निर्मोही हो हो गया। सहसा उसकी 'मार्टीनी हैनरी' राइफल उठी और कासिम के सीने का निशाना लेकर आग उगल पड़ी। उसकी आँखों के सामने कासिम तड़प कर गिर पड़ा। कासिम के गिरते ही लुटेरे दरहम-वरहम होने लगे। रिसाल्दार दारा खाँ कासिम के पास गया और मरते हुए कासिम की पेशानी चूमी। कासिम बोला, 'अब्बा, मुझे तस्कीन है कि मैं एक नमकहराम बाप का बेटा नहीं हूँ। तूने अपने नमक की लाज रखी। मैं गरूर से मर रहा हूँ अब्बा। खून के तकाजों ने तुझे वुज्जदिल नहीं बनाया; अच्छा, खुदा हा-फ़िज़' कासिम सदा के लिए मौत हो गया। रिसाल्दार दारा खाँ ने अपनी जेब से मशहदी रूमाल निकाला और कासिम के मुँह पर ढँक दिया।

'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन,' दारा खाँ बोला और फिर झटके से उठा और अपने दस्ते को लेकर कैप्टिन हैरल्ड से जा मिला।

कैप्टिन को यह वाक़या दफ़ादार मुहम्मद खाँ ने बतलाया था। कैप्टिन हैरल्ड सुनकर आवक् रह गया। वह स्वयं रिसाल्दार दारा खाँ के पास आया था इस बात की तज़दीक़ करने।

रिसाल्दार ने ठंडी साँस लेकर कहा, 'हाँ साहब, कासिम मेरा बेटा था। पर मैदान में सिर्फ़ दो ही रिश्ते होते, हैं— दोस्त या दुश्मन। उसकी तरफ़ मैंने दोस्ती का हाथ बढ़ाया पर आख़िर वह भी पठान का बेटा था। उसे भी मुझ में दुश्मन ही नज़र आया।'

पूरे रजमक में यह बात आग की तरह फैल गई।

फिर कर्नल पेन ने एक चिट्ठी चीफ़ कमिश्नर को लिखी और आज रिसाल्दार दारा खाँ पेशी के लिए वरामदे में 'सेरीमोनियल ड्रेस' में खड़ा इन्तज़ार कर रहा है।

कोई दस मिनट बाद उसे चीफ कमिश्नर के ~~खुद~~ ~~पैर~~ किया गया। चीफ कमिश्नर अपनी कुर्सी छोड़कर उसके पास आया और हाथ मिलाकर बोला, 'बैल रिमालदार साहिब, हमने सुना ही सुना था कि पठान बहादुर कोम है। तुम्हारी बहादुरी आला दर्जे की है साहिब। जज्बात के ऊपर गालिब होना बहुत बड़ी बात है साहिब, बहुत बड़ी बात है।'

रिमालदार साहब ने अपने आँसुओं को आँखों में कूद कर रखा था। मंह पर तसल्ली थी और ओठों पर मायूस मुस्कान।

चीफ कमिश्नर ने उनकी पीठ थपथपाई।

'आज से आप खानबहादुर रिमालदार मेजर द्वारा खाँ साहब है। मैंने ओ० बी० आई० के खिताब और मंडिल के लिए कमांडर-इन-चीफ को लिखा है। इसके अलावा आपको दस एकड़ जमीन पेशावर के जिले में दी जाती है।' रिमालदार साहब को सुनकर न खुशी हुई न रंज। सब बात होने पर चीफ कमिश्नर बोले, 'आपकी और कोई खाइश है, साहिब?'

रिमालदार दारा खाँ सर उठाकर बोले, 'जी हुजूर! मैं अब आपको आपकी दी हुई तलवार वापस करना चाहता हूँ। इसके बाद अब मुझसे तलवार उठ नहीं सकेगी, हुजूर।'

चीफ कमिश्नर सुनकर जड़वत् रह गया। एक लमहे बाद बोला, 'ठीक है साहिब। हम आपका नाम पेंशनयाफ्रता बहादुरो में लिखवाए देते हैं। अपनी दी हुई तलवार हम सिर्फ़ गद्दारों से कबूल करते हैं। आप तो हमारी सल्तनत और निजाम के एक सतून हैं। आप इस तलवार को हमारी तरफ से बतौर एक यादगार के कबूल फर्माइए।'

चीफ कमिश्नर ने रिमालदार साहब से गर्मजोशी से हाथ मिलाया। दारा खाँ सलाम करके बाहर आ गए।

हवीवा लोई डक्का से वापस तो आ गया पर अपना दिल शायद सरदार गुलाब खाँ की देहरी पर ही छोड़ आया था। रास्ते भर उसे महजवीं की वादामी आँखें नजर आती रहीं। हवीवा मुस्कराया, 'क्या किस्मत पाई है तूने हवीवा। आँखों में कोई बसा भी तो वह भी दुश्मन की लड़की।'।

वंतुल आकर हवीवा की खून से रंगी बाँह सबसे पहले उसकी माँ ने देखी। 'ये खून कैसे बहा बेटे !' माँ ने कहा।

'कुछ नहीं माँ, हवीवा बोला, 'मामूली-सी एक झड़प हो गई थी। गहरी खरोंच है और कुछ नहीं।'।

माँ ने ज्यादा पूछताछ नहीं की। वह गर्म पानी करके लाई और घाव को धोकर मलहम लगा दिया।

शाम को दस्तरख़वान पर सरदार तुरें खाँ जब बैठे तो हवीवा ने सर झुकाकर कहा, 'अब्बा जान, आज में युसुफज़ई के सरदार गुलाब खाँ के दर तक गया था।'।

तुरें खाँ ने कहा, 'मुझे मालूम है बेटे। मुझे सब ख़बर मिल चुकी है। मैं खुश हूँ कि तूने एक सबाब किया। गुलाब खाँ की बच्ची की भावरू बचाई ये अच्छा किया।'।

हवीवा चुपचाप खाता रहा।

तुरें खाँ बोले, 'जिस जलील नौजवान को तूने शिकस्त दी उससे होशियार रहना। वह महमंद कबीले के हिलाल खाँ का बेटा नूर खाँ है।। मुझे यकीन है कि तेरे सीने पर तो वह जखम भी नहीं कर सकता पर पीठ का बचाव रखना। बहादुर सीना बचाता है और टुच्चा पीठ पर ही धार करता है।'।

हवीवा चुपचाप खाता रहा।

खाने के बाद चौपाल पर हुक्का ताज़ा किया गया। सरदार तुरें खाँ और अन्य मिलने वाले वहाँ बैठे।

'सरदार, अब्दुल पेशावर से ख़बर लाया है,' एक पठान बोला।

'कैसी ख़बर है?' तुरें खाँ बोला।

'रिसालदार दारा खाँ ने मोर्चा लेते वक्त अपने बेटे को मार डाला,' वही पठान बोला।

सन्नाटा छा गया।

‘रिसालदार दारा खाँ फिरंगियों की नौकरी करता है, सरदार,’ पठान बोला, ‘बेटा, आज्ञाद शेर था।’

सरदार तुर्रें खाँ हुक्के का कश लेकर बोला, ‘दोनो ने ही फर्ज अदा किया, खान ! वाप ने नमक की लाज रखी तो बेटे ने तलवार की । हम इसे बहादुरी और जानिसारी की एक मिसाल तस्लीम करते हैं ।’

गला खँखार कर मुखविर बोला, ‘सरदार, रिसालदार दारा खाँ को दस एकड़ जमीन, खान बहादुर का खिताब, ओ० बी० आई० का तमगा और पेन्शन भी दी गई ।’

‘ठीक है’, सरदार बोले, ‘नमक की कीमत आका को देनी ही चाहिए । अब क्या दारा खाँ पेशावर में ही रहने लगा ?’

तभी कोने में बैठा बिल्ले खाँ बोला, ‘जी नहीं सरदार । आगे की खबर में सुनाता हूँ । जिस जगह दारा खाँ का बेटा कासिम गिरा था, वहाँ एक मजार दारा खाँ ने बनवाया है । मजार पर अपने मँडिल और तमवार रख कर दारा खाँ ने अंग्रेजों की दी हुई जमीन यतीमखाने को बखश दी और वह खुद फ़कीर का याना पहनने लगा है ।’

सरदार तुर्रें खाँ ने दोनो हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, ‘मुहम्मद रसूल इल्लाह सालहो आलहे वमल्लम ! जब तक हमारे बतन में इस तरह सोह-रावो-रस्तम पैदा होते रहेंगे हमारी गर्दन कभी भी नहीं झुक सकेगी ।’

बड़ा सजीदा माहोल हो गया था । चौपाल पर आए हुए पठानों ने बात का दख बदला । ‘सरदार, फिरंगियों की नई राइफल हल्की होने के अलावा मार अच्छा करती है । गर्म भी देर में होती है ।’

सरदार तुर्रें खाँ ने हुक्के की नली से मुँह उठाकर कहा, ‘जगल में मोर नाचा किसने देखा ! कोई रैफल लाकर बताए तो मश्विरा भी दिया जाए ।’

इशारा रामझ गए सब लोग । अब सवाल उठा कि बिल्ली के गले में घंटी कौन-सा माई का लाल बांधेगा । एक चुप्पी-नी साघ ली मब ने ।

तभी हवीवा सहमे हुए स्वर में बोला, ‘अगर इजाजत हो अब्बा तो मैं कोशिश करूँ ।’

यह सुनकर तुर्रें खाँ खुश हुआ । अपनी खुशी बताते हुए बोला, ‘हवीवा

चेटे, तुम्हारी कुशती मैंने देखी है, तलवार के हाथ भी देखे हैं। घुड़सवारी भी ठीक है। पर रैफल का निशाना अभी नहीं देखा है। सरहद पर लूट-खसोट करना और बात है और, फिरंगियों के बरखिलाफ बन्दूक चलाना और बात है।'

हवीवा को जैसे सौ विच्छुओं ने एक साथ डंक मारे हों। वह आवाज को कावू में रखते हुए बोला, 'अगर अब्बा मुनासिब समझें तो मेरा ये इम्तहान भी कल ले लें।' एक खुशी की लहर फैल गई।

'अच्छा हवीवा', तुरें खाँ बोले, 'कल तुम्हारा इम्तहान होगा।'

दूसरे दिन कबीले के सब जवान लड़के और पुराने निशानेवाज गाँव के बाहर इकट्ठे हो गए। छोटा-मोटा मेला-सा लग गया। सबके पास अपनी-अपनी राइफल और बन्दूकें थीं। कबीले के सबसे अच्छे निशानेबाजी करने वाले खाँ को सरदार तुरें खाँ ने अपने साथ बिठा रखा था।

पहले दो सौ गज की दूरी पर मिट्टी के आठ घड़े रखे गए जिनके ऊपर एक-एक मिट्टी का कुल्हड़ रखा था। फन्ने खाँ ने सरदार से इजाजत लेकर चाँदमारी शुरू कराई।

'खोचे, सिर्फ घड़े के ऊपर रखा कुल्हड़ उड़े, घड़ा नहीं, वहं बोला, 'देखो ऐसे।'

और फन्ने खाँ ने देखते ही देखते आठों घड़ों के ऊपर रखे कुल्हड़ों को उड़ा दिया। चारों तरफ 'वाह वाह', 'शाबाश' का शोर हुआ।

कुछ जवान लड़के भाग कर गए और फिर घड़े पर कुल्हड़ रख आए। सरदार तुरें खाँ जोर से बोले, 'हवीवा, आओ और इम्तहान दो। इसके अलावा और लड़के भी आएँ और अपना निशाना दिखलाएँ।'

हवीवा सहमता हुआ आया और निशाना बाँधा।

धाय !

पहला घड़ा फूटा गया। उसने दूसरे पर निशाना लगाया तो फिर दूसरा घड़ा फूट गया।

हवीवा ने परेशानी से इधर-उधर देखा फिर फन्ने खाँ के पास आकर बोला, 'चचा, आपसे दरदवास्त है कि ज़रा आप मुझे अपनी रैफल दे दें।'

यह सुनकर कुछ लोग हँसे भी। तुरें खाँ ओठ चिपकाए देखते रहे।

फन्ने खाँ ने अपनी राइफल देते हुए कहा, 'लौ बेटे, मैं देखता हूँ कि तुम एक अच्छे निशानेबाज के साथ-साथ भेजे में अकल भी रखते हो। अल्लाह, तुम्हारी मदद करे।'

हवीबा ने फन्ने खाँ की राइफल से निशाना साधा और देखते ही देखते घड़ों के ऊपर रखे कुल्हड़ी को उड़ा दिया। फन्ने खाँ ने बढ़कर हवीबा का गने से लगा लिया। सत्र तरफ तारीफ और हैरत की तहर फैल गई। इसके बाद फन्ने खाँ ने दो घोड़ों की पीठ कर दो भ्रू के बोरे बँधवाए और उन्हें छोड़ दिया। भागते घोड़ों पर बँधे बोरो पर फन्ने खाँ ने पाँच-पाँच फायर बड़ी तेजी में किए। घोड़ों को वापस लाने पर सबने देखा कि बोरो में पाँच-पाँच छेद हो रहे थे।

हवीबा ने अपने मूँठे ओठों पर जीभ फेरी और फन्ने खाँ से राइफल फिर माँगी। फन्ने खाँ ने हँसते हुए राइफल दे दी।

हवीबा ने भी भागते हुए घोड़ों पर बँधे बोरो में निशाना बाँधा। दस में से सात छेद हो पाए पर एक घोड़े की टाँग भी टूट गई।

फन्ने खाँ ने कहा, 'शाबास बेटे। कोई परवाह नहीं। तुमको शागिर्द बना कर मैं गरूर से अपना सर उठा सकूँगा।'

फन्ने खाँ हवीबा का हाथ पकड़े सरदार तुरें खाँ के पास आया और बोला, 'सरदार, अगर आप इजाजत दे तो मैं कबीले के आइन्दा होने वाले सरदार को, जो कुछ भी हुनर मुझे आता है, सिखला दूँ।'

तुरें खाँ का चेहरा खुशी से लाल हो रहा था।

उन्होंने उठकर हवीबा का हाथ पकड़ा और फिर फन्ने खाँ को पकड़ा दिया।

'फन्ने खाँ', सरदार बोले 'पगड़ी कत चीपाल पर बाँधी जाएगी। हवीबा आज से तुम्हारा शागिर्द और बेटा है।' फन्ने खाँ की बाँधें खिल गईं।

'सरदार, लड़के का जेहन अच्छा है,' फन्ने खाँ बोला।

'इसने इस बात को भाँपा कि मेरी राइफल का निशाना अच्छा है। ये एक अहम बात थी। राइफल का निशाना सभी अच्छा होता है जब राइफल की 'जीरोइंग' ठीक से की जाए। इतनी छोटी उम्र में ये इम्तियाज

करना होनहारी की निशानी है। लूदा ने चाहा तो हवीवा जैसा निशाने-वाज आस-पास कहीं भी नहीं मिलेगा।'

'आमीन,' सरदार तुर्रें खाँ ने कहा।

तमाशा खत्म हुआ। सब तरफ फ़ान्ने खाँ उस्ताद और हवीवा शागिद के ही चर्चे होते रहे।

महजबी अपने भाई के जक़म को गर्म पानी से रोक रही थी।

'फिर क्या हुआ महजबी?' गुलफ़ाम ने लेटे-लेटे पूछा।

महजबी ने सब कुछ बतलाया। जब भी वह हवीवा का नाम लेती, उसके ओठ लरज उठने। उसके सामने हवीवा की सूरत आ जाती। गुलफ़ाम थोड़ा उठकर बैठा।

'अगर हवीवा नहीं आता तो सज़ब हो जाता,' गुलफ़ाम ने कहा।

महजबी भी कांप गई। उसके हाथ से पानी में डूबी गई हिल गई।

'और शागिद मेरा भी इतना खून निकल जाता कि मेरा बचना नामुमकिन हो जाता,' गुलफ़ाम सोचता रहा।

महजबी उदास स्वर में बोली, 'मैंने अट्टा के मुँह से सुना था भाई जान। वे कह रहे थे कि हवीवा हमारे दुष्मन कबीले का बेटा है।'

गुलफ़ाम हँसा।

'अट्टा की बातें भी अजीब होती हैं। बेटे की इज्जत बचाने वाला, बेटे की जान बचाने वाला और दुष्मन! ख़ैर। मैं कब तक उठ-बैठने के कामिल हो सकूँगा महजबी? क्या हमीम साहिब ने कुछ बतलाया है?'

महजबी धीरे से बोली, 'दस दिन बाद तुम्हें चंगा हो जाना चाहिए भाई जान।'

गुलफ़ाम बोला, 'दस दिन के बाद मुझे हवीवा के पास शुकिया अदा करने जाना है।' महजबी आँगों फाड़कर मुनती रही।

‘अगर अब्बा को पता लग गया तो?’ वह सहमी हुई बोली।

गुलफाम हँगकर बोला, ‘दुश्मन का बेटा हमारे कबीले में घुम कर अहमान कर गया तो क्या मैं उसके कबीले में अहमान का शुक्रिया अदा करने नहीं जा सकता।’

महजबी लाजवाब हो गई।

‘तुम मद हो भाई जान,’ वह बोली, ‘तुम्हारा जाना बाइसे फगू होगा। बेहतर तो होगा कि तुम उसे दाबत पर मदऊ कर आओ। उसे हमारे यहाँ नमक छाना गवारा होगा या नहीं, यह उसकी नीयत का फ़ैसला होगा।’

गुलफाम ने मुस्करा कर मर हिला दिया।

‘तुम्हारी तजवीज मुझे पसन्द आई। पर इसके लिए अब्बा से इजाजत लेना जरूरी है।’

उस दिन से महजबी गुलफाम के धाव को तीन-तीन बार सँकने लगी थी। वह शायद यह चाहती थी कि गुलफाम जल्द से जल्द जाने के क्राविल हो जाए।

घारहवाँ दिन था शायद। गुलफाम अपने चार साथियों के साथ बैतुल की तरफ चल दिया। बैतुल की सरहद पर उसने अपने साथी छोड़ दिए।

‘तुम यहीं मेरा इन्तजार करना।’

फिर अकेला घोड़े पर बैठा गुलफाम कबीले में घुस पड़ा था। रास्ते में उसने पूछा, ‘खान, मुझे अपने दोस्त हबीबा के घर जाना है।’

सोर्गों ने उसे देखा और सरदार तुरें खाँ का घर बतला दिया। उस वक्त हबीबा अपने अब्बा के पास बँठा राइफल साफ कर रहा था।

गुलफाम उसके दरवाजे पर घोंडे से उतरा और सरदार से बोला, ‘सलाम वालेकुम किवला। मुझे अपने दोस्त हबीबा से मिलना है।’

हबीबा गुलफाम को देखकर पहचान गया पर गुलफाम हबीबा को नहीं पहचानता था। जो कुछ ब्योरा महजबी ने दिया था वह सब हबीबा पर लागू होता था।

सरदार तुरें खाँ बोले, ‘कमाल है बेटे! हबीबाको अपना दोस्त भी कह रहे हो पर उसे पहचान भी नहीं रहे हो?’

गुलफ़ाम बोला, 'जी हाँ क्रिबला । मैं उस वक़्त बेहोश था इसलिए उसे पहचान नहीं सकता ।'

हवीवा बन्दूक रख कर उठा और शेर जैसी चाल से बढ़ा, 'तुम शायद गुलफ़ाम ही हो ना ? सरदार गुलाव खाँ के बेटे ।'

'हाँ ।'

हवीवा ने हाथ बढ़ाया, 'मैं ही हवीवा हूँ । ये मेरे अब्बा हैं सरदार तुर्रें खाँ ।'

गुलफ़ाम ने हाथ मिलाया ।

'मैं उस दिन का शुक्रिया अदा करने आया हूँ । महजबी की तरफ़ से भी शुक्रिया कर रहा हूँ ।'

सरदार तुर्रें खाँ ने घूर कर उसे देखा, 'शालिवन तुम युसुफ़ज़ई सरदार गुलाव खाँ के ख़ानज़ादे हो ?'

'जी हाँ । आपने बजा फ़र्माया ।' गुलफ़ाम बोला ।

'हमारे दर पर आने से पहले तुमने अपने अब्बा को अपना मंशा बतलाया था ?' तुर्रें खाँ बोले ।

'जी नहीं ।'

'क्यों ?'

'मैं हवीव खाँ से मिलने आया हूँ । अब्बा के दुश्मन सरदार तुर्रें खाँ से मिलने नहीं । हवीवा को मैं दोस्त कबूल करता हूँ ।'

'और मुझे क्या कबूल करते हो ख़ानज़ादे ?'

'आप मेरे मेहरवान दोस्त के वालिद हैं । आप मेरे भी उतने ही बुजुर्ग हैं जितने शेर दिल हवीवा के ।'

तुर्रें खाँ जवाब सुनकर उठ खड़ा हुआ ।

'तो आओ बेटे । मैं तुम्हारा इस्तक्रवाल करता हूँ ।' तुर्रें खाँ बोले ।

कुछ लोग भी आ गए थे । अंदर से तब तक अंगूर का रस आ गया था । गुलफ़ाम ने गिलास एक ही साँस में खाली कर दिया । थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं । फिर गुलफ़ाम ने हवीवा से कहा, 'मैं तुम्हें कल दावत के लिए मदऊ करने आया हूँ दो—'

तुर्रें खाँ के ओठों पर हल्की-सी

को छोड़कर अंदर चले गए।

हबीबा ने गुलफाम की ओर देखा।

‘आपके वालिद को कोई ऐतराज तो नहीं होगा?’ गुलफाम हँस कर बोला।

‘कतई नहीं,’ हबीबा ने हाथ बढ़ाकर कहा, ‘मैं जरूर आऊँगा।’

‘शाम को पाँच बजे मेरे साथी और मैं आपको आपकी सरहद से ले जाएँगे। आप हमारे खास मेहमान होंगे।’

हबीबा मुस्कराया। उसे अहसास हुआ कि शायद उसे महजबी का दीदार भी हो जाए।

गुलफाम वहीं से सलाम करके चल दिया। कबीले में घूमते हुए उसने छोटे से बाजार में प्रवेश किया। एक परचूनी की दुकान पर वह धाँडे से उतरा और बोला, ‘यान, मुझे एक सेर नमक चाहिए।’

परचूनी के दुकानदार ने नमक तौल कर दे दिया। पीछे देकर गुलफाम बोला, ‘एक परचे पर लिख दो यान, कि एक सेर नमक तुम्हारी दुकान में खरीदा गया।’

परचूनी वाला ताज्जुब से देखने लगा पर जब गुलफाम ने उसे एक रुपया ‘बहगीश’ कहकर बढ़ाया तो उमने लिख दिया ‘एक सेर नमक फरोहत किया यान गुलफाम को। दस्ताखत, दाऊद खाँ, कबीला उरबजई, वंतुल।’

गुलफाम मुस्कराता हुआ नमक खरीद कर चल दिया।

युमुफजई कबीले में कल की दावत की तैयारी होने लगी थी। सरदार गुलाब खाँ के घर के आगे मैदान में लकड़ियों का ढेर बना दिया गया था। दो बड़े अँगोठे पाम रखे थे। फर्श और मेहमान के लिए कालीन बिछा दिए गए थे। कुल मिलाकर तीस लोगों को दावत पानी थी।

सोहे की मोटी सलाखें लकड़ी के ऊपर जमा दी गई थी। दो बड़े बकरे आम पर सँके जाने थे।

दूमरे दिन हबीबा को लेकर गुलफाम और उसके साथी शाम को आए। हबीबा ने बड़ी इज्जत में सरदार गुलाब खाँ को सलाम किया।

‘बयो बेंटे, आज भी अपना नाम अपने मुँह से नहीं बतल

सरदार गुलाब खाँ हँसकर बोले। हवीवा का चेहरा शर्म से लाल हो गया। वह और भी खूबसूरत लगने लगा था। खिड़की से महजबीं उसके चेहरे को शरर से देख रही थी। वह टकटकी बाँधकर दूर से हवीवा को देख रही थी मानो उसकी तस्वीर को आँखों से खींचकर दिल में उतार रही हो।

हवीवा बोला, 'मैं आपसे मुआफ़ी का तलबगार हूँ क़िवला। मैंने नाम इसलिए नहीं बतलाया था कि कहीं आपको नागवार नहीं गुजरे।'

'मुझे वहादुर हर हाल में पसन्द हैं बेटे,' सरदार गुलाब खाँ बोले, 'फिर ये मत भूलो कि मेरी इज्जत पर तुम ढाल बनकर ही नहीं आए बल्कि मेरे खानदान के तरफ़दार बनकर तुमने अपनी तलवार भी खींची।'

'वह मेरा फ़र्ज़ था क़िवला,' हवीवा बोला, 'फ़र्ज़ कभी अहसान का दावा नहीं करता है।'

'आफ़रीं, मैं बहुत खुश हूँ,' सरदार बोले, 'काश मुझे तुम्हारे अब्बा कहलाने का फ़ख़्र हासिल होता।'

हवीवा मुस्करा कर बोला, 'अब्बा जान, मेरा नाम हवीवा खाँ है।'

सरदार गुलाब खाँ की बाँछें खिल गईं और उसने हवीवा को अपनी बाँहों में भर लिया।

महजबीं ने जब यह देखा तो उसने आँखें बन्द करके धीरे से कहा, 'आमीन।'

कालीन पर हवीवा की बग़ल में सरदार गुलाब खाँ और गुलफ़ाम बैठे थे। थोड़ी ही देर में लकड़ियों और कोयलों की आग में साबुत बकरे घुमाए जाने लगे।

शरबत के दौर चलने लगे और कुछ गाने वाले डफ़, चंग और सरुद पर गाने लगे।

समाँ बँधने लगा। दावत के लिए दस्तरख़ान बिछा दिया गया और फिर चार पठान अंदर से धधकता हुआ लोहे का तिजाल लाए। तिजाल के ढक्कन को खोला तो उसमें एकसाबुत बकरा सिक कर सुर्ख़ हो गया था। साबधानी से बकरे को सलाख से उतारा और एक बड़े चाँदी के तश्त पर हवीवा के आगे रखा गया। रखते ही एक पठान ने खंज़र से ज़रा सा इशारा बकरे के सिले हुए पेट पर ताँत के धागे पर किया। पेट खुल गया और उसमें से ढेर

मारा गमं चावल निकल आया। चावल में वादाम, पिस्ने, खुमानी, जाफरान, जावित्री और तरह-तरह के मसाले मित्रे हुए थे। चावल फँसने ही खुमरू से मुँह में बरबस पानी आने लगा। गुलफाम ने हवीबा में कहा, 'मैं तुम्हें अपना खास दोस्त मानता हूँ हवीबा भाई और मेरे अड्वा तुम्हें सानिये गुलफाम मानते हैं। फिर भी धहतपात बरतना हमारा क्रम है। गोस्त और मसाले के चावलों में नमक पड़ना लाजिमी है। तुम्हें हमारे कबीले का नमक खाना खुशगवार लगे या नहीं, इसी डर से इस बकरे में जो नमक पड़ा है वह तुम्हारे कबीले के परबून दाऊद खाँ की दुकान से उस रोज ले आया था। मेरे पास दाऊद खाँ की रसीद भी है।' यह कहकर गुलफाम ने हवीबा के आगे रसीद रख दी।

हवीबा मुनकर तिलमिला गया और बोला, 'गोपा आपने मेरी नीपत पर शक किया गुलफाम भाई जान।' फिर सरदार गुलाब खाँ की ओर मुड़कर वह बोला, 'शुशा जान, अगर आपको नागवार नहीं गुजरे तो मैं कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।'

सरदार गुलाब खाँ टकटकी बाँधने हुए बोले, 'बोली बेटे, विल खतरा योनी।'

हवीबा बोला, 'मैं आज आपका मेहमान हूँ। मेहमान की सवाइश पूरी करना आपका क्रम है। मेरा मन्शा है कि मैं लकड़ियों पर सेका हुआ बकरा खाऊँ जिसमें आपके कबीले का नमक पड़ा हुआ है और आप सब बुजुर्ग मेरे कबीले के नमक पड़े इस तियाल के बकरे को कबूल फर्माएँ, सरदार। गुलाब खाँ और उनके साथियों के चेहरे खिल गए।

'आमीन,' सरदार गुलाब खाँ खड़े होकर बोले, 'मुझे अपने दूमरे बेटे मेहमान का हुक्म मजूर है।'

अदावत की पर्त जमीरों में धुल गई। बरसों से चली आई समुफजई और उरकजई के बीच पड़ी इतफाक की दीवार अर्दा कर गिर पड़ी।

बड़ी देर तक जशन मनता रहा। रात के करीब एक बजे हवीबा ने मामने गीघ की तरफ देखा। शायद महजबी का चाँद जैसा मुपडा उसे दिखलाई पड़ा। हवीबा ने महसूस किया कि उस पर उसके चाँद की शीनी-शीनी चाँदनी बरस रही है।

यकायक हवीवा उठा और गाने वाले के हाथ से चंग लेकर मस्ती से गाने लगा ।

उसकी आवाज़ में सोज़ और कशिश दोनों थी । उसका गाना ऐसा लगा मानो दर्द में डूबा हुआ मजनू क़यस लैला से शिकवे भरी फ़रियाद कर रहा हो । युसुफ़जई कबीले को हवीवा ने बेहाल कर दिया और महजवी भी बुरी तरह से घायल हो चुकी थी । उसने अपने दिल से धीरे से कहा, 'मेरा हवीवा ।' रात को हवीवा सरदार गुलाब खाँ के यहाँ सोया । सुबह तीन बजे खटपट सुनकर हवीवा ने आँखें खोलीं । कोई लरज़ती हुई शामा लेकर उसके चेहरे को देख रहा था । हवीवा झटके से उठा ।

सहमती हुई महजवीं हिरनी की तरह अंदर भाग गई । हवीवा मुस्करा कर देखता रह गया । फिर सहसा उसने अपने सिरहाने रखी तलवार पर एक लाल रंग का रेशमी रूमाल बँधा देखा । हवीवा ने उठकर रूमाल को खोला । केवड़े से मुअत्तर हो रहा था वह रूमाल । कोने पर सफ़ेद डोरे से कढ़ा हुआ था 'महजवीं ।'

हवीवा ने रूमाल को बार-बार सूँघा । उसे अहसास हुआ मानो वह महजवीं को अपनी बलिष्ठ बाँहों में भरे उसके केवड़े में बसे वदन को सूँघ रहा हो । हवीवा फिर उस रात सो नहीं सका । घंटों करबट बदलता रहा । घंटों रूमाल से ख़ामोश गुप्तगू करता रहा । उसे लगा जैसे महजवीं ने अपनी रूह लपेट कर रूमाल में बन्द कर दी हो ।

सुबह नाश्ते के बाद जब हवीवा सबसे मिलकर चलने लगा तो वह इधर-उधर महजवीं को देखने को तड़पता रहा । बाहर आकर उसने ऊपर की खिड़की की ओर देखा । खिड़की के एक बन्द पल्लू के साथ ही महजवीं उसे उदास आँखों से देख रही थी । फिर सहसा महजवीं का मुँह-बँधे कमल जैसा हाथ उठा और उसने हवीवा को सलाम किया । हवीवा ने आँखों से उस हसीन सलाम को तस्लीम किया और फिर वह चल दिया । उसके दिल में खट् जैसी एक आवाज़ हुई । वह मुस्करा कर अपने दिल से बोला, 'शायद मुहब्बत के नींव के पत्थर की ये आवाज़ थी, ए दिल ।'

हवीवा अलविदा करके चल पड़ा ।

नूर खाँ कुएं के पास वाली बगीची में लेटा हुआ साँप जैसी गर्म और जहर-
 आलूदा साँसें ले रहा था। उसे अपने बल पर बड़ा घमंड था। हथीबा के
 दमघम ने उसके मुगालते को झकझोर डाला था। उसने अपने भुग्बिर ईदू
 खाँ को हथीबा का नाम-घाम पता लगाने भेजा था। ईदू खाँ दूमरे दिन ही
 खबर ले आया था।

‘घान, उम घानबादे का नाम हथीबा है। उरकजई कबोने के मरदार
 नुरे खाँ का लडका है। कुश्ती, घुडमवारी और हथियार चलाने का शौक है।
 ना-मिसाल निशानची भी है।’

‘खामोश’, नूरा खिसिया कर बोला, ‘ज्यादा चापलूसी मत कर। इतना
 काफी है कि वह उरकजई है।’ नूरा छटपुट गहजनी और लूट-ग्रमोट करता
 था। उसके वालिद मरदार हिलाल खाँ को इस बात की खबर नहीं थी।

नूरा अपने साथ पाँच बन्दे रखता था जो कि रहजने थे। छोटी-मोटी
 लूट में ही वे खुश रहते थे। नूरा के दिल में कभी मरकारी घुडमवारी में
 लोहा नहीं लिया था और न ही कभी किसी अंग्रेजी चौकी पर हमला बाना
 था। शेर और भेटिये के वार में फरक होता है।

दोसहर को नूरा अपने उचक्के माथियों के साथ खँबर दर्रे के आसपाम
 मेंटरा रहा था। राहमा उसे एक बगची दिखाई दी जिमके पीछे दो सवार
 भी चल रहे थे।

‘घान, देखो ! अंग्रेजों की बगची लगती है,’ बर्री खाँ उत्तेजित होकर
 बोला।

‘क्या हो सकता है,’ नूरा बोला, ‘खजाना होना तो ज्यादा सवार होने।
 देखा जाए।’

नूरा ने राइफिल उठाकर एक सवार पर निशान मारा। वह !
 मार कर गिर पड़ा और फिर उठकर आड़ दूँदने लगा। तब तक दूमरे

ने दूसरे सवार पर निशाना साधा। सवार का घोड़ा गिर पड़ा। गोली की आवाज़ से वगधी के घोड़े चमके और वगधी इधर-उधर भागने लगी। वगधी से किसी लड़की के रोने की आवाज़ आई।

नूरा के दो साथियों ने गिरे हुए सरकारी सवारों को उलझाए रखा। वाक्री साथियों के संग नूरा गिद्ध की तरह टूटा।

वगधी पर काबू कर लिया गया। जब वगधी रोकी तो नूरा ने अंदर झाँका। एक मोटी आया किसी अंग्रेज साहब की पाँच साल की लड़की को अपनी बाँहों में भरे रो रही थी। नूरा सब कुछ समझ गया। उसने झपटकर लड़की को आया से छीन लिया।

‘नहीं नहीं खान,’ आया गिड़गिड़ा कर बोली, ‘मिसी वावा अभी-अभी बीमारी से उठी हैं। इसकी मम्मी रो-रोकर मर जाएगी।’

‘इसकी माँ को हम मरने नहीं देंगे मुटल्ली,’ नूरा राक्षस जैसी हँसी से बोला, ‘इसके फिरंगी बाप को बतला देना कि कल यहीं दो हजार रुपये लेकर अकेला आ जाए। वच्ची वापस कर दी जाएँगी।’ फिर साँप जैसी आँखें चमका कर नूरा हँसा और बोला, ‘बतला देना हवीवा ने लड़की को उठा लिया है। रुपये इस हाथ और लड़की उस हाथ। कल शाम को चार बजे तक नहीं आया तो लड़की की लाश उस नाले में मिलेगी।’

आया सुनकर काँप गई। रोती हुई डैफ़नी जेम्स को नूरा ने अपने घोड़े पर बिठाया और चल पड़ा। जाते वक्त जोर से बोला, ‘याद रखना, मेरा नाम हवीवा है।’ उसके साथी दूर निकल जाने पर उससे बोले, ‘नूर खाँ, तुमने अपना नाम हवीवा क्यों बतलया?’

नूरा पिशाच जैसी हँसी से ठहाका मार कर बोला, ‘फिरंगी हवीवा के पीछे पड़ जाएँगे, बेवकूफ़ो, इसलिए। साथियों ने नूरा की अकल की दाद दी।’

वगधी लंडीकोतल की तरफ़ भागी जा रही थी। जब वगधी डैफ़नी के बगैर पहुँची तो छावनी में कोलाहल हो गया। डैफ़नी की माँ बेहोश हो गई। स्वयं कैप्टिन जेम्स घबरा गया था। वह दाँत पीसकर बोला, ‘हवीवा, हवीवा। मैं इसे कभी नहीं छोड़ूँगा।’

‘सुनो ऐलवर्ट,’ कैप्टिन होम्स ने कहा, ‘इस वक्त सवाल डैफ़नी को बचाने

का है। मेरी राय है कि तुम दो हजार रुपये लेकर सबसे पहले डैफनी को रिहा कराकर ले आओ। उस वक्त कोई चालाकी मत करना। पठान बड़े संगदिल होने हैं।'

मरने होम्स की राय को सराहा। जेम्स ने भी इसमें अपनी बेटी की भलाई ममत्ता की। सब जगह नन्ही डैफनी की जान की खंर मांगी जा रही थी।

अफसर मंस में उस शाम हबीबा का ही जिक्र हो रहा था। मेजर पेट्रिक ह्विस्की का गिलास घुमाता हुआ बोला, 'इस हबीबा से बाद में निपटेंगे। मैं इस हबीबा को ठीक करूँगा। मैंने ऐसे बहुत से हबीबा को जमीन की धूल चटाई है। शराब के जाम की कसम दोस्तों, मैं इस हबीबा को छोड़ूँगा नहीं।'

मेजर पेट्रिक ने एक ही साँस में गिलास खत्म कर दिया और फिर दूसरा पेग लेता हुआ बोला, 'मुझे नहीं पता था कि पठान अब इतने गिर गए हैं कि छोटी बीमार बच्ची पर अपने जौहर दिखाने लगे हैं। ये हबीबा एक टुच्चा बुद्धदिल है। मर्द मर्द से टक्कर लेता है। अवोध बच्चों से नहीं।' 'बार' पर शराब देने वाला पठान रहमान खाँ सुन रहा था। उसने आवदार जबर खाँ की ओर देखा। जबर खाँ की निगाह झुक गई।

मंस बन्द हो चुका था।

'मुना जबरे,' रहमान बोला, 'मैं तो शर्म से गड गया। बाहू भई हबीबा चाह। किस कबीले ने इम बहादुर को पैदा किया है जबरे?'

जबर खाँ उरकजई पठान था। इस तज को सुनकर तिलमिला गया।

'कुछ समझ में नहीं आता उस्ताद' जबर खाँ सोच में डूबा हुआ बोला, 'हबीबा एक बहादुर जवान है। औरत पर कभी निगाह तक नहीं डालता जिसमें तो मिसी बाबा पाँच साल का कुदरत का तोहफा है। कुछ समझ में नहीं आता।'

जबर खाँ सर झुकाए हबीबा को कोसने लगा। आधी रात बीते हुए उसने रहमान खाँ को झकझोर कर उठाया।

'उस्ताद, मुझे कबीले की बेइज्जती पच नहीं रही है' जबर खाँ मुट्ठी बन्द करके बोला, 'मैं अभी इसी वक्त हबीबा को पशेमा करने जा रहा हूँ। कल दोपहर तक आ जाऊँगा।'

रहमान झुंझला कर बोला, 'पर जाआंगे क्या मेरे सर पर बैठकर ? और वह भी इस रात में ?'

'उस्ताद, मैंने घोड़ों का इन्तज़ाम कर लिया है, जवर खाँ बोला, 'और मैंस का 'पास' मय फोटो के मेरे पास है। संतरी जब रोकेगा तो कहूँगा कि मेरी माँ सख्त बीमार है। छुट्टी पर जा रहा हूँ।'

'पर छुट्टी तो सिकटरी साहब देता है रहमान नहीं,' रहमान बोला।

'तुम्हें मेरी मदद करनी पड़ेगी उस्ताद,' जवर खाँ गिड़गिड़ाकर बोला, 'सवाल पूरे कबीले की इज्जत का है।'

रहमान ने जवरे की ओर घूर कर देखा, 'अच्छा तो जाओ पर 'लैच' के वक्त तक आ जाना।'

'जरूर आ जाऊँगा उस्ताद, जरूर आ जाऊँगा।' जवर बोला, और गुस्से और क्षोभ से पीड़ित जवर खाँ घोड़े पर चल दिया। मैंस का पास अभय कवच की भाँति सावित हुआ। कोई चार बजे सुबह वह सरदार तुरें खाँ के मकान पर पहुँचा। दरवाज़े की कुंडी पीट-पीटकर उसने सारा मुहल्ला ही जगा दिया।

आँखें मलता हवीवा आया।

'कौन है खोचे, जो दरवाज़ा ढोल की तरह पीटे डाल रहा है !' हवीवा बोला।

जवर खाँ व्यंग्य की अदा में बोला, 'वाह, बहादुर हवीव खाँ ! सरदार तुरें खाँ के जिगरमन्द ! क्या कहने तुम्हारी बहादुरी के !'

हवीवा सबेरे-सबेरे यह सुनकर चौखला गया, 'क्या बकता है खोचे,' उसने जवर खाँ की गर्दन पकड़ कर कहा।

'लो, देख लो सरदार,' जवर खाँ चिल्लाया, 'अंग्रेज साहब की पाँच साल की मासूम और बीमार बेटी को उठा लाया है और मेरा ग़रेवान भी पकड़ रखा है। सब अंग्रेज मैंस में उरकज़ई कबीले पर थूक रहे थे। मैं भी उरकज़ई हूँ। नहीं खान, मासूम बच्चों की तरफ़ उरकज़ई कभी हाथ नहीं बढ़ाता, कभी नहीं हाथ बढ़ाता।'

सरदार तुरें खाँ तब तक आ पहुँचे थे।

'इसे छोड़ दो हवीवा,' वह भारी आवाज़ में बोले।

हवीवा भौंकक होकर मुनता रहा और अब्बा का आदेश मुनकर उसने जबर खाँ का गला छोड़ दिया ।

‘अब बतलाओ जबर खाँ, क्या झमेला है ?’ तुर्रें खाँ बोले ।

जबर खाँ ने मारा वाक्या मुना दिया । मुनकर तुर्रें खाँ बोले, ‘हवीवा क्या यह सच है ?’

‘जी नहीं अब्बा,’ हवीवा किकत्तंव्यविमूड होकर बोला । ‘कसम कुरआन शरीफ की अब्बा, मुझे इसके बारे में कुछ नहीं मालूम ।’

सरदार तुर्रें खाँ ने सोचा और फिर बोले, ‘हैं, तो कोई तुम्हारा नाम बदनाम करना चाहता है । कुछ कबीले के लोग बच्चे और औरत मर्दों को उठा कर फिरंती बमूल करते भी हैं पर हमारा कबीला औरत और बच्चे पर हाथ नहीं बढ़ाता । कौन हो सकता है जो तुम्हें बदनाम करना चाहता है ?’ तुर्रें खाँ ने हवीवा की ओर मुडकर कहा ।

हवीवा का ग़याल फ़ौरन महमंद कबीले के नूर खाँ पर जा टिका । महजबी वाला वाक्या ताज़ा होकर उसके जहन में घूमने लगा ।

‘मेरे ग़याल से ये काम सरदार हिलाल खाँ के लड़के नूर खाँ का है ।’ हवीवा बोला ।

‘हैं सरदार तुर्रें खाँ ने सोचा । फिर जबर खाँ से बोले, ‘कितनी फिरंती मांगी है बच्ची के लिए, जबर खाँ ?’

‘शायद दो हजार रुपये मांगे हैं, जबर खाँ बोला । ‘ऐसा ही डिक्क हो रहा था । कल शाम चार बजे तक फिरंती देनी है ।’

हवीवा बोला, ‘मैं भी चार बजे वहाँ पहुँचूंगा अब्बा ।’

‘ठीक है पहुँच जाना,’ तुर्रें खाँ बोला, ‘पर दो हजार रुपये मुझसे ले जाना और महमदों के सरदार या पानजादे को दे आना । उनके कबीले में फिरंती जायज़ है ।’

हवीवा अब्बाक मुनता रहा । ‘पर अब्बा,’ वह कह ही रहा था कि तुर्रें खाँ ने बात काटने हुए कहा, ‘ग़यादा बात बढाने की जरूरत नहीं है, हवीवा । महमदों से हमारी कोई ख़शमक नहीं । हाँ, तुम्हारी और नूर खाँ की निजी काट-छान हो सकती है । इसलिए मेरा मशिवरा है कि उनके दो हजार उन्हें मिल जाएँ और फिरगियों को उनकी बेटी मिल जाए ।’

जबर खाँ की आँखें भर आई। आगे बढ़कर उसने सरदार तुर्रें खाँ के हाथ पकड़ कर चूम लिए और हवीवा के आगे उसने दामन पकड़ कर कहा, 'मुझे मुआफ़ करना छोटे सरदार,' रोता हुआ जबर खाँ बोला, 'मैंने उरकज़ई पर शक किया, मैं कितना कमीना हूँ। मुझे मुआफ़ करना छोटे सरदार।' हवीवा ने उसे गले से लगाया।

'नहीं चचा, आपका अहसान मैं कभी नहीं भूलूंगा। आपने मेरे नाम की आवरू रखी। पूरे कवीले की इज्जत रखी है।'

जबर खाँ आँखें मलता चल दिया।

दूसरे दिन हवीवा दस साथियों को लेकर चल पड़ा। घोड़े पर दो हज़ार चाँदी के रूपयों की थैली भी बँधी थी। नूर खाँ और उसके पाँच साथी हँसी-मजाक करते हुए कच्चे रास्ते निकले। डैफ़नी उसकी कमर से बँधी थी। डर और कमजोरी से वह मुरझा गई थी।

हवीवा ने उसे मैदान में निकलते ही धर लिया। दस राइफल की नलियाँ नूर खाँ और उसके साथियों को साधे हुई थीं।

'कहाँ जा रहे हैं ख़ानजादे 'हवीवा खाँ', हवीवा हँसकर बोला।

नूर खाँ सुनकर सक्ते में आ गया। अपने सूखे ओंठों पर जीभ फेरता हुआ बोला, 'तुम?'

'जी हाँ। ख़ानजादे, मैं।' हवीवा बोला 'मुझे ख़बर मिली कि तुमको मेरा नाम बहुत पसन्द आया है ख़ैर हम कोई और नाम रख लेंगे अपना। और ये नन्हा-सा फूल कहीं ले जा रहे हो ख़ान वहादुर?'

नूर खाँ गुस्से में काँपने लगा पर उसकी हिम्मत चूँ-चाँ करने की भी नहीं हो रही थी।

हवीवा ने कड़क कर अपने साथी से कहा, 'इनकी बंदूकें कब्ज़े में कर लो वहीदा।'

वहीदा खाँ ने आगे आकर सबकी बंदूकें छीन लीं। बाक़ी नौ बंदूकों की नलियाँ नूर खाँ और उनके साथियों को फिर भी साधे रहीं।

'नूर खाँ, इस वच्ची को उस फिरंगी को देना है। मैं पीछे-पीछे चलूंगा', हवीवा बोला।

नूरा सिटपिटा गया था।

ठीक चार बजे कैप्टिन जेम्स दूर में नज़र आया। वह मफेद झंड़ा पकड़े हुए बड़ रहा था। उसके माथी गायद रूधर-उधर छपे हों। उस वक़्त वह अकेला आ रहा था। घोड़े की दाईं तरफ एक धैली भी बँधी थी।

हबीबा नूर खाँ से कोई चीज कदम दूर था।

'फिरंगी साहब, हम कोई धोखा नहीं करेंगे। आप इग चट्टान की आड़ में अपनी बेटी ले लीजिए।'

हबीबा जोर में चिल्लाया था।

कैप्टिन जेम्स ने आदेश के मुताबिक़ घोड़ा चट्टान की तरफ़ मोड़ दिया। आड़ में नूरा ने सहमते हुए डैफनी को कैप्टिन जेम्स को मौँगा। डैफनी सकारक 'पापा' करके उसमें लिपट गई।

कैप्टिन जेम्स ने धैली खोलकर सामने कर दी।

'ठहरो,' हबीबा बोला, और नूरा को सामने करते हुआ बोला, 'साहब बहादुर, धैली इधर लाइये।'

कैप्टिन जेम्स ने धैली हबीबा को घमा दी। हबीबा धैली लेकर मुस्तराया और बोला, 'मैं ये धैली तुम्हारी बच्ची को भेंट करना हूँ साहब। मुझे खूब देखकर पहचान लो, मैं हबीबा हूँ। और जिसने तुम्हारी बच्ची को उठा कर मेरे नाम को बदनाम करना चाहा वह खानजादा ये है। पर मैं इसका नाम नहीं बदलाऊँगा। अगर इसका नाम बदला दिया तो इसके वालिद का सर गर्म से झुक जाएगा। और इसके वालिद मेरे वालिद के दोस्त हैं।'

कैप्टिन जेम्स का मुँह खुला का खुला रह गया।

उसने हबीबा से कहा, 'बग़ मैं तुममें हाथ मिला सकता हूँ हबीबा बहादुर?'

'अहूर,' हबीबा मुस्कराकर बोला। उसने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और बोला, 'कभी आपमें मैदान में फिर मुलाकात होगी साहब।'

कैप्टिन जेम्स मुश्किली हुई बेटी को लेकर वापस चला गया।

'बलिए खानजादे वापिस चले।' हबीबा राइफल की नली नूर खाँ की ओर करके बोला।

'नज़फ़ ख़ान,' हबीबा बोला, 'महमद कबीले की तरफ़ चलो।'

नज़फ़ ख़ान महमदों के कबीले की तरफ़ चल दिया। जब कबीले की

सरहद नज़र आने लगी तो हवीवा बोला, 'तुम लोग खानज़ादे और इनके जिगरी दोस्तों पर यहीं नज़र रखना। मैं अभी आया।'।

और हवीवा यह कहता हुआ दुलकी चाल से घोड़े को भगाकर कबीले की तरफ़ चल पड़ा।

कबीले में घुसकर उसने सरदार हिलाल खाँ का घर पूछा और उनकी देहरी पर आकर उतर पड़ा।

किवाड़ की कुंडी खटखटाने पर सरदार भारी आवाज़ में 'कौन है' कहते हुए आए।

हवीवा ने उन्हें झुककर सलाम किया और बोला, 'क्विला, मैं सरदार तुर्रे खाँ उरकज़ई का बेटा हवीवा हूँ। कुछ अर्सा हुआ मैंने नूर खाँ से दो हजार रुपये उधार लिए थे। उन्हें वापस करने आया हूँ।'।

सरदार ने तुर्रे खाँ का नाम सुनते ही हवीवा को बाँहों में भर लिया। 'अरे बेटे, तुम इतने बड़े हो गए,' हिलाल खाँ बोला, 'और सरदार तो ख़रियत से हैं।'।

'आपकी इनायत है,' हवीवा बोला।

हवीवा ने रुपयों की थैली पकड़ा कर कहा, 'मैं जल्दी में हूँ क्विला। आप नूर खाँ को ये रुपये दे दीजिएगा। हाँ, मैंने व्याज नहीं दिया है क्योंकि दोस्त-दोस्त से व्याज नहीं लेता।'।

'अरे बेटे इतनी जल्दी भी क्या है,' हिलाल खाँ बोला, 'बग़ैर शरबत पिए नहीं जाने दूँगा।'।

अन्दर से शरबत मँगवाया गया और फिर सलाम करके हवीवा वापस चल दिया।

नूरा अपने साथियों के साथ हरी-हरी घास पर बैठा था। हवीवा के साथी ऊपर चट्टान पर चौकन्ना बैठे थे। हवीवा ने वापस आते ही कहा, 'इनके कारतूस रख लो और बन्दूकें वापस कर दो।'।

इसके बाद हवीवा और उसके साथी मुड़कर चल दिए।

'इस खन्ज़ीर के बच्चे हवीवा से बदला नहीं लिया तो मेरा नाम नूर खाँ नहीं,' नूरा ने खूनी आखें तरेर कर कहा।

'कुछ भी हो ख़ान,' उसका साथी बोला, 'उरकज़ई का लड़का है

बहादुर ।'

'खामोश !' नूर खाँ पलट कर बोला ।

सब मुंह लटकाए हुए वापस कबीले के अन्दर दाखिल हुए ।

घर पहुँचते ही नूर खाँ के अब्बा सरदार हिलान खाँ ने हँसकर कहा, 'कहाँ गया था नूरा ? ये तेरा दोस्त हबीबा आया था और तुझसे जो दो हज़ार उसने उधार लिए थे ना, वह वापस दे गया है । ये ले सँभाल अपनी रकम ।'

नूर खाँ आँखें फाड़े सुनता रहा । उसे ऐसा महसूस हुआ कि हबीबा ने पानी में भीगा हुआ कोड़ा उसकी नगी पीठ पर मारा हो । और उस खयाली कोड़े की नीली धारी नूरा के दिल पर निशान छोड़ गई । कभी मिटने न वाला निशान ।

फन्ने खाँ निशानची की सिफारिश सुनकर ही सरदार तुर्रें खाँ ने सारे कबीले के सामने हबीबा के सर पर कुल्हा और पगड़ी बाँधी थी । कबीले के युगुग पुराने लड़ाकू बहादुरों को सूने में बाँटे गए ।

'बेटे हबीबा,' सरदार बोले, 'हमारा कबीला कभी औरत और मामूम बच्चे पर हाथ नहीं डालता । दूसरी बात हमारे कबीले का बहादुर जब खुदा को प्यारा होता है तो उसके सीने में छेद पाया जाता है पीठ पर नहीं । मैं उरकजूई कबीले की इज्जत तुम्हारे हाथों दे रहा हूँ ।' हबीबा ने सबके सामने मिर झुकाकर शतें कबूल की । सरदार तुर्रें खाँ ने उसे एक लाल रेशम के धागे का उकदा दिया और कहा, 'एक बात रह गई । हम बहादुर की इज्जत करने हैं । दुश्मन हो या दोस्त पर हो बहादुर । जब बहादुर दुश्मन हमारे हाथों मारा जाता है तो हम ये लाल धागा दमकी कलाई पर बाँध देने हैं ।

हबीबा ने लाल धागे की लच्छी में ली ।

हबीबा उस दिन में अपने जगम बाँधेर बन चुका था । उसके माथ

कोई चालीस लोगों का दल था। उसके दो खास दोस्त थे। एक तो फ़रीदा दूसरा असलम। असलम जीता जागता जिन्द था। उसका सीना पत्थर की पटिया जैसा कठोर और चौड़ा था। कुश्ती और पंजा लड़ाने में उसका कोई आसपास साथी नहीं था। इधर फ़रीदा घुड़सवारी में लामिसाल था। हवीवा पहलवान भी था और घुड़सवार भी। पर वह तक अपने इन दोनों हाथों पर नाज करता था।

दूसरे दिन से ही हवीवा अंग्रेजी चौकियों पर चील की तरह झपटने लगा। पन्द्रह दिन के अंदर ही उसने दस राइफल और जमरूद से आता हुआ खजाना लूटा। सरकारी खजाने के लोहे के बक्स में बीस हजार रुपया मिला। हवीवा के चार साथी काम आए थे। हवीवा अपने दोस्तों की लाश छोड़कर नहीं आता था। भारी गोलावारी के बावजूद उसके साथी चारों लाशों को घोंड़ों पर लादकर वापस आ गए थे। हवीवा की बहादुरी और दिलेरी देखकर अंग्रेज भी अश-अश कर उठे थे।

जमरूद में हो रही कॉन्फ़्रेस में स्टेशन कमांडर मेजर विटवर्थ ने निष्पक्ष भाव से हवीवा की दिलेरी को सराहा था। वह बोला था, 'सरहद की चोटियों की धुंधली रेखा के पार प्रकृति का सूरज सुबह धीरे-धीरे अपना सर उठाकर उभरता है और फिर शाम को जैसे स्वयं अपनी कब्र में अपने पावों से ही उतर जाता है। पर एक और भी आवारा सूरज जब चाहे तब सरहद की धुंधली रेखाओं को पार करके निकलता और छुपता रहता है। यह निर्भय और उद्दण्ड आवारा सूरज है हवीवा। उसके साथी सूर्य किरणों की भाँति उसके चारों ओर चकाचौंध करने वाली गति से मँडराते रहते हैं। काश, हम इस आवारे सूरज के प्रकाश को बाँध सकें।'।

निःसंदेह हवीवा एक आवारा सूरज ही था। जब उसका मन चाहता वह सरहद पार उदय होता, जब उसका मन चाहता सरहद के पीछे अस्त हो जाता। उसे निगलने के लिए अंग्रेज कोई भी वायुपुत्र हनुमान पैदा न कर सके।

लेफ्टिनेंट कर्नल सर हैरल्ड डीन ने एक बड़ी कॉन्फ़्रेस पेशावर में की थी। हवीवा की सरगर्मी ने उन्हें बेचैन कर दिया था। उनका मशवरा था कि जमरूद के किले से 'गार्डन हाइलैंड्स' की एक कम्पनी बुलवा ली

जाए। पर मेजर पैट्रिक ने वहस की कि जमरूद के किंग की जिम्मेदारी डावांटोन हो जाएगी। वेहतर होगा कि हिन्दुस्तान में सिनी रिमाले का स्ववाइन भंगवाया जाए जिसके मवार छेंटे हुए बहादुर हो। कर्नल डीन ने पैट्रिक की दम्बील को माना और कहा, 'तुम्हारा मशवरा मेरे मशवरे से ज्यादा ठोग है, माइक्रित। मैं कल ही सी-इन-सी को लिखूंगा।'

'मिन्ध हासं' उम समय लाहौर की छावनी में पडा था। मेजर काकन का स्ववाइन उम गमय 'हैबक डैविन्म' के नाम में प्रमिद्ध थे। जिस दिन 'मिन्ध हार्म' का 'रेजीमेन्ट डे' मना था उम रोज काकन के स्ववाइन के करतर देखकर पूरा लाहौर दांता तले उंगली दबा गया था। काकन स्वय गघा हुआ घुडमवार था जो जमीन में गज भर गडी मेख को नेजे और तलवार में गगाइता हुआ आंघी की तरह निकल जाता था। उसके रिसाले के छेंटे हुए नप थे सग सवार। वह हरेक मवार पर नाज करता था। जब कर्नल डीन की बिट्टी आई तो मेजर काकन का स्ववाइन ही सरहद के लिए चुना गया। उम रात मेजर काकन ने डटकर शराब पी थी। मारा स्ववाइन नंगर में शराब और गोश्त पर टूटा पड रहा था। बाकी के स्ववाइन झेंपे हुए से देख रहे थे। कितना खुशनमीव था मेजर काकन : सभी आफीससं मंम में यह दबी जवान से कह रहे थे।

हफ्ते भर के अदर ही मेजर काकन अपने बहादुर सवारों को लेकर आ गया था। सारा स्ववाइन वांट दिया गया था। छ पोस्टों पर आघा-आघा ट्रूप तैनात कर दिया गया। नम्बर पांच पोस्ट के नजदीक हवीवा के तीन-चार हमले हो चुके थे। इस पोस्ट के पाम में ही दरें के अदर टाक-गाड़ी की बग्गी निकलती थी। फौज की तनख्वाह का खजाना भी खच्चरों की पीठ पर लादकर आसपास की पोस्ट पर जाता था। नम्बर पांच पोस्ट एक महत्वपूर्ण पोस्ट थी। करीब चार सौ गज दूर जकान्बोन कबीले का गांव था। कबीले के सरदार बहराम खां को अप्रेज प्रगामन हर मान द्य हजार रुपये देता था। सिलेदारी की रस्म से फायदा यह था कि ये पटान भी अप्रेजों की तरफ से छुट-पुट हमलों में मदद करते थे।

मेजर काकन ने नम्बर पांच पोस्ट पर अपना मवने बहादुर और वेहन-रिन दकादार दुर्गासिंह भंजा। दुर्गासिंह घोड़े की पीठ पर बैठते ही बाकल

वन जाता था। मेजर काकन उसे अपने से बेहतर सवार मानता था। दुर्गासिंह का सुता हुआ वदन और चीते जैसी कमर पर सबकी नजर एक बार ठहर जाती थी। दुर्गासिंह के करतब पूरी पलटन में मशहूर थे। 'सिन्ध हास' की नाक का बाल था दफ़ादार दुर्गासिंह।

नम्बर पाँच पोस्ट की गश्त और चौकन्ना दविश से हवीवा की आजादी में भी फ़र्क़ आया। उस दिन हवीवा नहीं निकला बल्कि फ़रीद खाँ टुकड़ी को लेकर दर्रे के पास राशन और शराब की पेटियों से लदे खन्चरों की क्रतार पर नज़र लगाए बैठा था। जिस वक्त फ़रीदा अपने साथियों को लेकर टूटा उसी वक्त दुर्गासिंह के दस सवारों ने भागते हुए घोड़ों पर बैठे-बैठे इतने सही निशाने लगाए कि फ़रीदा अपने दो साथी खोकर भाग गया। दोनों लाशों को छोड़कर आना फ़रीदा को अखर रहा था। हमला विफल हो चुकने पर फ़रीदा सफ़ेद झंडा लहराता अकेला दफ़ादार दुर्गासिंह के सवारों की ओर आया। दुर्गासिंह ने उसे आने दिया।

'हमारी अर्ज़ है कि हमें अपने बहादुरों की लाश उठाने दी जाए,' फ़रीदा दूर से चिल्लाया।

दुर्गासिंह भी वीर था। भदौरिया राजपूत का खून उसकी नसों में भरा था।

'ठीक है,' दुर्गासिंह बोला, 'हथियार हमारे और लाशें तुम्हारी। तुम लाश ले जा सकते हो।'

फ़रीदा फिर दो साथियों को लेकर आया और अपने गिरे हुए साथियों की लाश घोड़ों की पीठ पर लाद कर ले चला। चलते वक्त फ़रीदा ने दुर्गासिंह को भरपूर नज़र से देखा। घूरते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूँ सरदार।'

दुर्गासिंह उत्तर में केवल मुस्करा दिया था। फ़रीदा की कहानी सुनकर हवीवा तिलमिला गया। उसके साथियों का हमला विफल ही नहीं हुआ बल्कि दो साथी भी खेत रहे। और फिर जब फ़रीदा ने उस काफ़िर हिन्दू दफ़ादार की दरियादिली वयान की तो हवीवा दुर्गासिंह को देखने के लिए बेचैन हो गया। शायद हवीवा की लगन सच्ची थी। दस दिन बाद ही 'सिन्ध हास' का 'फ़क्शन' था। वार्षिक दिन मनाया जाना था। तब तक

खका खेल के कई लोगों ने दुर्गासिंह की घुड़सवारी के किस्से फँता दिए थे। हवीवा और भी बेचैन हो गया।

वापिक दिन पर रिसाला पलटन में बड़ी सरगमों थी। मैदान साफ कराया गया था और चूने से पट्टियाँ खिचवाई गई थी। एक ओर रंग विरंगे शामियानें लगे थे। कुर्सियों पर अफसरान और उनके परिवार बैठने थे। शहर के तमाशबीनों के लिए सामने वाली जमीन खाली थी। गैल गुरुहोते ही पहले मेजर काफ़न ने आगर कर्नल हाइडफ़ोस्ट को अभिवादन किया और आरंभ करने की अनुमति माँगी। इसके बाद उसके सवार भड़कीली बंदियों में मैदान में उतरे। गद्दी में खोले को नेत्रों में उखाड़ उखाड़कर वे घोड़ों पर आँधी की भाँति भागने लगे। मेजर काफ़न जब घोड़े पर चला तो उसने दो में खेँ उछाड़ी। एक नेत्रों से और फिर फुर्ती से म्यान से तलवार खींचकर दूमरी। चारों ओर तातियों की गडगडाहट गूँज उठी।

दर्शकों की भीड़ में चादर लपेटे हवीवा और अमलम भी घुड़े देख रहे थे। फरीदा इधर-उधर दुर्गासिंह को खोज रहा था।

मेजर काफ़न के बाद रिमाले के सेप्टिनेन्ट मेयरम ने भागने हुए घोड़े पर बैठे-बैठे हवा में फेंकी हुई काँच की बोटलों को पिस्तौल से उड़ा दिया। हवीवा ने भी मर हिलाकर दाद दी। आखिर में दुर्गासिंह का करतब रखा गया था। दूर से दुर्गासिंह घोड़े पर मूर्ति जैसा लग रहा था।

फरीदा हवीवा के कान में फुमफुसाकर बोला, 'ये ही है टफ़ादार दुर्गासिंह। कहते हैं आसपास ऐसा घुड़सवार नज़र नहीं आता जो इसका मुकाबिला कर सके।' हवीवा ने साँम रोककर दुर्गासिंह की तरफ देखा।

जमीन की पट्टी पर एक पीतल का कटोरा रख दिया गया और चोटी दूर पर ताश का पत्ता जमीन पर रख दिया गया। दुर्गासिंह 'जयभवानी' विल्लाता हुआ काल की तरह झपटा। पलक झपकने ही उसने घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे फुर्ती से तलवार को म्यान से खींचा और झुकने हुए एक बार में कटोरे के दो टुकड़े कर दिए। आगे बढ़ने ही उसने भागने हुए घोड़े की पीठ में बहुत नीचे झुकने हुए तलवार की नोक से ताश का पत्ता बाँध डाला और सामने से गुज़र गया।

'आफ़री,' हवीवा बोला, 'क्या शेर का बच्चा है।' बरबत हवीवा का

वन जाता था। मेजर काक्रन उसे अपने से बेहतर सवार मानता था। दुर्गासिंह का सुता हुआ वदन और चीते जैसी कमर पर सबकी नज़र एक वार ठहर जाती थी। दुर्गासिंह के करतब पूरी पलटन में मशहूर थे। 'सिन्धु हार्स' की नाक का बाल था दफ़ादार दुर्गासिंह।

नम्बर पाँच पोस्ट की गश्त और चौकन्ना दविश से हवीवा की आज्ञादी में भी फ़र्क आया। उस दिन हवीवा नहीं निकला बल्कि फ़रीद खाँ टुकड़ी को लेकर दर्रे के पास राशन और शराब की पेटियों से लदे खच्चरों की क़तार पर नज़र लगाए बैठा था। जिस वक़्त फ़रीदा अपने साथियों को लेकर टूटा उसी वक़्त दुर्गासिंह के दस सवारों ने भागते हुए घोड़ों पर बैठे-बैठे इतने सही निशाने लगाए कि फ़रीदा अपने दो साथी खोकर भाग गया। दोनों लाशों को छोड़कर आना फ़रीदा को अखर रहा था। हमला विफल हो चुकने पर फ़रीदा सफेद झंडा लहराता अकेला दफ़ादार दुर्गासिंह के सवारों की ओर आया। दुर्गासिंह ने उसे आने दिया।

'हमारी अर्ज़ है कि हमें अपने बहादुरों की लाश उठाने दी जाए,' फ़रीदा दूर से चिल्लाया।

दुर्गासिंह भी वीर था। भदौरिया राजपूत का खून उसकी नसों में भरा था।

'ठीक है,' दुर्गासिंह बोला, 'हथियार हमारे और लाशें तुम्हारी। तुम लाश ले जा सकते हो।'

फ़रीदा फिर दो साथियों को लेकर आया और अपने गिरे हुए साथियों की लाश घोड़ों की पीठ पर लाद कर ले चला। चलते वक़्त फ़रीदा ने दुर्गासिंह को भरपूर नज़र से देखा। घूरते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूँ सरदार।'

दुर्गासिंह उत्तर में केवल मुस्करा दिया था। फ़रीदा की कहानी सुनकर हवीवा तिलमिला गया। उसके साथियों का हमला विफल ही नहीं हुआ बल्कि दो साथी भी खेत रहे। और फिर जब फ़रीदा ने उस काफ़िर हिन्दू दफ़ादार की दरियादिली बयान की तो हवीवा दुर्गासिंह को देखने के लिए बेचैन हो गया। शायद हवीवा की लगन सच्ची थी। दस दिन बाद ही 'सिन्धु हार्स' का 'फंक्शन' था। वार्षिक दिन मनाया जाना था। तब तक

खका खेन के कई लोगो ने दुर्गासिंह की घुडसवारी के किस्म फँना दिए थे । हवीवा और भी बेचैन हो गया ।

वार्षिक दिन पर रिसाला पलटन में बड़ी सरगर्मी थी । मैदान साफ़ कराया गया था और चूने से पट्टियाँ खिचवाई गई थीं । एक ओर रंग बिरंगे शामियानें लगे थे । कुर्सियों पर अफसरान और उनके परिवार बैठने थे । शहर के तमाशबीनों के लिए सामने वाली जमीन खाली थी । खेल शुरू होने ही पहले मेजर काफ़न ने आकर कर्नल हाइडफोस्ट को अभिवादन किया और आरंभ करने की अनुमति माँगी । इसके बाद उसके सवार भडकीली बंदियों में मैदान में उतरे । गड़ी में खों को नेत्रों से उखाड़ उखाड़कर वे घोड़ों पर आधी की भाँति भागने लगे । मेजर काफ़न जब घोड़े पर चला तो उसने दो मेंबे उखाड़ी । एक नेत्रों से और फिर फुर्ती से म्यान से तलवार खींचकर दूमरी । चारों ओर तालियों की गडगडाहट गूँज उठी ।

दर्शकों की भीड़ में चादर लपेटे हवीवा और असलम भी खड़े देख रहे थे । फ़रीदा इधर-उधर दुर्गासिंह को खोज रहा था ।

मेजर काफ़न के बाद रिसाले के लेफ्टिनेन्ट मेयर्स ने भागने हुए घोड़े पर बैठे-बैठे हवा में फेंकी हुई काँच की बोलतों को पिस्तौल से उड़ा दिया । हवीवा ने भी सर हिलाकर दाद दी । आखिर में दुर्गासिंह का करतब रखा गया था । दूर से दुर्गासिंह घोड़े पर मूर्ति जैसा लग रहा था ।

फ़रीदा हवीवा के कान में फुसफुमाकर बोला, 'ये ही है दफ़ादार दुर्गासिंह । कहते हैं आसपास ऐसा घुडसवार नज़र नहीं आता जो इसका मुजाबिला कर सके ।' हवीवा ने सामं रोककर दुर्गासिंह की तरफ़ देखा ।

जमीन की पट्टी पर एक पीतल का कटोरा रख दिया गया और थोड़ी दूर पर ताश का पत्ता जमीन पर रख दिया गया । दुर्गासिंह 'जयभवानी' चिल्लाना हुआ काल की तरह झपटा । पलक झपकते ही उसने घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे फुर्ती से तलवार को म्यान से खींचा और झुकते हुए एक वार में कटोरे के दो टुकड़े कर दिए । आगे बढ़ते ही उसने भागते हुए घोड़े की पीठ से बहुत नीचे झुकते हुए तलवार की नोक से ताश का पत्ता बीध डाला और सामने में गुजर गया ।

'आफ़री,' हवीवा बोला, 'क्या शेर का बच्चा है ।' बरबस हवीवा का

हाथ उठा और उसने दुर्गासिंह की ओर सलाम किया। दुर्गासिंह लौटकर फिर लाइन पर आ गया। अब की बार वह राइफल लेकर घोड़े पर आया। भागते वगत उसके आगे एक वीतल फेंकी गई और एक पीछे। दुर्गासिंह ने राइफल से आगे चाली वीतल और पीछे मुड़कर पीछे फेंकी वीतल को गोली से उड़ा दिया। ताली की गड़गड़ाहट से आसमान गूँज गया।

हवीवा मुस्कराता हुआ दुर्गासिंह को घूरता रहा।

सेल चत्म होने पर हवीवा के मुँह पर दुर्गासिंह का नाम मचल-मचल उठता।

‘फ़रीदा, काण मुझे भी दुर्गासिंह का फ़न हासिल होता,’ हवीवा सर हिला-हिलाकर कहता रहा।

कोई दस दिन बाद सिद्दी गाँव में मेला और हाट लगी थी। नम्बर पाँच पोस्ट रो करीब ही था सिद्दी गाँव। दुर्गासिंह अपने घोड़े पर अपने सवार भैरोंसिंह के साथ मेला देखने आया था। चारों ओर खुशी और रंगीला वातावरण था। तभी हवीवा अपने सात-आठ साथियों को लेकर उधर से गुजरा। असलम ने हवीवा को कुहनी मारते हुए कहा, ‘सरदार देखो वही काफ़िर दफ़ादार।’

हवीवा ने पलट कर देखा। आज उसने दुर्गासिंह को पास से देखा। तपे ताँवे के रंग का दुर्गासिंह हवीवा का मन मोहे ले रहा था। चौड़ा सीना और कसा शरीर। एक अजीब सा खिचाव था दुर्गासिंह में। तभी चट्टान जैसा असलम बोला, ‘सरदार, दो-दो हाथ उड़ जाँ इस शह सवार से।’

हवीवा मुस्करा कर बोला, ‘जाओ। बात छेड़ो।’

असलम बनमानुस की तरह झूमता हुआ चल दिया। असलम की बाँहें बटे हुए रस्से जैसी थीं। अभी पिछले महीने उसने अपने घोड़े के लिए रातव को एक लावारिस गधे को खाता देख लिया था। असलम ने क्रुद्ध होकर एक भरपूर लात मारी थी गधे की पसलियों पर। गधा ज़मीन पर तपड़ने लगा था। भीम जैसा बल था असलम के शरीर में। उसने दुर्गासिंह के घोड़े के आगे आकर कहा, ‘अस्सलाम वालेकुम सवार। तुम्हारा बदन देखकर लगता है कि हिन्दुस्तान में भी जवान रहते हैं। हमसे जोर आजमाइश करेगा।’

दुर्गासिंह ने मुस्कराकर कहा, ‘हिन्दुस्तान में तुमसे भी सवा गुने बज़ान

के जवान रहते हैं दोस्त । मैं मवार हूँ, पहलवान नहीं । हाँ अलबस्ता घोड़े की पीठ पर बैठे हुए मैं तुममें जैसे चाहो लड़ सकता हूँ ।'

असलम असमंजस में पड़ गया । उगी बबत हबीबा आगे बढ़कर बोला, 'दफादार साहिव, हमारा असलम घोड़े की पीठ पर बैठे हुए ही आपमें पंजा लड़ाएगा ।'

'मुझे मज़ूर है,' दुर्गामिह बोला ।

असलम अपने पहाड़ जैसे घोड़े पर बैठकर दुर्गामिह के सम्मुख आया । दुर्गामिह की कलाई और पंजा पीतल के कटोरे को बजनी तलवार से काटने के आदी हो गए थे । उसकी कलाई में विजनी भरी हुई थी जबकि असलम की कलाई उसके चट्टान जैसे शरीर का एक अंग था । दुर्गामिह की ताकत का फुर्ती में सम्बन्ध था । देर तक जूझा-जाझी का मौका रफ्तार से भागने हुए घोड़े पर कहीं मिलता था इसलिए उसको समूची एकत्रित की हुई ताकत को कलाई में लाना था और पलक झपकते हुए फुर्ती से काम कर जाना था । असलम इस धोखे में था कि पंजा पहले अंगुलियों में फँसेगा और फिर ताकत का प्रदर्शन होगा । दोनों घोड़े बराबर आए और जैसे ही असलम ने अपना फौलादी पंजा दाँत पीसने हुए दुर्गामिह की तरफ बढ़ाया कि दुर्गामिह ने बड़ी फुर्ती में उसको आनन-फानन इतनी जोर से मरोड़ा कि असलम पीड़ा को सहन नहीं कर पाया और घोड़े के नीचे आ गिरा । फरीदा यह देखकर सकपका गया । उसने आगे बढ़कर असलम को उठाया तो देखा कि असलम की दो अंगुलियाँ उतर गई हैं और वह दर्द में कराह रहा है । यह देखकर हबीबा के साथियों ने दुर्गामिह को घेर लिया । पर हबीबा ने डपट कर कहा 'घबरदार, कोई भी इस हिन्दू दफादार पर हाथ नहीं उठाएगा । ईमान की लड़ाई थी और ईमान से ही यह जीता है ।' फिर दुर्गामिह की तरफ प्रशंसा से देखते हुए कहा, 'दोस्त, हम उरक-जई कबीले के लोग बहादुर की कद्र जानने हैं । इन्शाअल्लाह, जल्दी ही मैदान में मिलेंगे । अगर मैदान में भी तुमने बहादुरी दिखाई तो तुम्हें मुँह मीठा इनाम भी देने का हम हीसला रखते हैं ।'

और फिर देखते ही देखते हबीबा का दल कराहने असलम समेत भीड़ में घायब हो गया ।

थोड़े ही दिनबीते होंगे कि नम्बर पाँच पोस्ट पर दुर्गासिंह को मुखविर ने खबर दी कि हवीवा दरें के पास दस खच्चरों पर लदा खजाना और बन्दूक के कारतूस की पेटियाँ छीन ले गया है। सवारों को मार-काट डाला है और कुछ भाग आए हैं।

हवीवा के दल के करीब पैंतीस लुटेरे दरें से दूर निकल चुके थे। दुर्गासिंह के पास उस वक्त सिर्फ़ सात सवार थे। वह फौरन ही सातों सवारों को लेकर मुखविर के साथ चल पड़ा। करीब पन्द्रह मील की पथरीली चढ़ाई उतराई को पार करना सहज नहीं था। उसके दो साथियों के घोड़ों ने जवाब दे दिया।

दुर्गासिंह बाकी के पाँचों सवार लेकर ही चल दिया। थोड़ी देर में उसे हवीवा का दल खच्चरों के साथ जाते हुए दिखाई पड़ने लगा। उस समय हवीवा के साथ पैंतीस सवार थे। मुखविर यह देख कर बोला, 'दफ़ादार साहिब, आपके पाँच जवानों को हवीवा के लुटेरे मूली-गाजर की तरह काट डालेंगे। आज आपके पास बन्दूकें भी नहीं हैं। तलवार और नेजे की लड़ाई भी आप इतनी नफ़री से नहीं लड़ सकेंगे। मेरा कहा मानो और वापस लौट चलो। ये बहादुरी नहीं है। खुदकुशी है जो आप करने जा रहे हो।'

दुर्गासिंह क्रोध से बोला, 'नसीम मियाँ, हमने राजपूतनियों का दूध पिया है। तुम्हें अगर जान इतनी ही प्यारी है तो यही से राजपूतों की तलवार की खनखनाहट सुनना। तुम्हारा काम मुखबरी है, हमारा काम जूझना है।'

दुर्गासिंह के पाँचों घुड़सवारों की टाप की आवाज़ सुनकर पहले तो हवीवा चौंका कि कहीं बड़े रिसाले का हमला तो नहीं हो रहा है। परन्तु जब उसने दुर्गासिंह और उसके साथ पाँच सवार देखे तो वह हँसकर बोला, 'चे खुश, ये तो हमारा बाँका दफ़ादार है और वह भी सिर्फ़ पाँच सवार के साथ।'

दुर्गासिंह ने पास आकर ललकारा, 'हवीव खाँ, मैं सरकार की तरफ़ से तुमसे कहता हूँ कि दसों सरकारी खच्चर वापस कर दो वरना अंजाम बुरा होगा।'

'बुरा अंजाम !' और हवीवा इतनी जोर से हँसा कि उसकी आँखों से

आँसू निकल पड़े। दुर्गासिंह ने आँसू तरेर कर कहा, 'अच्छा, तो फिर देखा
ब्रजाम।'

वह पाँचों सवार सहित तेज वापस मुड़ गया।

'भाग गया। अंजाम दिया रहा था,' हँसकर फरीदा बोला।

कोई दो सौ गज की दूरी से दुर्गासिंह ने घोड़ों को वापस मोड़ा और
रिमाने के हमले की तरतीब में घोड़े गूटे कर दिए। फिर 'चारों' चीखता
हुआ दुर्गासिंह अपने पाँचों सवार सहित हवीवा के दल पर टूट पड़ा। पाम
बाकर दुर्गासिंह 'जय भवानी' चिल्लाया और वह माशात दुर्गा का रूप बन
गया। पहले वार में उसने फरीदा का दाहिना कंधा बल्ले में बेकार कर
दिया और बल्ले छोड़कर फिर तलवार सूत ली। अमलम की तलवार का
हाथ बल्ले की तरह गिरा था। दुर्गासिंह ने उसे अपनी तलवार पर रोका
और फिर विजली की भाँति उसकी तलवार अमलम के पेट के आरम्भ में
गई।

अमलम को घोड़े से गिरता देखकर हवीवा दुर्गासिंह पर झपटा।
तलवारों की छनखनाहट में मृत्यु का निनाद सुनाई पड़ने लगा। दुर्गासिंह
ने बड़ी फुर्ती से हवीवा के बाएँ कंधे पर वार किया। गून का एक फड्काग-
मा छूट पड़ा था। उमी दम बहीदा ने नाक कर बल्ले दुर्गासिंह के ऊपर
दाहिनी ओर से फेंका जो दुर्गासिंह के मोते में धँस गया।

कोई पन्द्रह मिनट की लड़ाई में हवीवा के मान माथी मारे गए और
कोई दम नाकारा हो गए। हवीवा स्वयं बायाँ कंधा लटकाए अचरज में मर
बुझ देखता रहा।

दुर्गासिंह मय पाँचों मामियों के गून में लपपय जमीन पर अन्तिम माँसे
गिन रहा था।

हवीवा कंधा दबाए दुर्गासिंह के पाम आया और बोला, 'शाबाश बहा-
दुर, तुम्हारी जिन्दाशिली हमारे कबीले को याद रहेगी।'

फिर हवीवा अपने माथी से बोला, 'आरिफ, लान घागे की लच्छी
माना। इन बहादुर की कलाई पर लान घागा बांधा जाएगा। आज इन
घागे को बांधने के बाबिल दुश्मन मिला है।'

हवीवा ने मरते हुए दुर्गासिंह की कलाई पर लान घागा बांध दिया और

कहा, 'वहादुर दफ़ादार हम सिर्फ वहादुर की कलाई पर लाल धागा बाँधते हैं। तुम्हारी लाश वाइज्जत तुम्हारी चौकी पर भेज दी जाएगी।'

दुर्गासिंह ने धीमे स्वर में कहा, 'सरदार हवीवा खाँ, आपको याद है आपने सिद्दी के मेले में कहा था कि आप लोग वहादुर दुश्मन को इनाम भी देते हो। मैं तुमसे आज इनाम माँगना चाहता हूँ, सरदार। बोलो, दोगे मुझे इनाम ? मेरे पास वक्त बहुत कम है।'

हवीवा ने डबडबाई आँखों से देखा और कहा, 'हाँ, मैंने ये कहा था। बोलो क्या इनाम चाहते हो ?'

दुर्गासिंह बोला, 'ये दसों खच्चर मेरी चौकी पर लौटा देना।' और यह कहकर दुर्गासिंह का सर एक तरफ़ ढुलक गया।

हवीवा ने दुर्गासिंह के सर के कुछ बाल तेज़ धार वाले खंजर से काटे और अपनी जेब में रख लिए।

'तुम्हारी यादगार मेरे पास हमेशा रहेगी, वहादुर।' हवीवा बुदबुदाया। दूसरे दिन नम्बर पाँच पोस्ट पर दसों खच्चर वापस पहुँच गए थे। दसवें खच्चर पर दुर्गासिंह की लाश रखी थी जो एक सफ़ेद चादर से ढकी हुई थी। मेजर काक्रन ने कफ़न हटाया तो देखा कि मृत दुर्गासिंह की दाहिनी कलाई पर लाल धागा बाँधा हुआ था।

मेजर काक्रन ने अपना टोप उतार लिया। उसकी आँखों से आँसू दुर्गासिंह के मृत शरीर पर टपक पड़े।

हवीवा का बायाँ कंधा काफी घायल हो गया था। उसके दिल का इतना बड़ा नुकसान कभी नहीं हुआ था। असलम मर चुका था। छः और पुराने तजुर्वेकार लुटेरे खेत रहे। हवीवा ने वहीद खाँ के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'वहीदा, तुम अगर दफ़ादार पर बर्छी नहीं फेंकते तो यकीनन वह मुझ पर

गानिय हो जाता। तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करूं? पर बहीदा भाई, बेटों जो फेंकी गई वह उनसने हुए बेखबर दुश्मन पर ही फेंकी गई। यह बहादुरी की बान नहीं हुई। पर अगर तुम ये काम अंजाम नहीं करने तो हो सकता है आज हबीब खाँ भी नहीं बच पाता। दरदार दुर्गामिह की मूरत मेरे दिन पर नक्क हो गई है। जिन्दगी मे उस बहादुर को नहीं भूल पाऊँगा। और हाँ, तुम्हारा अहमान भी मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा।'

बहीदा मर झुका कर बोला, 'मरदार, आप गही रहने हैं। बाकिर बहादुर को जिम तरीके को अख्तियार करके मैंने मारा वह एक जर्मनाक वाकया ही कहा जाएगा क्योंकि वह उम वक्त आपसे दो-दो हाथ पर रहा था। पर मरदार की जिन्दगी को बचाना मेरा भी फज्र अब्दन था। और नड़ाई और मुहब्बत में कुछ भी जायज और नाजायज नहीं होता।'

हबीबा ने मर हिलाकर कहा, 'तुम ब्रजा कह रहे हो, बहीदा, मैं तुम्हारा हम्मेगा बजंदार रहूँगा।'

बहीदा ने बढ़कर हबीबा का हाथ चूम लिया। नुरे खाँ ने जब अपने बेटे को खून में लयपय देखा तो वह एक क्षण को स्तब्ध रह गया। फिर उसने पूरा बानाया मुना। हबीबा के पास आकर वह बड़े स्नेह में बोला, 'मुझे तुम पर नाज है हबीबा जो तुमने बहादुर दुश्मन की दृज्जत अफजाई की। तुम्हारा जो ये खून निकलना है वह रग साएगा बेटे। खून बहादुर का जेवर होता है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा बेटा हबीब खाँ हुदरत का जेवर पहन कर मेरे म्बख आया हो।'

नुरे खाँ ने हबीबा का माथा चूम लिया था। और फिर हरीम को बुलवाया गया और मरहम-मट्टी गुरु कर दी गई।

हबीबा के घायल होने की सहानी मुमुकजर्द बखीले में भी पहुँच गई। मरदार गुलाब खाँ ने आँगन में दूरका पीने बरत गुलफाम में कहा, 'बेटे गुलफाम, मुनने हैं नुरे खाँ का बेटा हबीब खाँ मरबारी रिमाने की भ्रदन में घायल हो गया है। मेरा मंशा है तुम उसे देख आओ।'

महजबो ने जब यह मुना तो मीना धरू कर के रह गया। उसकी आँखों के कटारें भर गए पर छलन नहीं पाए। वह अपने आँसू पी गई पर दिन में उठ रही बग़ावन को नहीं दबा मती। हबीबा को देखने को वह स्वय छटप-

पटाने लगी पर हया की वंदिश की हथकड़ी को वह नहीं तोड़ सकी ।

जब गुलफ़ाम चलने को तैयार हुआ था तब महजवीं ने धीमे स्वर में कहा था, 'भाई जान, उन्हें मेरा सलाम भी कह दीजिएगा और साथ ये भी कि मैं उनकी खैरियत की नमाज़ आज से पाँचों वक़्त अदा करूँगी।' गुलफ़ाम ने अपनी वहन के थरथराते ओठों पर खामोश मुहब्बत की फरियाद मचलते देखी । गुलफ़ाम भी सीने में दिल रखता था । उसने महजवीं के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'हौसला रखो महजवीं, अगर तुम्हारी हमदर्दी सच्ची होगी तो हवीव खाँ की ज़िन्दगी पर वह एक ढाल की तरह छाई रहेगी ।'

महजवीं की आँखों से दो मोती जैसे आँसू टपके जो ज़मीन पर गिर कर बिखर गए ।

गुलफ़ाम बोला, 'मैं हवीवा को यह भी बतलाऊँगा महजवीं कि तुमने उसकी खैरियत के लिए दो अनमोल आँसू भी नज़्र किए हैं ।'

फिर गुलफ़ाम घोड़े पर बैठकर चल दिया ।

हवीवा कंधे पर पट्टी बाँधे पेड़ के नीचे बैठा था । गुलफ़ाम को देखकर वह मुस्करा कर बोला, 'सलाम वालेकुम, गुलफ़ाम भाई । खैरियत तां है ?'

गुलफ़ाम घोड़े से उतरता हुआ बोला, 'वालेकुम अस्सलाम सरदार, आपने मेरा सवाल चुरा लिया ।'

हवीवा हँसा और उसने उठकर गुलफ़ाम से हाथ मिलाया ।

'ज्यादा चोट तो नहीं आई ?' गुलफ़ाम ने कहा ।

'ये चोट नहीं है गुलफ़ाम', हवीवा बोला, 'यह एक बहादुर दुश्मन की निशानी है जो मरते दम तक मेरे पास रहेगी । उसकी सूरत और कारनामे मुझे वचपन की तरह याद रहेंगे । हार-जीत तो ज़िन्दगी के दो अनमोल मौसम हैं गुलफ़ाम । असल चीज़ तो ये है कि हार हुई या जीत पर वो आई किस अदा के साथ । दफ़ादार दुर्गासिंह मरकर भी मुझसे जीता । मैं जिन्दा रह कर भी उससे हारा । उसकी हिम्मत और पानी के पाँच साथी हों तो वह पचास के मुकाविले में काफी होंगे ।'

गुलफ़ाम ने ग़ौर से हवीवा की ओर देखा और कहा, 'सरदार हवीव खाँ, मुझे नाज़ है कि मैं एक ऐसे दोस्त के सामने खड़ा हूँ जिसके दामन में बहादुरी के अलावा आला क़िरदार भी भरा हुआ है । दुश्मन की बहादुरी

की परग्य करने वाले बहुत कम जीहरी रह गए हैं आज ।' और गुलकाम ने हवीवा का दाहिना हाथ अपने मर मे लगा लिया । पाम बैठे मुखारिक खां मे हवीवा ने कहा, 'मुखारिक, अम्मी मे अन्दर जाकर कह दो कि हमारे दोस्त गुलकाम खां आए हैं । कुछ पाने-पीने का इन्तजाम कर दो ।'

मुखारिक के उठने ही गुलकाम ने सर झुकाकर धीमे से कहा, 'तुम्हारे घायल होने की खबर अन्नाजान ने सुनाई और ताकीद भी की जाकर खरिमत पूछी जाए । इसके अन्वावा चलने वक्त महजबी भी बहुत परेशान थी । उसकी अस्मन तुमने बचाई थी हवीवा खां । मेरी जिन्दगी भी तुम्हारे पाम रेहन रखी है ।'

हवीवा बोला, 'ऐसा मत बोना गुलकाम, वनां ये दुनिया वाले इन्मानियत और अहमान को भी बेवना शुरू कर देंगे । फर्ज को अहमान का जामा पहनाना फरान शराफत का तकाजा है । हकीकत ये है कि फर्ज इन्मान की एक फिनरत के अलावा और कुछ भी नहीं है ।'

गुलकाम बोला, 'अहमान को इन्सानी फर्ज मानने वाले बन्दे अब बहुत कम रह गए हैं । तुम जैसे बन्दे जो दो-चार नजर आने हैं वे बुदरत के गरूर के मानिद हैं ।'

हवीवा ने गुलकाम को गने मे लगा लिया । गुलकाम बोला, 'महजबी ने चलने वक्त दो आंसू जमीन पर टपकाए थे हवीवा खां । हमदर्दी की आलाद मुद्बवत होती है ऐसा हमारे बुजुर्ग कहने आए हैं । महजबी की इस खीराजे अकीदत को मैं तहे दिन मे कबूल करता हूँ ।'

हवीवा बोला, 'मेरा सलाम उन्द कहना गुलकाम । ये भी पहना कि मैं टीक हूँ और बितकुल टीक होने पर एक दिन अपने चचाजान सरदार गुलाय खां को आदाव अर्ज करने भी आऊंगा ।'

मुखारिक लौटकर दोनों को बुनाकर अदर ले गया । कयाय और बाकरखानी रोटी सामने रखे थे । गुलाय के शरवत की मुराही बगन मे रखायो ।

गुलकाम घाकर ही चुका था कि हवीवा के अन्वा सरदार सुरे खां ने धारने हुए अदर आ गए । सलाम दुभा के बाद सुरे खां ने गुलकाम के

पटाने लगी पर हया की बंदिश की हथकड़ी को वह नहीं तोड़ सकी ।

जब गुलफ़ाम चलने को तैयार हुआ था तब महजवीं ने धीमे स्वर में कहा था, 'भाई जान, उन्हें मेरा सलाम भी कह दीजिएगा और साथ ये भी कि मैं उनकी खैरियत की नमाज़ आज से पाँचों वक्त अदा करूँगी ।' गुलफ़ाम ने अपनी बहन के थरथराते ओठों पर खामोश मुहव्वत की फरियाद मचलते देखी । गुलफ़ाम भी सीने में दिल रखता था । उसने महजवीं के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'हौसला रखो महजवीं, अगर तुम्हारी हमदर्दी सच्ची होगी तो हवीव खाँ की जिन्दगी पर वह एक ढाल की तरह छाई रहेगी ।'

महजवीं की आँखों से दो मोती जैसे आँसू टपके जो ज़मीन पर गिर कर बिखर गए ।

गुलफ़ाम बोला, 'मैं हवीवा को यह भी बतलाऊँगा महजवीं कि तुमने उसकी खैरियत के लिए दो अनमोल आँसू भी नज़्र किए हैं ।'

फिर गुलफ़ाम घोड़े पर बैठकर चल दिया ।

हवीवा कंधे पर पट्टी बाँधे पेड़ के नीचे बैठा था । गुलफ़ाम को देखकर वह मुस्करा कर बोला, 'सलाम वालेकुम, गुलफ़ाम भाई । खैरियत तां है ?'

गुलफ़ाम घोड़े से उतरता हुआ बोला, 'वालेकुम अस्सलाम सरदार, आपने मेरा सवाल चुरा लिया ।'

हवीवा हँसा और उसने उठकर गुलफ़ाम से हाथ मिलाया ।

'ज्यादा चोट तो नहीं आई ?' गुलफ़ाम ने कहा ।

'ये चोट नहीं है गुलफ़ाम', हवीवा बोला, 'यह एक बहादुर दुश्मन की निशानी है जो मरते दम तक मेरे पास रहेगी । उसकी सूरत और कार नामे मुझे बचपन की तरह याद रहेंगे । हार-जीत तो जिन्दगी के दो अनमोल मौसम हैं गुलफ़ाम । असल चीज़ तो ये है कि हार हुई या जीत पर वो आई किस अदा के साथ । दफ़ादार दुर्गासिंह मरकर भी मुझसे जीता । मैं जिन्दा रह कर भी उससे हारा । उसकी हिम्मत और पानी के पाँच साथी हों तो वह पचास के मुकाबिले में काफी होंगे ।'

गुलफ़ाम ने ग़ौर से हवीवा की ओर देखा और कहा, 'सरदार हवीव खाँ, मुझे नाज़ है कि मैं एक ऐसे दोस्त के सामने खड़ा हूँ जिसके दामन में बहादुरी के अलावा आला क़िरदार भी भरा हुआ है । दुश्मन की बहादुरी

की परख करने वाले बहुत कम जोहरी रह गए हैं आज ।' और गुलकाम ने हबीबा का दाहिना हाथ अपने मर में लगा लिया । पान बँडे मुबारिक खाँ ने हबीबा ने कहा, 'मुबारिक, अम्मी ने अन्दर जाकर कह दो कि हमारे दोस्त गुलकाम खाँ आए हैं । कुछ घाने-पीने का इन्तजाम कर दो ।'

मुबारिक के उठने ही गुलकाम ने मर झुकाकर घीमे में कहा, 'तुम्हारे फायल होने की खबर अब्बाजान ने मुनाई और ताकीद भी की जाकर घेरिदत पूठी जाए । इसके अनावा चलते वक्त महजबी भी बहुत परेशान थी । उनकी अम्मन तुमने बचाई थी हबीबा खाँ । मेरी ज़िन्दगी भी तुम्हारे पान नेहन रखी है ।'

हबीबा बोला, 'ऐमा मत बोना गुलकाम, वना ये दुनिया वाले इन्सा-नियत और अहमान को भी वेबना शुरू कर देंगे । फर्ज की अहमान का जामा पहनाना फरत शराफत का तकाजा है । हकीकत ये है कि फर्ज इन्मान की एक फिनरत के अलावा और कुछ भी नहीं है ।'

गुलकाम बोला, 'अहमान को इन्सानी फर्ज मानने वाले बन्दे अब बहुत कम रह गए हैं । तुम जैसे बन्दे जो दो-चार नजर आते हैं वे कुदरत के गरूर के मानिद हैं ।'

हबीबा ने गुलकाम को गले में लगा लिया । गुलकाम बोला, 'महजबी ने चलने वक्त दो आँसू जमीन पर टपकाए थे हबीब खाँ । हमदर्दी की औरत मुह्यत होती है ऐमा हमारे बुजुर्ग कहने आए हैं । महजबी की इन औरतों अकीदन को मैं तहे दिन से कबूल करता हूँ ।'

हबीबा बोला, 'मेरा सलाम उन्हें कहना गुलकाम । ये भी कहना कि मैं टीक हूँ और बिल्कुल ठीक होने पर एक दिन अपने चवाजान सरदार गुलाब खाँ को आदाब अर्ज करने भी आऊँगा ।'

मुबारिक लौटकर दोनों को बुलाकर अदर ले गया । कवाब और बाकरखानी रोटी मामने रखे थे । गुलाब के शरबत की सुराही बगल में रखी थी ।

गुलकाम घाकर ही चुका था कि हबीबा के अब्बा सरदार तुरें खाँ गेंवारने हुए अंदर आ गए । सलाम दुआ के बाद तुरें खाँ ने गुलकाम के

कबीले की खैरियत पूछी और बोले, 'बेटे गुलफ़ाम, हवीवा को मैंने अपनी पगड़ी बाँध दी है ये तो तुम्हारे अब्बा को पता लग ही गया होगा। अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ। बुढ़ापे का आना ख़दा का वन्दे को याद दिलाना है कि अब कुछ वक्त इवादत में भी गुज़ार ले।'

गुलफ़ाम बोला, 'पर चचाजान, वुजुर्गी का सर पर साया ख़दा के रहम का असर रखता है। हवीव खाँ अभी ज़िन्दगी की चौखट तक नहीं आए हैं। आपके तजुर्वे, आपकी सलाह, आपकी दुआएँ—ये सब ही तो इनकी ज़िन्दगी को सँवारेंगे।'

सरदार तुरें खाँ सुनकर खुश हुए, 'तुम्हारी अक़ीदत और इज़्जत अफ़-जाई सुनकर अहसास होता है कि तुम्हारे अंदर सरदार गुलाब खाँ जैसे जाँवाज़ यूसुफ़ज़ई का खून बोल रहा है।'

इसके बाद ही सरदार तुरें खाँ अंदर चले गए। थोड़ी देर बैठकर गुलफ़ाम ने इजाज़त माँगी।

हवीवा उसे घर के बाहर तक छोड़ने आया और हाथ मिलाते वक्त बोला, 'चचाजान को मेरा आदाव अर्ज़ करना। महजवीं को तसल्ली दिलाना कि मैं ठीक हूँ। उन्हें ये भी बताना कि उनका खयाल मेरे लिए हिफ़ाजत का एक जिरह-बख़्तर है। जब तक उनका खयाल मुझे रहेगा किसी भी दुश्मन की गोली या तलवार मेरी जान नहीं ले सकेगी।'

हवीवा ने गुलफ़ाम से विदाई ली। बड़ी देर तक वह गुलफ़ाम के भागते हुए घोड़े को देखता रहा। फिर उसने आसमान की ओर देखा। उसे महजवीं का चाँद-सा मुखड़ा आसमान के दामन में नज़र आया। वह मुस्कराया और बुदबुदाया, 'महजवीं, तुम्हारी आँखों में मेरे लिए आँसू आए थे। उन दो आँसुओं की क़ीमत में अदा ज़रूर करूँगा, महजवीं, अदा ज़रूर करूँगा।'

मेजर काफ़न ने दुर्गासिंह की चिन्ता करने समय अपने निस्तीन में दो पावर किए थे। फिर दौन पीगकर बोला था, 'दुर्गासिंह तुम घेनिमात बहादुर थे। मुझे खुशी से हुई कि तुम्हारी बहादुरी को दुग्मन तर ने तस्तीन लिया। मैं इस हवीबा में तुम्हारा बदना नूंगा।' और मेजर काफ़न ने दौन पीगकर मुट्टी बाँधने हुए ऊपर देखा था।

'मैं इस हवीबा को पकड़ूंगा, जिन्दा या मुर्दा। मैं इन हवीबा को मैदान में गिरानार करूँगा।' और मेजर काफ़न ने अपने निस्तीन को घूम लिया। गन को अफ़मर मैम में मेजर काफ़न ज़ाम पर ज़ाम ग्यानी करे दे रहा था। बार-बार वह दुर्गासिंह और हवीबा का ही नाम ले रहा था। काफ़न को नगा होने लगा था। मात-आठ पेग के बाद वह तड़खड़ाता हुआ उठा और बोला, 'मैं अपने कन्धे पर लगे इन ताज की कमम छाकर कहता हूँ कि मैं हवीबा को या तो जिन्दा पकड़ूंगा या मैदान में मारूँगा।'

कुछ अफ़मरों ने उसे मँभाना। उन अफ़मरों में कैप्टिन जेम्स भी था। मेजर काफ़न के कन्धे पर हाथ रखकर वह बोला, 'मेजर काफ़न, सर, क्या आपने हवीबा को देखा है?'

घौंकर काफ़न बोला, 'नहीं। पर जल्दी ही देखूँगा।' जेम्स हँसकर बोला, 'जानका दफ़ादार दुर्गासिंह एक बहादुर लडाका था ये मैं कबूल करता हूँ। हवीबा बहादुरी का मँजा हुआ जोहरी है। उसने दगो छच्चर और दक्राशर की लाश इसीलिए थापस की थी शायद। मैंने हवीबा को देखा है, उममें हाथ मिलाया है, बातें की हैं। यकीन मानिए, हवीबा बहादुर लडाकू के अलावा एक 'जैन्टलमैन' भी है।' काफ़न ने नशे की झुनक में उसे धूरकर देखा। जेम्स आँवें झपककर मुस्कराया और बोला, 'यस सर, हवीबा एक बढिया इन्सान भी है। वह तरह-तरह से बार करता है। हथियार से भी और शराफत से भी। उसकी शराफत का बार बहुत गहरा पाव करता है, ऐमा मेरा तजुर्वा है।'

काफ़न सर हिलाता हुआ बोला, 'ये भी देखूँगा जेम्स, ये भी देखूँगा।' दूसरे दिन अफ़मर मैम की यह बात सारे पेशावर में फैल गई। मेजर काफ़न ने अर्जुन जैसी प्रतिज्ञा की थी जो आग की तरह फैल गई।

मैम से जबर खाँ उमी दिन छट्टी लेकर गया था। उसी ने घायल

हवीवा को मेजर काक्रन की प्रतिज्ञा के बारे में कहा ।

हवीवा बोला, 'मालूम पड़ता है कि अब की बार हिन्दुस्तान से वाकई बहादुरों का रिसाला आया है । जवर खाँ चचा, मुझे ठीक हो जाने पर इस साहब को कभी दिखाना । कम से कम अपने इस अजीब दुश्मन की शकल तो दिल में उतर ही जानी चाहिए ।'

और बीस दिन बाद हवीवा करीब-करीब बिल्कुल ही चंगा हो गया था । उमे दो वायदे निभाने थे । एक तो महजवीं के पास जाना था और दूसरे जवर खाँ के पास जाकर मेजर काक्रन को देखना था ।

सबसे पहले हवीवा ने काक्रन को देखना चाहा । और दूसरे ही दिन उसने जवर खाँ को ख़बर पहुँचवा दी । जवर खाँ हवीवा को 'मैस' के मसालची के भेप में ले गया था । जब दौर पर दौर चल रहे थे तो जवर खाँ ने मौका देखकर हवीवा को मेजर काक्रन को दूर से दिखलाया था ।

मेजर काक्रन छः फुटा जवान था । बड़ी-बड़ी भूरी मूछें और गहरी नीली आँखें हवीवा को भली लगीं । उसकी पेशानी पर चोट का निशान था जिसके बारे में सब अफ़सर जानते थे कि चोट उसे नेजे से चीते का शिकार करते वक्त लगी थी । हवीवा उसे दूर से आँखों ही आँखों में निगलता रहा ।

'चे खुश, बहादुर दफ़ादार का अफ़सर भी उसी तरह सजीला लगता है ।' हवीवा बोला और फिर चल दिया था ।

कुछ ही दिन बाद पेशावर के नजदीक हिन्दू फ़कीर सखी सरवर की यादगार में झण्डा मेला लगता था । हिन्दू और मुसलमान दोनों ही आते थे । कुछ नये-नये आए अंग्रेज अफ़सर भी अपनी मेम को लेकर मेला देखने आते थे । चारों तरफ़ हाट की दुकानें, रहट, चक्कर, फल और मिठाइयों की दुकानें लगी थीं । हवीवा भी अपने सात-आठ साथियों के साथ सखी सरवर की समाधि पर मन्नत माँगने आया था । लौटते वक्त वह अपने साथियों के साथ मिठाई और चाट खाकर खुश हो रहा था कि सहसा उसे सामने से मेजर काक्रन और उसकी मेम आते दिखाई पड़ गए । हवीवा ने चाट का पत्ता छोड़ दिया और अपने साथियों को लेकर बड़ी तेज़ी से बढ़ा और अंग्रेज जोड़े को घेर लिया । काक्रन की कमर में उसका रिवाल्वर लटक रहा था ।

हवीबा ने चीने की फूर्ती में काफ़न का रिवाल्वर निकाल कर अपने पन्डे में कर लिया। मेजर काफ़न और उमती में मगने में आ गए।

'गनाम साह्य,' हवीबा बोला, 'मुझे सूब पहचान लीजिए। मेरा ही नाम हवीबा है।'

गडा-गडा हवीबा मुक्कराने लगा। काफ़न उग बसत मात-प्राठ पठानों में धिग या। उमती में म की जुवान सूब गई। उनने मून रया या कि गर-हदी पठान में सो को पकड कर ले जावे है और फिर भारी रकम लेकर ही छाड़ने है।

हवीबा ने काफ़न के रिवाल्वर में छोटी कारतूम निकाल लिए और रिवाल्वर मेजर वानन की ओर धापन बटाता हुआ बोला, 'पबगए मत साह्य, मैं बहादुरों की कद्र करता हूँ। आपका मातहन दहादार दुर्गागिह भी एक ऐसा बहादुर या जिसकी मूरत मेरे दिन पर हमेशा नभग रहेगी। मुना है आप भी बहादुर हैं। आपको हवीबा को जिन्दा या मरा पाने की बड़ी तमन्ना है। आपको बहादुर गमन कर ही मैं आपका हथियार धापन कर रहा हूँ। पर ये छः कारतूम रगे ले रहा हूँ। इन्गाअन्नाह, जल्द ही मैदान में आपके इन्ही छः कारतूमों में से किसी एक में आपको मारूँगा। सनाम !'

और आनन-फानन हवीबा ने मेजर काफ़न के हाथ में उमका रिवाल्वर पकड़ा दिया और छः कारतूम मुट्टी में बन्द करके अपने माथियों के माथ भौंड में रखा गया।

मेजर काफ़न हनप्रभ-मा देवता रहा। उमती पत्नी की जान में जान आई। काफ़न ने रिवाल्वर पेटो में रया और धीरे से बुदबुदाया —

'हवीबा ने मुझे निमन्नग दिया है, यून्टे। मैं उमती से दावन बबूल करता हूँ।'

और मन में बेचैन तूफान बसाए काफ़न लौट आया। दूसरे दिन उमने अपने स्वबाहुन के पुनीदा गवार लिए और वह पागल प्रेमी की तरह 'हवीबा, हवीबा, बिधर है हवीबा !' चिन्लाता हुआ दरें के आम-पाम ग्राव छानने लगा।

तीसरे दिन मुगविर ने खबर दी कि हवीबा अपने माथियों के माथ दरें

के दक्षिण में ताक लगाए बैठा है। शायद पल्टन की रसद का खच्चरों का काफ़िला आ रहा है। काक्रन सुनते ही अपने तीस सवारों के साथ उधर मुड़ गया। जब वह दर्रे से उतर रहा था तभी हवीवा के निगहवान ने राइफल उठाकर हवीवा को आगाह किया। हवीवा के साथ करीब बीस साथी थे। उसने फ़ौरन ही मुठभेड़ का इरादा कर लिया। हवीवा की बाँह अभी भी कसकती थी, पर वह बड़े जीवट का आदमी था। वह जमा रहा।

मेजर काक्रन की टोली पर पहला फायर अफ़जल ने किया था। गोली सवार के घोड़े की अगली टाँग पर लगी थी जिससे घोड़ा और सवार दोनों ही गिर पड़े थे। मेजर काक्रन सुलझा हुआ लड़ाकू था। उसने फ़ौरन अपनी टोली को दो हिस्सों में बाँट दिया और घेरा बनाते हुए आगे बढ़ता रहा। कुछ ही मिनट बाद गोलियों की सनसनाहट से वादी गूँजने लगी। ऐसा लगता था मानो मौत भनभना कर अपना गीत गाने लगी हो। और फिर मेजर काक्रन के रिसाले की टुकड़ी ने धावा बोल दिया।

हवीवा के चार साथी काम आए और उसका दोस्त अफ़जल उसके सामने ही घूम कर गिरा और हमेशा को शान्त हो गया। चारों ओर पत्थर के टुकड़े उड़ रहे थे। धूल उड़ने से ठीक दिखाई भी नहीं दे रहा था। हवीवा ने जल्दी से अपने दोस्त अफ़जल की लाश को घोड़े पर डाला और लम्बी सीटी बजाई। उसके साथी इशारा समझ गए थे। उनका पलड़ा भारी नहीं था शायद। इसलिए सबको चारों दिशा में फूट कर शेख इमामदीन के मज़ार के पास वाले नाले में मिलना था। गोलियों की चौधार सावन की वारिश की तरह तेज़ हो गई और फिर घोड़ों की भाग-दौड़ चारों तरफ़ घबराहट फैलती हुई शुरू हो गई।

मेजर काक्रन को ऐसा महसूस हुआ कि उसकी बाँह में किसी ने बर्फ़ जैसी ठंडी कील घुसा दी हो। इसके बाद ही उसकी बाँह सुन्न पड़ने लगी। काक्रन समझ गया कि गोली ने उसकी बाँह की हड्डी को तोड़ डाला है। बाँह पर एक लाल रंग का ख़ामोश सोता-सा फूटने लगा। खून तेज़ी से बहने लगा और तभी उसका घोड़ा चमक गया। बेहाल से काक्रन को लेकर घोड़ा न जाने किस ओर भाग रहा था। काक्रन ने चिल्लाने की कोशिश की पर उसकी आवाज़ न जाने क्यों इतनी कमजोर हो गई थी कि वह ख़ुद भी

उमने नहीं मनु सका । काफ़न को अब चक्कर-गा आने लगा था । उमने इतना होंग था कि वह पहाड़ की उत्तरार्द्ध पर अब एक मैदान में जा रहा था । सभी घोड़े को ठोकुर लगी और काफ़न में बल नहीं सका । वह घड़ाम से गिर पड़ा और उमका मर एक पेड़ में टकराया । काफ़न को एक बहुत बड़ा काना मूरज नउर आया जो उमने मुँह फाड़े निगलने को बद्ध रहा था । इमके बाद काफ़न को नहीं मानूम हुआ क्या हुआ । उसका थोड़ा न जाने बिग्न मजिल की ओर भागा जा रहा था ।

जब काफ़न ने आँख खोली तो उसे लगा जैसे कोई उसे पानी पिना रहा है । उसने ठीक ही सोचा था । वह किसी कबीले के पास जाने कुएँ के पास गिरा था और जो उसे पानी पिनाकर उसके मर पर हाथ फेर रहा था वह कोई औरत थी । उमरी जयान काफ़न नहीं ममड पाया पर उमने पीड़ा के भार से दबी पनको को उठाकर उमने देखा । कोई बूढ़ी औरत थी । उमका हाथ बड़े स्नेह में काफ़न के मर पर फिर रहा था । काफ़न को लगा जैसे पवित्र माँ मरियम उमने दुलार कर रही हो ।

बुढ़िया मुग़रा श्रानम थी । हवीवा की बूढ़ी माँ ।

'तुम घायल हो मेरे बच्चे,' उमने काफ़न से कहा, 'बलो, मेरे यहाँ चलो । तुम्हें इम्दाद की सख्त जरूरत है । और काफ़न को मुग़रा ने आगानी से उठा लिया और कबीले ले पहुँची ।

गरदार तुरे यों ने सबसे पहले अपनी बीबी को एक जयान आदमी को डोने देगा । उमने फौरन उठकर दो आदमियों को भेजा । मुग़रा बोली, 'इम हिफ़ाजत में ले चलो । ये घायल है ।'

दोनों पठानों ने काफ़न को जब उठाया तो वे बोले, 'अम्मी जान, ये तो अंग्रेज है ।'

मुग़रा फड़क कर बोली, 'ये हमारे कबीले का मेहमान है समझे ?'

दोनों पठान सहम गए । काफ़न को उठाकर वे सरदार तुरे यों के पास से आए । मुग़रा पीछे-पीछे चल रही थी । तुरे यों ने भारी धावाज से कहा, 'कौन है यह ।'

इमने पहले कि पठान बोलते मुग़रा बोली, 'किसी बूढ़ी औरत की गोद की उम्मीद है । इम वस्त में इम बच्चे को अपने कबीले के मेहमान की

द्वैसियत से लाई हूँ ।’

तुरें खाँ मूँछों पर ताव लेकर बोला, ‘वीवी, तुम्हारा मेहमान है तो हम सब का भी मेहमान है ।’ और फिर एक पठान से बोला, ‘जल्दी से हकीम साहब को बुला लाओ । पानी गर्म कराओ वेगम, इसके गोली लगी है ।’

देखते ही देखते पेड़ के नीचे एक भगौने में खौलता पानी आ गया । हकीम के साथ जर्हाह भी अपनी जड़ी-बूटी का वक्सा लेकर आया था । हकीम ने एक दवा रुमाल पर लगा कर काक्रन को सुँघाई जिसके सूँघते ही उस पर तारों भरी रात के नजारे छाने लगे । थोड़ी ही देर में वह एक जिन्दा लाश भर रह गया । कोई पन्द्रह मिनट लगे थे उस जर्हाह को गोली निकालने में । मलहम-पट्टी करके हाथ बाँध दिया था । हल्दी, जाफ़रान और अंगूर की दो-आतशी शराव मिला गर्म-गर्म दूध जब काक्रन को पिलाया गया तो उसकी चेतना पर छाए काले बादल छूटने लगे । उसे उम्मीद का एक जुगनू नजर आया जो सूर्य की भाँति सहसा बढ़ने लगा और आशा का प्रकाश काक्रन की आँखों के सामने फैलने लगा ।

काक्रन ने देखा कि उसके चारों ओर क्रूर निगाह वाले पठान बैठे हैं । हवीवा के बूढ़े बाप ने उसका कंधा थपथपाया और मुस्करा कर बोला, ‘डरो मत साहब । तुम हमारे खास मेहमान हो । इस कवीले के सरदार की माँ के मेहमान हो । इस कवीले के बुजुर्ग सरदार की वीवी के मेहमान हो ।’

तुरें खाँ यह कह कर ही चुका था कि सामने से एक धूल का बादल दिखाई देने लगा । सवने उधर देखा । सरदार तुरें खाँ समझ गया कि हवीवा वापस आ रहा है । धूल का आवरण झीना हो चुका था । सवने ही देखा कि हवीवा एक लाश को अपने घोड़े पर रखे था । उसके पीछे और साथी भी थे । हवीवा की आँखें बंद थीं । उसके दोस्त असलम और फरीदा पहले ही मारे गए थे । सरदार ने देखा कि हवीवा को अकेलापन-सा

की चौखट पार करती हुई कटक कर बोली, 'इसे मैं सार्द कबीले में। और यह मेरे घर का ग्राम मेहमान है।'

हबीबा का मुँह आश्चर्य से गुला रह गया। उमने अपने अग्र्या की तरफ बाँधों से ही अपना ग्रामोन्ग नवान किया। तुरें गौ ने मुन्करा कर मर हिला दिया।

हबीबा ने आम्नीन के कोने में अपनी आँख के आँसू पोंछे। फिर गाधियों में बोला —

'अग्रजन को दखनाने की तैयारी करो। हमके बाद रात को कबीले के मेहमान की दासत होगी। ये अग्रज अपनर हमारे ग्रानदान का ग्राम मेहमान है।'

हबीबा की माँ ने हबीबा को बड़े गम्पर में देखा और फिर अदर चली गई।

काफन ने जब हबीबा को देखा तो उमने देवता कूच कर गा। वह अर ममल घुटा था कि वह अपने ग्राम दुश्मन हबीबा के कबीले में चला है। वह निराश हो घुटा था पर जब हबीबा ने आकर उमने को पर हाथ रख कर कहा, 'मिजर माहब आप हमारे मेहमान है। यहाँ कीर-यन हमारा फजें बन गया है। आप जब तक ठीक नहीं हो जाते तब तक कबीले में दोस्त की तरफ रहेंगे। ठीक होने के बाद हम यहाँ लौटेंगे। गीचे की मरहद के पार छोड़ आँगे। याद रगिण, मरहद : 1 : 2 : 3 : 4 : 5 : 6 : 7 : 8 : 9 : 10 : 11 : 12 : 13 : 14 : 15 : 16 : 17 : 18 : 19 : 20 : 21 : 22 : 23 : 24 : 25 : 26 : 27 : 28 : 29 : 30 : 31 : 32 : 33 : 34 : 35 : 36 : 37 : 38 : 39 : 40 : 41 : 42 : 43 : 44 : 45 : 46 : 47 : 48 : 49 : 50 : 51 : 52 : 53 : 54 : 55 : 56 : 57 : 58 : 59 : 60 : 61 : 62 : 63 : 64 : 65 : 66 : 67 : 68 : 69 : 70 : 71 : 72 : 73 : 74 : 75 : 76 : 77 : 78 : 79 : 80 : 81 : 82 : 83 : 84 : 85 : 86 : 87 : 88 : 89 : 90 : 91 : 92 : 93 : 94 : 95 : 96 : 97 : 98 : 99 : 100 : 101 : 102 : 103 : 104 : 105 : 106 : 107 : 108 : 109 : 110 : 111 : 112 : 113 : 114 : 115 : 116 : 117 : 118 : 119 : 120 : 121 : 122 : 123 : 124 : 125 : 126 : 127 : 128 : 129 : 130 : 131 : 132 : 133 : 134 : 135 : 136 : 137 : 138 : 139 : 140 : 141 : 142 : 143 : 144 : 145 : 146 : 147 : 148 : 149 : 150 : 151 : 152 : 153 : 154 : 155 : 156 : 157 : 158 : 159 : 160 : 161 : 162 : 163 : 164 : 165 : 166 : 167 : 168 : 169 : 170 : 171 : 172 : 173 : 174 : 175 : 176 : 177 : 178 : 179 : 180 : 181 : 182 : 183 : 184 : 185 : 186 : 187 : 188 : 189 : 190 : 191 : 192 : 193 : 194 : 195 : 196 : 197 : 198 : 199 : 200 : 201 : 202 : 203 : 204 : 205 : 206 : 207 : 208 : 209 : 210 : 211 : 212 : 213 : 214 : 215 : 216 : 217 : 218 : 219 : 220 : 221 : 222 : 223 : 224 : 225 : 226 : 227 : 228 : 229 : 230 : 231 : 232 : 233 : 234 : 235 : 236 : 237 : 238 : 239 : 240 : 241 : 242 : 243 : 244 : 245 : 246 : 247 : 248 : 249 : 250 : 251 : 252 : 253 : 254 : 255 : 256 : 257 : 258 : 259 : 260 : 261 : 262 : 263 : 264 : 265 : 266 : 267 : 268 : 269 : 270 : 271 : 272 : 273 : 274 : 275 : 276 : 277 : 278 : 279 : 280 : 281 : 282 : 283 : 284 : 285 : 286 : 287 : 288 : 289 : 290 : 291 : 292 : 293 : 294 : 295 : 296 : 297 : 298 : 299 : 300 : 301 : 302 : 303 : 304 : 305 : 306 : 307 : 308 : 309 : 310 : 311 : 312 : 313 : 314 : 315 : 316 : 317 : 318 : 319 : 320 : 321 : 322 : 323 : 324 : 325 : 326 : 327 : 328 : 329 : 330 : 331 : 332 : 333 : 334 : 335 : 336 : 337 : 338 : 339 : 340 : 341 : 342 : 343 : 344 : 345 : 346 : 347 : 348 : 349 : 350 : 351 : 352 : 353 : 354 : 355 : 356 : 357 : 358 : 359 : 360 : 361 : 362 : 363 : 364 : 365 : 366 : 367 : 368 : 369 : 370 : 371 : 372 : 373 : 374 : 375 : 376 : 377 : 378 : 379 : 380 : 381 : 382 : 383 : 384 : 385 : 386 : 387 : 388 : 389 : 390 : 391 : 392 : 393 : 394 : 395 : 396 : 397 : 398 : 399 : 400 : 401 : 402 : 403 : 404 : 405 : 406 : 407 : 408 : 409 : 410 : 411 : 412 : 413 : 414 : 415 : 416 : 417 : 418 : 419 : 420 : 421 : 422 : 423 : 424 : 425 : 426 : 427 : 428 : 429 : 430 : 431 : 432 : 433 : 434 : 435 : 436 : 437 : 438 : 439 : 440 : 441 : 442 : 443 : 444 : 445 : 446 : 447 : 448 : 449 : 450 : 451 : 452 : 453 : 454 : 455 : 456 : 457 : 458 : 459 : 460 : 461 : 462 : 463 : 464 : 465 : 466 : 467 : 468 : 469 : 470 : 471 : 472 : 473 : 474 : 475 : 476 : 477 : 478 : 479 : 480 : 481 : 482 : 483 : 484 : 485 : 486 : 487 : 488 : 489 : 490 : 491 : 492 : 493 : 494 : 495 : 496 : 497 : 498 : 499 : 500 : 501 : 502 : 503 : 504 : 505 : 506 : 507 : 508 : 509 : 510 : 511 : 512 : 513 : 514 : 515 : 516 : 517 : 518 : 519 : 520 : 521 : 522 : 523 : 524 : 525 : 526 : 527 : 528 : 529 : 530 : 531 : 532 : 533 : 534 : 535 : 536 : 537 : 538 : 539 : 540 : 541 : 542 : 543 : 544 : 545 : 546 : 547 : 548 : 549 : 550 : 551 : 552 : 553 : 554 : 555 : 556 : 557 : 558 : 559 : 560 : 561 : 562 : 563 : 564 : 565 : 566 : 567 : 568 : 569 : 570 : 571 : 572 : 573 : 574 : 575 : 576 : 577 : 578 : 579 : 580 : 581 : 582 : 583 : 584 : 585 : 586 : 587 : 588 : 589 : 590 : 591 : 592 : 593 : 594 : 595 : 596 : 597 : 598 : 599 : 600 : 601 : 602 : 603 : 604 : 605 : 606 : 607 : 608 : 609 : 610 : 611 : 612 : 613 : 614 : 615 : 616 : 617 : 618 : 619 : 620 : 621 : 622 : 623 : 624 : 625 : 626 : 627 : 628 : 629 : 630 : 631 : 632 : 633 : 634 : 635 : 636 : 637 : 638 : 639 : 640 : 641 : 642 : 643 : 644 : 645 : 646 : 647 : 648 : 649 : 650 : 651 : 652 : 653 : 654 : 655 : 656 : 657 : 658 : 659 : 660 : 661 : 662 : 663 : 664 : 665 : 666 : 667 : 668 : 669 : 670 : 671 : 672 : 673 : 674 : 675 : 676 : 677 : 678 : 679 : 680 : 681 : 682 : 683 : 684 : 685 : 686 : 687 : 688 : 689 : 690 : 691 : 692 : 693 : 694 : 695 : 696 : 697 : 698 : 699 : 700 : 701 : 702 : 703 : 704 : 705 : 706 : 707 : 708 : 709 : 710 : 711 : 712 : 713 : 714 : 715 : 716 : 717 : 718 : 719 : 720 : 721 : 722 : 723 : 724 : 725 : 726 : 727 : 728 : 729 : 730 : 731 : 732 : 733 : 734 : 735 : 736 : 737 : 738 : 739 : 740 : 741 : 742 : 743 : 744 : 745 : 746 : 747 : 748 : 749 : 750 : 751 : 752 : 753 : 754 : 755 : 756 : 757 : 758 : 759 : 760 : 761 : 762 : 763 : 764 : 765 : 766 : 767 : 768 : 769 : 770 : 771 : 772 : 773 : 774 : 775 : 776 : 777 : 778 : 779 : 780 : 781 : 782 : 783 : 784 : 785 : 786 : 787 : 788 : 789 : 790 : 791 : 792 : 793 : 794 : 795 : 796 : 797 : 798 : 799 : 800 : 801 : 802 : 803 : 804 : 805 : 806 : 807 : 808 : 809 : 810 : 811 : 812 : 813 : 814 : 815 : 816 : 817 : 818 : 819 : 820 : 821 : 822 : 823 : 824 : 825 : 826 : 827 : 828 : 829 : 830 : 831 : 832 : 833 : 834 : 835 : 836 : 837 : 838 : 839 : 840 : 841 : 842 : 843 : 844 : 845 : 846 : 847 : 848 : 849 : 850 : 851 : 852 : 853 : 854 : 855 : 856 : 857 : 858 : 859 : 860 : 861 : 862 : 863 : 864 : 865 : 866 : 867 : 868 : 869 : 870 : 871 : 872 : 873 : 874 : 875 : 876 : 877 : 878 : 879 : 880 : 881 : 882 : 883 : 884 : 885 : 886 : 887 : 888 : 889 : 890 : 891 : 892 : 893 : 894 : 895 : 896 : 897 : 898 : 899 : 900 : 901 : 902 : 903 : 904 : 905 : 906 : 907 : 908 : 909 : 910 : 911 : 912 : 913 : 914 : 915 : 916 : 917 : 918 : 919 : 920 : 921 : 922 : 923 : 924 : 925 : 926 : 927 : 928 : 929 : 930 : 931 : 932 : 933 : 934 : 935 : 936 : 937 : 938 : 939 : 940 : 941 : 942 : 943 : 944 : 945 : 946 : 947 : 948 : 949 : 950 : 951 : 952 : 953 : 954 : 955 : 956 : 957 : 958 : 959 : 960 : 961 : 962 : 963 : 964 : 965 : 966 : 967 : 968 : 969 : 970 : 971 : 972 : 973 : 974 : 975 : 976 : 977 : 978 : 979 : 980 : 981 : 982 : 983 : 984 : 985 : 986 : 987 : 988 : 989 : 990 : 991 : 992 : 993 : 994 : 995 : 996 : 997 : 998 : 999 : 1000

काफन आश्चर्य में देखता रहा। उमने कहा कि 'यहाँ तक नहीं हो रहा था।

अपजन को जब बस में उतार कर 'यहाँ तक नहीं हो रहा था' की आँखें उमने उमने घुटी थी। मय में पलने मुठ्ठी भर यहाँ तक नहीं हो रहा था' की आँखें उमने उमने घुटी की मिठ्ठी में बन्द कर दिया था।

ग्राम की ली अपने गम पर 'यहाँ तक नहीं हो रहा था' की आँखें उमने उमने घुटी पाग वाले मँशन 'यहाँ तक नहीं हो रहा था' की आँखें उमने उमने घुटी हबीबा के बगल में बैठे हुए 'यहाँ तक नहीं हो रहा था' की आँखें उमने उमने घुटी हबीबा ने मेहमान 'यहाँ तक नहीं हो रहा था' की आँखें उमने उमने घुटी

कीजिए। एक कमी के लिए माफ़ी चाहता हूँ। आज गाना-बजाना न हो सका। मेरा बचपन का दोस्त अफ़ज़ल आज आपके दस्ते के साथ मुठभेड़ में अल्लाह को प्यारा हो गया है।'

मेजर काफ़न हथीवा की ओर टकटकी बाँधे देखता रहा और बोला, 'सरदार हथीवा खाँ, मैंने गुना ही गुना था कि पठान मैदान में घोलेबाज दुपगन और अपने घर पर मेहरवान दोस्त होता है। मैं आपको ही नहीं आपके पूरे कबीले को सलाम करता हूँ। आप लोग बहादुर हैं, ख़ान। ये मैं तस्लीम करता हूँ।'

और फिर मेजर ने भुने हुए बकरे को छरी से काटना शुरू कर दिया। उम्र वक्त मेजर काफ़न को ऐसा लगा जैसे वह अपने दोस्तों के साथ बैठा हो। हँसी-मजाक भी हुआ पर कुछ दवा-सा हुआ। मेजरवान का जिगरी-दोस्त जो आज मारा गया था।

काफ़न जल्दी ही माफ़ी माँग कर उठ खड़ा हुआ था। वह जानता था कि माहौल के प्याले में राम और खुशी की गरारव सिर्फ़ उसकी बजह से उसके मेजरवान मिला रहे हैं।

उधर जब सवाइन एकट्ठा हुआ तो तीन सवारों की लाशें पड़ी हुई मिली थीं पर कहीं भी न मेजर काफ़न का पता था और न ही उसके घोड़े का। रिसालदार भगवानसिंह ने ब्रागडोर सँभाली और फिर आसपास मेजर काफ़न को ढूँढ़ते रहे। करीब दो घंटे बाद रिसाले की टुकड़ी सम्भीर सोच में डूबी हुई परेषान लौट पड़ी।

वापस आकर जब काफ़न के गुम के होने की रिपोर्ट ऊपर पहुँची तो एक गमगीन सन्नाटा छा गया था। काफ़न की बीबी यूरेटा दहाड़ मार-मार कर रो रही थी। उसका छोटा लड़का डैनियल हैरत से विलम्बती हुई अपनी माँ को देख रहा था।

सरकारी तबका महुरे सोच में पड़ गया था। काफ़न मर गया या जिन्दा है, सब गहरी अटकल लगा रहे थे। यूरेटा को तसल्ली दिलाते हुए कैप्टन जेम्स ने कहा था, 'मेरा दिल गवाही देता है कि मेजर काफ़न ठीक-ठाक होंगे। आप धबराएँ मत। कल से चार दस्ते उनकी तलाश में निकल रहे हैं।'

पेगावर मे जत्र कर्नन टीन ने यह मुना तो यह बौयना गया । उनी के हृदय मे लेपिटनेट कर्नन बर्दे के बमान मे दो गवार और चार हन्वी पठाठी तौरों के साथ एक जबरदस्त अभिमान शुरू हो गया था । मेजर काकन गानिवन हबीबा के शगुन में ही है । ऐसा मबरका अनुमान था । निहाया आवाज उठी, 'हबीबा का पता लगाओ । कात्रन वहाँ मिलेगा ।'

भारी इनाम के लालच मे आमनाम के मुग्रबिर फूटने लगे थे ।

उधर चौथे दिन कात्रन को काफी आराम महसूस हुआ । उमरा दर्द बन्द हो गया था । हाथ ही हथी को जराह ने बैठा दिया था और जड़ी-बूटी की पुनर्दिम बांध दी थी । हबीबा रोज ही नाम को मिनता था । उनके मुग्रबिर अंग्रेजों की तरफ की गवर्ने रोड दे रहे थे । जय करीम ग्रा बैंग यह गबर लाग था कि मेजर काकन की बीबी उनके श्रम में बूगार में पड़ी है और उमरा पांच मान का बच्चा कुम्हला गया है तो हबीबा के दिल में एक टुक उठी । उनी नाम यह काकन के कंधे पर हाथ रखकर बोला, 'माह्व, आपका साथ अभी हरा है । आपके टाइटर्स का इलाज और है हमारे जराह का इलाज और है । यकीन मानिए हमारी दवा से आप बिल्वून ठीक हो जाएंगे । हाँ, अभी दग-शरह दिन धीरे लगेगे ।'

फिर हबीबा ने उमरी आँगों में आँसू डालने हुए कहा, 'गबर आई है कि आपकी मेम माह्व गानिवन आपको मरा हुआ ममत रही है । वे बीमार पट गई है । आपका मामूम बच्चा भी परेशान है । आप चाहें तो एक घत मेम माह्व के नाम दे दें । घत पहुँचने से परेशानी खत्म हो जाएगी । पर याद रखिए, आप दग बचन हमारे दोस्त और मेहमान की हैमियन मे रह रहे हैं । घत में कोई बात घोडे की नहीं होगी, ऐसा मैं कयाम करता हूँ ।'

मेजर काकन स्वयं सूरेटा और हैमियन के बारे में सोच कर दुनी हो रहा था । हबीबा के कहने पर मेजर काकन की आँगे नम हो गई और वह बोला, 'घान, आप एक यहादुर क्रिम के चिराग हैं । मैं भी अंग्रेज क्रिम का हूँ और यकीन मानिए आपके साथ घोडा परना अपनी क्रिम को बदनाम करने के बराबर होगा । अगर मेरा घत पहुँचवा सकें तो मैं आपका मगरूर हूँगा ।'

मेजर काकन ने गून लियकर दिया था । उमने निगा क

यूरेटा, मैं ज़िन्दा हूँ। सिर्फ़ घायल हूँ पर दवा-दारू ठीक होने के कारण मेरा घाव तेज़ी से भर रहा है। दोस्तों के बीच हूँ। इस ख़त को जो ला रहा है मेरा दोस्त है। कहीं जल्दवाज़ी से कुछ ग़लत काम मत कर बैठना वर्ना मैं फिर वापस नहीं आ सकूंगा। यकीन मानो मैं बहुत जल्द आ रहा हूँ। डैनियल को अनगित प्यार। तुम्हें बहुत-बहुत प्यार। तुम्हारा— साइमन'।

ख़त को लेकर हवीवा मुस्कराया और फिर सर हिलाकर चला गया।

हवीवा अपने चार साथियों के साथ भेड़ चराने वालों का लिवासा पहने निकला था। वह सीधा अफ़सर मैस में पहुँचा और जबर खाँ से मिला। जबर खाँ ने ही हवीवा को काक्रन का फूस वाला बँगला दिखाया था। ग्राम तेज़ी से बीत रही थी। अंग्रेज अफ़सर और उनकी पत्नियों का ताँता-सा लगा था। सब यूरेटा को ढाढ़स बँधाने आ रहे थे।

करीब नौ बजे रात को सब वापस हो गए। तीन-चार बैरा और चीकी-दार ही बँगले में रह गए थे। हवीवा पीछे से घुसा था। उसके साथी और जबर खाँ पास के अनार के पेड़ के पास अँधेरे में खड़े हो गए।

'अगर दो सीटी सुनाई दें तो समझना मैं ख़तर में हूँ,' हवीवा ने अपने साथियों को कहा था।

और फिर हवीवा विल्ली जैसी चाल से बँगले में घुसा था।

यूरेटा का चेहरा मुरझाए कमल के फूल की तरह हो गया था। उसके बटे की शक्ल पर दुःख मिश्रित कीतूहल छाया हुआ था। हवीवा एकटक देखता रहा फिर पर्दा हटा कर एकदम यूरेटा के सामने आकर उसने अपने ओठों पर अंगुली रखते हुए काक्रन का पत्र आगे कर दिया। यूरेटा चीखने ही वाली थी। उसने हवीवा को पहचान लिया था। हवीवा ने फुर्ती से बढ़कर उसका मुँह दबा दिया। आँखों के सामने काक्रन का पत्र देखकर वह अचरज से देखती हुई चुप हो गई। डैनियल डर के मारे अपनी माँ से लिपट गया था। यूरेटा ने पत्र को लेकर झटके से खोला और एक साँस में पढ़ गई। उसके चेहरे पर रंग फँलने लगा। खुशी के आँसू उसकी आँखों में भर आए। उसने हवीवा को दयनीय दृष्टि से देखा और फिर बोली, 'साइमन

टीक है गान ?'

हवीबा मुस्करा कर बोला, 'विल्लूव टोक है, मेम गाह्व । बुध ही दिन मे उनकी बाह का घाय भर जाएगा और वो यहाँ आ जाऐंगे । मैं मुद उन्हें छोड़ने आऊंगा ।'

सूरेटा के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट फैल गई । वह उठकर टेबिल पर गई और पैर उठाकर चिट्ठी लिखने लगी । वह बहुत कुछ निग्रना चाहती थी मादमन काफन को । उमरा बम चलता तो वह प्यार भरी गुनो का मागर उम कागज के टुकड़े भी मागर में भर डालती ।

डेनियन भी अब हवीबा को गौर मे देख रहा था । हवीबा ने डेनियन की तरफ मुस्करा कर देखा । डेनियन महम गया । सूरेटा ने चिट्ठी लेकर हवीबा चलने लगा पर सूरेटा ने उसे रोका और जानमारी मे आधी देर उठाकर देने हुए बोली, 'मे माह्व को दे देना ।'

हवीबा ने बेक को अपने शेंगले मे रख लिया और फिर मर झुगाना हुआ वापस घन दिया । बाहर उमके माथी तैयार गडे थे । कोई भी मीठी उन्हें मुनाई नहीं दी । इतने मे हवीबा बाहर आ गया । माथियों की जान मे जान आई ।

दुगरे दिन हवीबा ने सूरेटा काफन की चिट्ठी और बेक मेडर काफन को जब ही तो काफन हवीबा की ओर प्रणमा मिथिन स्नेह मे देखता रहा । उमने बेक के दो टुकड़े किए और आधा टुकड़ा हवीबा को देने हुआ बोला, 'तुम मेरी बीबी के साथ की बेक खाने मे उख तो नहीं करोगे ?'

हवीबा हँसाकर बोला, 'बेक मीठी होती है या नमकीन ?'

काफन ने कहा, 'मीठी ।'

हवीबा बेक लेने हुआ बोला, 'तो मैं गुनो मे खा लूँगा ।'

काफन ने पूछा, 'अगर नमकीन होती तो नहीं खा ?'

हवीबा मर हिलाकर बोला, नहीं । तुम आज जन हमार मरमान हा पर दर हतीगत हो तो दूरमन ही । तुम्हारे यहाँ का नमक मे नही जा सकता ।'

काफन हँसा, 'और मैं जो तुम्हारे यहाँ का नमक खा रहा हूँ सो ?'

हवीबा बोला, 'अखन तो तुम घायन बीमार हा । दोषम मेरी माँ के तुम के मुनाबिक हमारे कबीने के मेहमान हो । दुगके अलावा, नमक भी

क्रामत जो हम लगाते हैं वह अंग्रेज नहीं मानते ।’

काक्रन सुनता रहा । सोचता रहा । इंग्लैंड से आने से पहले उसने ‘ईस्ट’ के बारे में बहुत-सी कहानियाँ सुनी थी । उसे लगा जैसे ‘ईस्ट’ वाकई सपनों का देश है जहाँ भावुक विचारों के महीन तारों से सपने बुने जाते हैं । ये अपढ़ पिछड़े हुए लोग कितना कोमल हृदय रखते हैं और जब शत्रुभाव मन में आता है तो वही कोमल हृदय कितना कठोर बन जाता है ! सहसा काक्रन को भावना के उतार-चढ़ाव सुन्दर लगने लगे ।

लेफ्टिनेंट कर्नल वर्ड एक सिरे से दर्रे के दूर तक अंदर के इलाकों में घुस कर कबीलों को घेरकर मेजर काक्रन को खोजता फिर रहा था ।

सुबह के पाँच बजे कबीले का चौकीदार घबराता हुआ सरदार तुरें खाँ का दरवाजा खटखटा रहा था ।

हवीवा आँखें मीड़ता हुआ वड़वड़ाता आया ।

‘ब्या है, खोचे ?’ हवीवा झुंझलाता हुआ बोला ।

हाँफता हुआ चौकीदार बोला, ‘छोटे सरदार, कबीला घिर गया है । अंग्रेज अफसर के दो सौ सवार चारों ओर रैफल ताने खड़े हैं । चार तोपें लगी हैं जो एक इशारे पर कबीले की धज्जियाँ उड़ा देंगी ।’

हवीवा सुनकर सन्न रह गया । तब तक जगार हो चुकी थी । सरदार तुरें खाँ ओंठ चिपकाए सोचने लगे । तभी घुड़सवारों की टाप सुनाई देने लगी । कर्नल वर्ड करीब पचास सवारों के साथ कबीले के अंदर आ गया था । उसने कड़ककर पशतो में कहा, ‘इस कबीले का सरदार बाहर निकल आए । अगर कहीं से भी हथियार उठा तो कबीले को खाक में मिला दिया जाएगा । हमारी तोपें तैयार लगी हुई हैं ।’

सरदार तुरें खाँ ने हवीवा को रोकते हुए कहा, ‘तुम यहीं रहोगे, हवीवा । कबीले का सरदार मैं हूँ । तुम छोटे सरदार हो ।’

सरदार तुरें खाँ बाहर आ गया । कबीला जाग चुका था । सब ही सकते में आ गए थे । सब पठान बाहर मौन खड़े थे । हवीवा भी एक चादर ओढ़े बाहर भीड़ में खड़ा हो गया ।

सरदार तुरें खाँ से कर्नल वर्ड बोला, ‘ये कबीला किसका है ?’

इससे पहले कि सरदार जवाब दें मेजर काक्रन बँधे हुए कंधे को पट्टी

मे लटकाए सरदार तुरें खाँ के मकान से बाहर निकल आया ।

कर्नल बर्ड उसे देखकर खुशी से चिल्लाया, 'मेजर काफ़न ! बड़ी किस्मत है हमारी मेजर, जो तुम मिल गए और वह भी जिन्दा !'

फिर कर्नल बर्ड घोड़े से उतर कर आया और काफ़न से हाथ मिलाकर बोला, 'क्या ये कबीला हबीबा का है मेजर ? मुझे हिदायत मिली थी कि हबीबा के कबीले वालों ने ही तुम्हें कैद कर रखा है या मार डाला है ।'

सरदार तुरें खाँ की नज़र काफ़न पर टिकी हुई थी । सारा कबीला सन्नाटे में आ गया था । हबीबा अपनी चादर लपेटे साँस रोके सुन रहा था ।

काफ़न बोला, 'कर्नल बर्ड, सर । ये कबीला हबीबा का नहीं है । ये दोस्तों का कबीला है । यहाँ के बहादुर सरदार की माँ ने मुझे अपने बच्चे की तरह रखा है ।'

हबीबा ने झटके में साँस छोड़ी । सरदार तुरें खाँ की आँखों में एक रोशनी सी चमकी । कबीले वालों को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ । कर्नल बर्ड ने हाथ से इशारा किया । घुड़सवारों की तनी हुई राइफल की नलियाँ झुक गईं । घुड़सवारों के आखिरी सवार ने त्रिगुल मुँह से लगाया और बजा दिया । त्रिगुल की आवाज़ सुनते ही तोपों का रुख बदल दिया गया ।

कबीला टुकुर-टुकुर सब कुछ देखता रहा ।

कर्नल बर्ड ने मेजर काफ़न के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'ईसा मसीह का शुक्र है मेजर काफ़न कि तुम जिन्दा ही नहीं बल्कि दोस्तों के बीच रह रहे हो । चलो, अब हमें चल देना चाहिए ।'

मेजर काफ़न ने मुड़कर घर की ओर देखा । हबीबा की माँ चौखट के पास खड़ी थी । मेजर काफ़न ने कर्नल बर्ड से कहा, 'सर, मेरा घाव अभी भरा नहीं है । मेरी माँ जैसी बुजुर्ग महिला वह खड़ी हैं । मेरी इल्तजा है कि आप सब वापस हो जाएँ । मैं ठीक होते ही खुद चला आऊँगा ।'

कर्नल बर्ड आश्चर्य से बोला, 'ये तुम क्या कह रहे हो मेजर ? मुझे चीफ कमिश्नर का आदेश है कि तुम्हें जिन्दा पाकर फौरन वापस लाया जाए ।'

मेजर काफ़न बोला, 'इसकी जवाबदेही मैं दूँगा । अगर आप कहे मैं लिखकर दे सकता हूँ कि मैं घाव के भरते ही स्वयं वापस आ जाऊँ

हवीवा की माँ को किसी ने यह सब बतला दिया। वह आगे बढ़कर आई और मेजर काकन से बोली, 'मेरे बच्चे, इस कबीले के तुम मेहमान हो। जब तब चाहो हमारे यहाँ रहो। पर एक औरत होने के नाते मैं तुम्हारी बीबी के ऊपर जो गुजर रही होगी उसका अंदाज लगा सकती हूँ। अपने मेहमान को जाने को कहना हमारे लिए एक संगीन गुनाह है। तुम बहादुर के अलावा इन्सान भी हो मेरे बच्चे। मेरी खाइश है कि तुम बीबी-बच्चे के पास चले जाओ। तुम्हारे आने से उनके मन की खिजाँ फिर से बहार बन जाएगी।' काकन ने हवीवा की माँ के आगे घुटने टेक दिए और उसका दामन चूम लिया। सुगरा ने उसके सर पर स्नेह से हाथ फेरा।

'क्या आप इजाजत देती हैं कि मैं चला जाऊँ?' काकन ने उससे पूछा।

जवाब में सुगरा ने मुस्कराकर सर हिला दिया। मेजर काकन चलने को तैयार हो गया। उसका झोला अंदर से मँगवा लिया गया। जैसे ही वह जाने को हुआ कि हवीवा ने आगे बढ़कर कहा, 'ठहरो मेहमान! हमारा कबीला कभी मेहमान को खाली हाथ अलविदा नहीं करता। कबीला एक छोटा सा नज़राना देना चाहता है।'

हवीवा ने मेजर काकन के हाथ पर एक मखमल की थैली रख दी और फिर हाथ मिलाकर कहा, 'मेहमान के अलावा मैं तुम्हें एक दोस्त भी कबूल करता हूँ मेजर साहब!'

काकन की आँखें सील गईं। उसने मखमल की छोटी सी थैली अपनी जेब में रख ली और फिर कर्नल बर्ड के साथ वापस चल दिया। जब मेजर काकन घर पहुँचा था तो यूरेटा खुशी से पागल हो गई थी। सबके सामने काकन ने उसके फड़फड़ाने ओंठ चूमे थे। डैनियल को तो काकन ने सौ बार चूमा होगा।

सब तरफ से बधाइयाँ आ रही थीं। रात को खाने के बाद काकन ने सब कुछ यूरेटा को बतलाया और सहसा बोला, 'अरे हाँ, हवीवा का तोहफा तो मैं देखना ही भूल गया।'

मेजर काकन उठा और उसने अपनी जेब से हवीवा की दी हुई मखमल की थैली निकाल कर देखी। उसमें मेजर काकन की रिवाल्वर के छः कारतूस रखे थे!

गुलसमन सुबह की षडखड सुनकर जाग पड़ी। शायद चार बजे होंगे। नूर खाँ की हवेली का फाटक किमी नें धीरे से खोला था। एक लम्बी-चौड़ी छाया पोटली लेकर दबे पाँव निकल रही थी। कबीले के अंदर चोरी नामुमकिन थी। गुलसमन सोचने लगी कि आखिर कौन इतनी सुबह उठकर पोटली ले जा रहा है और इस पोटली में हो भी क्या सकता है। उसने सिर-हाने रखा खंजर उठा लिया और अपने घर के पास खड़ी होकर देखने लगी। छाया जब नजदीक आई तो गुलसमन ने नूर खाँ को पहचान लिया। उसने चैन की साँस ली। फिर कौतूहल जागा कि इतनी सुबह नूर खाँ क्या ले जा रहा है।

गुलसमन नूर खाँ को अपना समझती आई है। उसकी बेवा माँ नईमा उसे बचपन से यह बतलाती आ रही है। जब गुलसमन छः साल की थी तभी नूर खाँ के अब्बा सरदार हिलाल खाँ नईमा के घर आकर नूर खाँ के लिए बात पक्की कर गए थे। सरदार हिलाल खाँ बड़े ठस्से के आदमी थे। दुश्मनी और दोस्ती निभाना जानते थे। मलाकद की लडाईं में गुलसमन के अब्बा हफीज खाँ ने सामने आकर सीना अडा दिया था। जो नेजा सरदार हिलाल खाँ के सीने के आर पार होना था वह हफीज खाँ की जान ले गया था। हफीज खाँ ने मरते वकल सरदार हिलाल खाँ का हाथ दबाकर कहा था, 'सरदार मुझे नाज है कि मैं आपके काम आ सका। मेरे जैसे सँकडो हफीज खाँ कबीले की खिदमत को पैदा हो जाएँगे पर कबीले का सरदार बड़ी मुश्किल से मिलता है।'

सरदार हिलाल खाँ ने आँखें पोंछते हुए कहा, 'नही हफीज खाँ, तुम जैना जानिसार दोस्त दोदावर की तरह कामयाब है। तुमने अपनी जान मेरे खातिर ही दी है दोस्त, तुम्हारा अहसान मेरा खानदान कभी नहीं भूलेगा।' हफीज खाँ की आँखों के आगे अँधेरा गहरा होता जा रहा था। उसने

जोर लगाकर कहा, 'सरदार, मैं अपनी वीची नईमा और लख्तेजिगर गुलसमन को तुम्हें सौंपे जा रहा हूँ। खुदा हाफिज !'

सरदार हिलाल खाँ ने तभी फैसला कर डाला था और नूर खाँ के लिए वे गुलसमन का हाथ माँगने नईमा भाभी के पास आए थे। रिश्ता पक्का हो गया था। नईमा अपने दुख को पी गई। गुलसमन की तरफ से वह निश्चित भी हो गई थी। कबीले के सरदार की यह बनेगी उसकी बेटो। यह आसरा ही उसकी जिन्दगी में बहार का वादा सा बन गया था। जैसे-जैसे गुलसमन बढ़ती गई उसका रूप भी निखरता गया। वह अनार की तरह लाल थी। बचपन से ही उसने नूर खाँ को अपना समझा था और आज भी वह उसे अपना ही समझती है। गुलसमन यह नहीं जानती थी कि नूर खाँ महजवीं के लिए दीवाना हो गया है। महजवीं के लिए नूर खाँ को मुहब्बत कम थी, हविस ज्यादा थी। जब भी नूर खाँ गुलसमन के सामने पड़ता तो, सिर्फ मुस्करा भर देता। उसकी मुस्कराहट ही गुलसमन को हर-भरा करती रहती।

नूर खाँ पीठ पर पोटली पर रखे घर से निकला था। पोटली को उसने घोड़े की पीठ पर रखा। एक बेलचा भी घोड़े की जीन के पास खुसा हुआ था। नूर खाँ घोड़े पर सवार नहीं हुआ। वह उसकी रास पकड़े-पकड़े चलने लगा। थोड़ी दूर चलकर एक बड़े दरखत के पास आकर वह रुका और घोड़े की पीठ से बेलचा निकालकर खोदने लगा। गुलसमन पास से सब देख रही थी। गड्ढा खोदकर नूर खाँ ने माथे से पसीना पोंछा और फिर पोटली उतरा कर गड्ढे में डाल दी। इसके बाद उसने गड्ढे को पाट दिया।

दाँत पीस कर नूर खाँ बोला, 'जिस दिन हबीबा मारा जाएगा उस दिन इन दो हजार रुपयों को मैं गरीब-गूरवों को बाँट दूँगा।'

और फिर नूर खाँ लौट आया था। गुलसमन ने सब कुछ देखा पर बोली कुछ नहीं। उसने किसी को भी यह राज नहीं बतलाया। नूर खाँ को वह अपना समझती थी। उसका राज भी गुलसमन का अपना राज था।

शायद कोई दो-तीन दिन बाद नूर खाँ के साथी ईदू खाँ ने फहीं पर महजवीं वाला किस्सा बयान किया था। गुलसमन के कान में भी भनक पहुँची थी। उस दिन वह बहुत उदास रही। फिर धीरे-धीरे उसकी उदासी गायब

होने लगी और उसका हाथा खंजर पर पहुँच गया। कौन है ये महजबी? वह महजबी को देखने को बेचैन हो गई। मौका पाकर वह ईदू खाँ के घर पहुँची और उसने ईदू खाँ से पूछा, 'ईदू भाई, क्या ये सच है कि नूर खाँ किमी महजबी से इश्क करने लगे हैं? क्या ये आग दोनों तरफ लगी हुई है?'

ईदू पहले तो चौंका। सारा कबीला जानता था कि जल्द ही गुलममन नूर खाँ की बीबी बनने वाली है। सरदार हिलाल खाँ ने बारह साल पहले यह रिश्ता तय कर डाला था। नूर खाँ की टालमटोल के कारण ही शादी में ढील हो रही थी।

ईदू ने सकपका कर कहा, 'तुमसे किसने यह कहा है गुलममन? ये अफवाह मीने मुनी तो है पर ये नहीं कह सकता कि आग दोनों तरफ से बराबर लगी हुई है या इकतर्फा है। हाँ ये बात सच है कि उरकजई कबीले के हबीब खाँ और नूर खाँ में रजिग महजबी के लिए हुई है।'

'कौन है ये महजबी?' संजीदा होकर गुलसमन ने पूछा।

'महजबी भूमफजई कबीले के सरदार गुलाब खाँ की बेटी है।' ईदू खाँ ने सर झुकाकर कहा।

गुलसमन ने टकटकी बाँधकर दुरहराया, 'महजबी।' गुलममन की आँखों में धून उतर आया। अंदर से जैसे कोई धोली, 'जल्दवाजी खतरनाक' होनी है गुलसमन, पहले इस बात की तसदीक कर कि महजबी भी नूर खाँ पर झुकी है या सिर्फ नूर खाँ ही उसके स्वाव देख रहा है।'

गुलसमन बहुत देर तक सोचती रही।

कोई दस दिन बाद शाह मुतरिव के मजार पर मेला लगना था। मेले में सभी कबीले के लोग औरतें आती थी। गुलममन भी चन्द्र लड़कियों के साथ मेले में गई थी। सीखी कवाव की दुकान पर जोहरा ने गुलसमन के कुहनी मार कर कहा, 'देख गुलू, ये ही है हिलाल खाँ की बेटी।'

महजबी अपने भाई गुलफाम और चन्द्र दोस्तों के साथ कवाव खा रही थी और मिर्च की बजह से 'सी-सी' करती जा रही थी। महजबी गुलसमन को चाँद का टुकड़ा जैसी नज़र आई। गुलसमन के दिल पर डाह की एक छाया-मी उतर गई।

शायद गुलफाम ने ही हबीबा के कान में यह बात किसी और के

जोर लगाकर कहा, 'सरदार, मैं अपनी वीवी नईमा और लखतेजिगर गुलसमन को तुम्हें सौंपे जा रहा हूँ। खुदा हाफिज़।'।

सरदार हिलाल खाँ ने तभी फैसला कर डाला था और नूर खाँ के लिए वे गुलसमन का हाथ माँगने नईमा भाभी के पास आए थे। रिश्ता पक्का हो गया था। नईमा अपने दुख को पी गई। गुलसमन की तरफ से वह निश्चित भी हो गई थी। कबीले के सरदार की बहू बनेगी उसकी बेटो। यह आसरा ही उसकी जिन्दगी में बहार का वादा सा बन गया था। जैसे-जैसे गुलसमन बढ़ती गई उसका रूप भी निखरता गया। वह अनार की तरह लाल थी। बचपन से ही उसने नूर खाँ को अपना समझा था और आज भी वह उसे अपना ही समझती है। गुलसमन यह नहीं जानती थी कि नूर खाँ महजवीं के लिए दीवाना हो गया है। महजवीं के लिए नूर खाँ को मुहब्बत कम थी, हविस ज्यादा थी। जब भी नूर खाँ गुलसमन के सामने पड़ता तो, सिर्फ मुस्करा भर देता। उसकी मुस्कराहट ही गुलसमन को हँस-भरा करती रहती।

नूर खाँ पीठ पर पोटली पर रखे घर से निकला था। पोटली को उसने घोड़े की पीठ पर रखा। एक बेलचा भी घोड़े की जीन के पास खुसा हुआ था। नूर खाँ घोड़े पर सवार नहीं हुआ। वह उसकी रास पकड़े-पकड़े चलने लगा। थोड़ी दूर चलकर एक बड़े दरख्त के पास आकर वह रुका और घोड़े की पीठ से बेलचा निकालकर खोदने लगा। गुलसमन पास से सब देख रही थी। गड्ढा खोदकर नूर खाँ ने माथे से पसीना पोंछा और फिर पोटली उतरा कर गड्ढे में डाल दी। इसके बाद उसने गड्ढे को पाट दिया।

दाँत पीस कर नूर खाँ बोला, 'जिस दिन हवीवा मारा जाएगा उस दिन इन दो हजार रुपयों को मैं गरीब-गुरवों को बाँट दूँगा।'।

और फिर नूर खाँ लौट आया था। गुलसमन ने सब कुछ देखा पर बोली कुछ नहीं। उसने किसी को भी यह राज नहीं बतलाया। नूर खाँ को वह अपना समझती थी। उसका राज भी गुलसमन का अपना राज था।

शायद कोई दो-तीन दिन बाद नूर खाँ के साथी ईदू खाँ ने कहीं पर महजवीं वाला किस्सा बयान किया था। गुलसमन के कान में भी भनक पहुँची थी। उस दिन वह बहुत उदास रही। फिर धीरे-धीरे उसकी उदासी गायब

होने लगी और उसका हाथा खंजर पर पहुँच गया। कौन है ये महजबी? वह महजबी को देखने को बेचैन हो गई। मौका पाकर वह ईदू खाँ के घर पहुँची और उसने ईदू खाँ से पूछा, 'ईदू भाई, क्या ये सच है कि नूर खाँ किसी महजबी से इश्क करने लगे है? क्या ये आग दोनों तरफ लगी हुई है?'

ईदू पहले तो चौका। सारा कबीला जानता था कि जल्द ही गुलसमन नूर खाँ की बीबी बनने वाली है। सरदार हिलाल खाँ ने बारह साल पहले यह रिश्ता तय कर डाला था। नूर खाँ की टालमटोल के कारण ही शादी में ढील हो रही थी।

ईदू ने सकपका कर कहा, 'तुमसे कितने यह कहा है गुलसमन? ये अफ-वाह मैंने सुनी तो है पर ये नहीं कह सकता कि आग दोनों तरफ से बराबर लगी हुई है या इकतर्फा है। हाँ ये बात सच है कि उरकजई कबीले के हबीब खाँ और नूर खाँ में रजिष महजबी के लिए हुई है।'

'कौन है ये महजबी?' सजीदा होकर गुलसमन ने पूछा।

'महजबी यूसफजई कबीले के सरदार गुलाब खाँ की बेटी है।' ईदू खाँ ने सर झुकाकर कहा।

गुलसमन ने टकटकी बाँधकर दुरहराया, 'महजबी।' गुलसमन की आँखों में खून उतर आया। अंदर से जैसे कोई बोली, 'जल्दवाजी खतरनाक होती है गुलसमन, पहले इस बात की तसदीक कर कि महजबी भी नूर खाँ पर झुकी है या सिर्फ नूर खाँ ही उसके छ्वाब देख रहा है।'

गुलसमन बहुत देर तक सोचती रही।

कोई दस दिन बाद शाह मुतरिव के मजार पर मेला लगना था। मेले में सभी कबीले के लोग और औरतें आती थीं। गुलसमन भी चन्द लडकियों के साथ मेले में गई थी। सीधी कवाब की दुकान पर जोहरा ने गुलसमन के बुहनी मार कर कहा, 'देख गुलू, ये ही है हिलाल खाँ की बेटी।'

महजबी अपने भाई गुलफाम और चन्द दोस्तों के साथ कवाब खा रही थी और मिर्च की वजह से 'सी-सी' करती जा रही थी। महजबी गुलसमन को चाँद का टुकड़ा जैसी नजर आई। गुलसमन के दिल पर डाह की एक छाया-नी उतर गई।

शायद गुलफाम ने ही हबीबा के कान में यह बात किसी और के द्वारा

भिजवाई थी कि मेले में महजवीं आएगी। हवीवा भी महजवीं से मिलने को बेकरार था। आज मीका अच्छा था। लिहाजा चन्द साथियों को लेकर वह भी मेले में घूम रहा था। अलवत्ता नूर खाँ गालिवन पेशावर गया था। क्यों गया यह तो नहीं मालूम, पर ईदू खाँ ने इशारा जरूर फेंका था कि नूर खाँ को जकाखेल के कबीले के कुछ लोगों ने बुलाया है। किसी सिलसिले में वह पेशावर गया था। थोड़ी देर घूमने के बाद हवीवा की निगाह महजवीं और उसकी सहेलियों पर पड़ी। पास ही की दुकान पर गुलफ़ाम चाट खा रहा था। उसकी नज़र भी हवीवा हर पड़ी और उसने आवाज़ देकर हवीवा को अपने पास बुला लिया। हवीवा असली कलावत्तू का कुल्हा पहने आया था। लाल मखमल की वास्कट पर सोने के तार का काम था। चेहरे पर लाली छाई थी। उसने सुरमा लगा रखा था जो उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के किनारे पर इतना महीन लगा था कि ऐसे लगता मानो किसी खंजर पर ताजा-ताजा धार धरवाई हो। दाहिनी कलाई पर हवीवा ने लाल रूमाल बाँध रखा था। यह रूमाल महजवीं का ही था।

जब महजवीं ने उसे देखा तो वह शर्म से सहम गई। खुशी और हया की गंगा-जमुनी अदा ने उसकी बड़ी-बड़ी पलकों को झुका दिया। नीची निगाह किए जब उसने तिरछी चितवन से हवीवा को देखा तो हवीवा बेचैन हो गया। तभी महजवीं की नीची नज़र हवीवा की कलाई में बँधे अपने रूमाल पर पड़ी। उसने नज़र को थोड़ा उठाकर देखा। हवीवा ने उसी वक़्त रूमाल अपने याकूती ओठों पर लगाया। महजवीं सिहर उठी। उसे लगा कि हवीवा ने जैसे उसके ओठों को चूम लिया हो।

गुलसमन दूर से यह सब देख रही थी। आखिर वह भी जवानी की दहलीज़ पर खड़ी एक खूबसूरत औरत थी। उतने सहसा एक लम्बी साँस ली। उसके दिल से आवाज़ उठी, 'देखा, गुलसमन। ये दुतर्फा आग लगी मालूम देती है। ये खामोश इशारे मुहब्बत के गवाह हैं। आग कितनी फैल चुकी है, यही देखना है।'।

गुलफ़ाम और हवीवा थोड़ी देर साथ-साथ रहे। हवीवा ने अपने साथियों से कहा कि वे मेले में घूम लें और फिर घंटे भर बाद रहट के पास पेड़ के नीचे मिल जाएँ।

गुलफाम ने अपने साधियों को भी टहला दिया।

महजबी अपनी दो सहेलियों के साथ रह गई। गुलफाम तभी हबीबा को पास लाया।

‘महजबी, क्यों नहीं हम लोग खाना पेड़ के नीचे खा लें,’ गुलफाम बोला।

महजबी ने सिर्फं गरदन झुका दी। पेड़ के पास ही दरी बिछा दी गई और फिर सफेद कड़ा हुआ दस्तरख्वान बिछा दिया गया। दस्तरख्वान बिछा हुआ था। हबीबा ने कहा, ‘बड़ा खूबसूरत दस्तरख्वान है।’ गुलफाम बोला, ‘तुम्हें पसन्द आया हबीबा भाई? ये महजबी ने बनाया है।’

हबीबा मुस्कराकर बोला, ‘ओह! तो मेरा अदाज मही निकला।’

‘क्या?’ गुलफाम बोला।

‘यही कि इतना खूबसूरत दस्तरख्वान और कौन बना सकता होगा।’ हबीबा हँसकर बोला।

महजबी शर्म से गड-सी गई।

गुलफाम कूजा उठाकर बोला, ‘मैं पास के झरने से पानी ले आऊँ। आओ, मईदा, आओ, निकहत झरने तक हो आएँ।’

महजबी और भी घबरा गई। अब वह और हबीबा ही अकेले रह गए थे।

थोड़ी देर दोनों चुप रहे। कौन पहल करे शायद यह पशोपश थी। आखिर हबीबा ही बोला, ‘गुलफाम भाई जब मुझे देखने आए थे तो बतलाया था कि मेरे जखम की खबर मुनकर तुमने दो आँसू गिराए थे।’

महजबी अपने पाँव के अँगूठे से दस्तरख्वान कुरेदने लगी। फिर उसने हया के बेहिस्ताब बोझ में लदी पलकों को उठाया और हबीबा की तरफ देख कर कहा, ‘आपको ज्यादा घोट तो नहीं लगी थी?’

हबीबा मुस्कराया, ‘मैं उस दिन बच गया महजबी। मुझे उस दिन सपने में तुम दीखी थी और तुमने कहा कि आइन्दा मैं तुम्हारा रूमाल हमेशा माथ रखूँ। इसमें तुम्हारी मुहब्बत की खुशबू बसी है और शायद तुम्हारी मुहब्बत ही ढाल बनकर मुझे बचाती रहती है।’

महजबी ने नीमबाज आँखों से हबीबा को देखा और धीरे से बोली,

‘आप बनाना खूब जानते हैं।’

हवीवा हँसकर बोला, ‘महजवी, मैं तुम्हें अपना बनाने की कोशिश तो बहुत कर रहा हूँ, अब देखो कब तक कामयाब हो पाता हूँ।’

फिर जेब टटोलकर हवीवा बोला, ‘अरे हाँ, ये तो भूल ही गया।’ उसने अपनी जेब से एक जड़ाऊ गुलूबन्द निकाला और बोला, ‘क्या मैं ये देने की जुरअत कर सकता हूँ?’

महजवी ने इधर-उधर देखा। थोड़ी दूर पर मेला हो-हुल्लड़ से चल रहा था। हाँ, यह बात दीगर थी कि पास के पेड़ की ओट में खड़ी गुलसमन सब कुछ देख रही थी। उसको यह सब अच्छा लग रहा था। उसे अहसास होता जा रहा था कि महजवीं हवीवा की ही अमानत है, नूर खाँ की नहीं।

महजवी ने मुस्कराकर कहा, ‘इसे मुझे पहनाने की आप में जुरअत है?’

हवीवा बोला, ‘हाँ, है, महजवीं।’

और उसने महजवीं के पीछे जाकर गुलूबन्द पहना दिया। महजवीं की आँखों में खुशी के आँसू छलछला उठे, ‘इसका मतलब आप समझते हैं?’

‘नहीं,’ हवीवा शरारत से बोला, ‘मतलब तुम समझाओ।’

महजवीं ने शर्म से गर्दन झुका ली फिर दुपट्टे को इस तरह ओढ़ा कि गुलूबन्द करीब-करीब छुप ही गया।

‘इसे तो तुमने ऐसा छपा लिया है जैसे मैंने तुम्हारी सूरत को अपने दिल में छपाया है,’ हवीवा हँसकर बोला। महजवीं हँसकर बोली, ‘हमदर्दी और मुहब्बत छपाने से और भी बेकरारी बढ़ा देती है।’

हवीवा ने महजवीं के हाथ अपने हाथों में लेकर चूम लिए, ‘तुम ठीक कहती हो महजवीं। इस मेले में आकर हम आज एक और छपा हुआ घाव लेकर जा रहे हैं जो ना दिन में चैन लेने देगा ना रात को।’

और तभी गुलफ़ाम पानी का कूँजा लेकर आ गया। ‘अरे, तुम लोगों ने अभी तक खाना भी नहीं खोला है,’ गुलफ़ाम बोला।

महजवीं ने जल्दी-जल्दी पोटली खोलनी शुरू की। खाने के बड़ी देर तक सब बैठे बातचीत करते रहे। चलते वक़्त हवीवा ने सबसे सलाम किया। महजवीं ने अपनी बिजली जैसी गोरी कलाई उठाई और आँखें झुकाकर

सलाम किया। उसका मलाम मोठे खजर की तरह हबीबा के दिल में उतरता चला गया। मेले को छोड़कर जब सब चलने लगे तब गुलसमन ने मौका देखकर महजबी को पुकारा, 'महजबी बी, क्या मैं आपसे एक सप्ताह बात कर सकती हूँ।' सब चौंक पड़े। महजबी ने भी हैरत में आकर गुलसमन को देखा और बोली, 'कौन हैं आप? कहिए क्या बात है।'

गुलसमन बोली, 'अगर इजाजत दें तो आपसे अकेले में बात करना चाहती हूँ।'

हाँ, हाँ, कर लीजिए' गुलफाम बोला, 'हम हटे जाते हैं।'

गुलसमन ने महजबी से कहा, 'आप गलत मत समझना बहन। जो कुछ मैंने देखा उससे ये अहसास हुआ कि हबीबा भाई पर सिर्फ आपका ही हक है और शायद उनसे आपको कोई छीन भी नहीं सकता। क्या आप बतला सकेंगी कि नूर खाँ इस अफसाने में कहीं आते हैं?'

महजबी का चेहरा तमतमा उठा, 'नूर खाँ मुहब्बत को सलवार से तराशना चाहते थे। मेरी आबरू हबीब खाँ ने बचाई और मैं उसी दिन से उनकी हो गई। शायद नूर खाँ हबीब खाँ की मार को भूले नहीं होंगे। मुझे जितनी मुहब्बत हबीब खाँ में है उतनी ही नफरत नूर खाँ से है। पर आप इस अफसाने में कहीं आती हैं?'

गुलसमन मुस्कराई, 'अल्लाह का लाख-लाख शुक्र। आपा! मैं बदनबीव नूर खाँ की मंगेतर हूँ।'

महजबी सुनकर अवाक् रह गई। उसने हमदर्दी से उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'मुहब्बत और हविस में बहुत फर्क होता है बहन। मैं यही दुआ माँगूंगी कि नूर खाँ को अल्लाह समझने की कुव्वत दें और वे जा और बेजा के फर्क में इम्तियाज कर सकें।'

इसके बाद सलाम करके महजबी चल दी। गुलसमन के सीने पर जो बोझ लदा था वह गायब हो गया था। पर अब उसे एक ओर फिकर लग गई थी। नूर खाँ वहशत के दायरे में दाखिल हो चुका था। हविस का गुलाम इन्सान, दरिन्दा बन जाता है। गुलसमन जल्दी-जल्दी वापस जाने लगी। उसे सब शर्मोहया तक पर रखकर नूर खाँ से दो-दो बातें करनी थी।

इसी सोच में हबीबी गुलसमन चल दी।

पेशावर की चमक-दमक देखकर नूर खाँ भीचक्का हो गया। जक्काखेल कवीले का सबसे माना हुआ मुखविर नसीर खाँ नूर खाँ को पेशावर घुमा रहा था। दूसरे दिन उसे छावनी ले जाना था जहाँ उसे पुलिस चौकी दिखलानी थी। शाम अजीब रीनक से भरी थी। कहाँ वीहड़ कवीलों के चारों ओर बेजुबाँ पहाड़ और थमा-थमा-सा माहील। नसीर खाँ उसे पास के जुएखाने में ले गया। रोशनी इतनी मद्धिम थी कि नूर खाँ को ऐसा लगा जैसे एक नशीला अँधेरा छा गया हो। जगह-जगह मेजों पर जुआरी अपने-अपने जाम लिए ताशों को लिए गहरे सोच में बैठे थे। दूसरे कमरे में स्टेज पर एक रँगी-पुती बानो पश्तो में गजल गा रही थी। लाल-नीली रोशनी की फुहार जब उस पर पड़ती तो वह जन्नत की हूर-सी लगने लगती। नसीर खाँ को देखते ही उसने हाथ हिलाकर इशारा किया। नूर खाँ यह देखकर ललचाया।

‘तुम्हें ये जानती है नसीर खाँ?’ नूर खाँ बोला।

‘जानती ही नहीं, मुझे मानती भी है,’ नसीर खाँ आँखें मारकर बोला, ‘प्रोग्राम के बाद इससे मिलवाऊँगा। चमन का अंगूर इसका आगे फीका पड़ जाता है दोस्त।’ और उसने नूर खाँ का हाथ दबा दिया।

पास की मेज पर बैठते उसने लड़के को इशारा किया। देखते-ही-देखते गर्मागर्म कबाब और एक बोतल आ गई।

‘ये क्या शराब है नसीर भाई,’ नूर खाँ बोला।

‘नहीं, ये अंगूर की बेट्टी है विरादर,’ नसीर खाँ बोला, ‘इसको पीने के बाद जब स्टेज वाली जेबुन्निसा से मिलोगे तो तुम्हें जिन्दगी में खुशबू का अहसास होने लगेगा।’

नूर खाँ ने पहले कभी शराब नहीं पी थी। वह कभी बोतल को देखता तो कभी स्टेज पर नाचती-गाती जेबुन्निसा को। जब भी वह जेबुन्निसा को

देखता तो उसके अंदर एक अजीब झञ्झनाहट हो उठती। नसीर खां ने करीब-करीब आधा गिलास भर दिया। 'एक ही साँस में इसे मर्द खत्म करते हैं नूरा भाई,' नसीर खां बोला, 'सिर्फ औरतें धीरे-धीरे पीती हैं। तुम तो मर्द हो ना नूरा भाई।'

नूरा अजीब पशोपश में पड़ गया। उसने गिलास के खनकते ही एक साँस में पूरी शराब खत्म कर दी। उसे ऐसा लगा जैसे उसने विषली हुई आग को पी लिया हो। उसकी पेशानी की नसें उभर आईं और अग-अग से अंगारे से फूटने लगे। फिर उसे ऐसा लगा जैसे उसके अंदर किसी ने हिम्मत कूट-कूट कर भर दी हो। वह बनावटी माहस में बोला, 'नसीर भाई, तुमने मुझे आज जन्नत दिलाई है। और ये वानो — क्या बतलाया तुमने — हाँ जेबुन्निसा ! क्या बात है ! इसके आगे मपजर्वा, गुलसमन — सब गर्द हैं।'

नसीर खां चौंका। उसने दूसरा बड़ा पेग देते हुए कहा, 'कवीलो की-जंगली औरतो का इससे क्या मुकाबिला, नूरा भाई। अभी तो एक ही जेबुन्निसा दिखलाई है। इससे भी बेहतर नग जब दिखनाऊँगा तो तुम्हारा दिल बुलबुल की तरह फुदकने लगेगा।'

नूरा नशीली आँखों को चौड़ाता हुआ मुस्कराने लगा।

नसीर खां बोला, 'चलो अब जेबुन्निसा का रक्स खत्म होने वाला है। तुम्हें शमा से मिलवा दे, भरे परवाने।'

नूरा लड़खड़ाता हुआ उठा, 'हम शमा के पहलू में जाकर अपने पख जला देंगे नसीर भाई। चलो, हमें उसके आगोश में गिरा दो।'

नसीर खां ने पहने से सब को पढा दिया था। सरकार से उसे दो सौ रुपया महीना मिलता था। नये मुखविर बनाने पर सौ रुपया अलग से मिलता था। नये पंछी को चुगाने में जो खर्च होता था उसका खर्च अलग किसी 'फंड' में मिलता था। नसीर चाहता था कि काबुल नदी के आस-पास कवीलो के मुहु मरदारो को पकड़वा दिया जाए। खास तौर से हबीबा के लिए दो हजार नकद का नाम घोषित हो चुका था। उमें हबीबा के प्रति नूरा की घृणा का आभास हो चुका था। इसलिए उसने फुसला-फुमलू कर नूरा पर रंग जमाया था।

जब नूरा और नसीर जेबुन्निसा के कमरे में पहुँचे तो नूरा चित्रा

सं। देखता रहा। कमरा बहुत अच्छा सजा था। चारों ओर नंगी और अध-नंगी औरतों की तस्वीरें लटक रही थीं। हल्की नीली रोशनी से एक नशा जैसा टपक रहा था। जेबुन्निसा ने मुस्कराकर नूरा को सलाम किया और फिर अलमारी से बोतल निकालकर तीन पेग बनाए। नूरा मुस्कराता हुआ किर्कलव्यविमूढ़-सा देखता रहा। जेबुन्निसा ने एक ही साँस में गिलास खत्म कर दिया।

‘चे खुश, क्या शेर का दिल पाया है, जानेमन,’ नूरा बोला।

नसीर खाँ ने पेग पीकर कहा, ‘नूरा भाई, तुम यहीं आराम करो। कल सुबह मैं यही मिलूंगा।’

नूरा यह सुनकर खुश हुआ। उसने झूठे से भी यह नहीं कहा कि नसीर भाई थोड़ी देर और बैठे।

‘अच्छा तो नसीर भाई, वह लड़खड़ता हुआ बोला, ‘कल सुबह यहीं मिलेंगे।’

रहा-सहा जादू जेबुन्निसा ने उस पर डाल दिया। नूरा चौथे पेग में निर्जीव होकर ढुलक गया। मुहब्बत के इरादे मन ही में रह गए। जेबुन्निसा ने ताली बजाई। दो नौकर आ गए।

‘इस खंजीर को पिछले वाले कमरे में फेंक दो!’ जेबुन्निसा बोली, ‘शमा का परवाना बनने की कोशिश कर रहा था, सूअर का बच्चा।’

दोनों आदमियों ने नूरा को गुड़ की बोरी की तरह उठाया और पिछले कमरे में फेंक कर हाथ झाड़े।

सुबह जब नूरा उठा तो उसके सिर में हल्का-हल्का दर्द था। वह सोचने की कोशिश कर रहा था कि वह कहाँ है। थोड़ी देर में चाय लिए एक नौकर आया। नूरा ने चाय उठाते हुए पूछा, ‘मैं कहाँ हूँ खोचे?’

नौकर सलीके से बोला, ‘आप जेबुन्निसा वानो के दीलतखाने में हैं खान साहब।’

नूरा सोचने लगा। फिर उसे घुंघली यादों के बादल उमड़ते नजर आए। ‘हाँ, हाँ,’ वह बोला, ‘अब समझ में आया। नसीर खाँ लाए थे मुझे।’

‘जी हाँ,’ नौकर बोला, ‘आप नहा-धो लें। खान साहब, आने ही वाले होंगे।’

नूरा उठ खड़ा हुआ। अभी भी चाल में बहक थी।

कोई आधे घंटे बाद नूरा नहा-धोकर तैयार हो गया। तभी नसीर खाँ और जेबुन्निसा आ गए। नूरा जेबुन्निसा को देखकर खिल उठा। उसे इतना याद था कि जेबुन्निसा ने उसके गले में बाहे डालकर चौथा पेग जवरन पिलाया था। उसके बाद क्या हुआ, नूरा को कुछ पता नहीं है।

नसीर खाँ उसे छावनी की चौकी पर ले जा रहा था। चौकी के दारोगा अब्दुल शनास थे। मलाम-दुआ के बाद उन्होंने नसीर खाँ और नूरा के लिए चाय और डबल रोटी मँगवाई। नूरा गरूर से फून् गया। दारोगा उसकी इतनी लल्लो-चप्पो कर रहा है, उसने सोचा। थोड़ी ही देर में उसका अँगूठा कई कागजों पर लगाया गया और फिर नसीर खाँ को हिदायत दी गई कि बाजार में जाकर उसकी फोटो भी खिचवाली जाए। फोटो खिचते वक़्त नूरा बहुत खुश था। इसके पहले उसने कोई फोटो नहीं देखी थी। जब कोई पन्द्रह मिनट बाद उसे गीला प्रिंट दिखाया तो अपनी फोटो को देख-देखकर खुशी से नाचने लगा।

नूरा को 'टेम्पररी' मुखबिरी के लिए रखा गया। जैसे-जैसे उसकी खबर रग नाएगी, उसे वैसे ही पैसे मिलेंगे। नसीर खाँ ने वैसे जाल को मजबूत बनाने को उसे दारोगा जी से पच्चीस रुपये दिलवा दिए थे। फोटो सहित एक 'पास' भी उसे दे दिया गया था।

शाम को नसीर खाँ उसे दूसरे जुआघर और नाचघर में ले गया। यह पहले वाले जुआघर से कहीं बड़ा था। यहाँ हल्के लाल रंग की रोशनी हो रही थी। मेजों पर लोग डटे थे। जिस मेज पर नसीर खाँ ने नूरा को बिठाया उसकी पाम वाली मेज पर बैठे तीन पठानों ने फुस-फुस करना शुरू कर दिया।

'नसीर खाँ अब की बार किसको फँसा कर लाया है, रहमत?' एक पठान जाम उठाता हुआ बोला।

'नया जमूरा है,' रहमत बोला, 'नसीर हबीबा के पीछे पड़ा है। अगर कामयाब हो गया तो चार बीघे जमीन और डेढ़ हजार रुपया डकारेगा। इस पछुल्ले को पाँच सौ भी पकड़ा दे तो बहुत समझना।'

'पर हबीबा को लोग चाहते हैं', पहला वाला पठान बोला, '— — —'

ने नसीर हवीवा को पकड़वाने के लिए सही मुखविर ढूँढ़ता रहा। इसकी ज़रूर कोई जाती रंजिश होगी।'

अब की वार तीसरा साथी बोला, 'है। एक कबीले के सरदार की बेटी को ये जमूरा उड़ा रहा था। हवीवा ने उसे बचाया और फिर जैसा कि होता है, पहले हमदर्दी उभरी और फिर हमदर्दी मुहब्बत बन गई।'

नसीर खाँ ने शराब पिलाकर नूरा को जुआ खिलवाया। जाने-पहचाने लोगों में उसे ले गया। पहले से सब कुछ तय था। कोई घंटे भर के अन्दर नूरा दो सौ रुपये जीता। नसीर खाँ सधी हुई चाल चल रहा था। प्याले का शौक और ऊपर से जुए में जीतने का लालच—दोनों ही खतरनाक कदम थे। पर मुखविर को चाट लगाना ज़रूरी था। जब शराब और जुए के लिए पैसे नहीं होंगे तभी वह जान-जोखों वाली खबरें लाएगा। नसीर खाँ को आज तीसरा चस्का भी नूरा को लगाना था। स्टेज पर नाचती हुई रुखसाना तय हो चुकी थी। नूरा जब लड़खड़ाती जुवान से पश्तो का गीत गुनगुनाता रुखसाना के कमरे में पहुँचा तो वह कामान्ध पिशाच जैसा लग रहा था। नसीर खाँ उसे रुखसाना की बान्नों में छोड़ कर बाहर आ गया था।

मेले से वापस आकर हवीबा को ऐसा महगूस होता कि उसकी जिन्दगी तरन्नुम से गुनगुना उठी है। महजबी की हया और अदा ने हवीबा को लूट लिया था। जब भी वह अकेला बैठता तो तख्तियुल मे महजबी से बातें करता रहता। सबसे पहले अनवर ने उसे टोका था, 'सरदार, तुम खोए-खोए से रहने लगे हो। मैं देख रहा हूँ कि तुम अकेले में न जाने हवा से बातें करते हो या दरख्तों से।'

हवीबा झेंप कर बोला, 'तुमने मुझे झिझोड़ कर जगा दिया, अनवर। चलो आज काले पहाड के इलाके की तरफ चला जाए।'

और धूल उडाती हुई घोडों की कतार उसी दम निकल पड़ी।

काले पहाड के दर्रे से कुध-न-कुध आता ही रहता था। कोई घटे-भर बाद दो घोड़ागाडियाँ धूल उडाती नजर आने लगी। साथ में केवल छः सवार थे।

'मालूम पड़ता है ज्यादा माल-असबाब नहीं होगा,' हवीबा बोला।

आनन-फानन ही हवीबा के दल ने उन्हें घेर लिया। बाघी में अग्रेज औरतें थी जो लंडीकोतल वापस जा रही थी। पठानों के दल को देखकर एक-दो बूढ़ी मेंमें तो वहीं बेहोश हो गईं। पीछे वाली बाघी से एक मेम हिम्मत करके उतरी। उसके ओंठों पर पपड़ी पड़ी हुई थी। उतरते ही उसने हवीबा की पहचान लिया। वह मिसेज काकरन थी।

हवीबा को देखकर उसे आस बंधी। उसने मूखे स्वर से केवल यह कहा, 'तुम हवीबा ही हो ना?'

हवीबा मुस्कराकर बोला, 'हां मेम साहब। और आप हमारे मेहमान और दोस्त मेजर साहब की मेम साहब ही हैं ना?'

सहमते हुए मिसेज काकरन ने सर हिलाया और फिर बोली, 'हम ईश्वर के लोहार की तैयारियाँ करके लौट रहे हैं।'

हवीवा हँसा, 'ठीक है मेम साहब । हम लूटने की खातिर घर से निकले हैं ।'

मिसेज काकन के प्राण सूख गए ।

हवीवा आगे बढ़ा, 'घबराओ मत, हम औरतों को नहीं लूटते । सिर्फ़ मर्दों को लूटते हैं । ये जो छः सवार तुम्हारे साथ हैं इनकी बन्दूकें हम ले सकते हैं, पर हम ये भी नहीं लेंगे क्योंकि ये आप के हाफ़िज़ बनकर जा रहे हैं । अब सवाल यह उठता है कि क्या किया जाए । खाली हाथ लौटना हमारे यहाँ खराब शकुन माना जाता है ।'

मिसेज काकन की बगल में खड़ी मिसेज जेम्स ने जल्दी से अपनी कलाई से जड़ाऊ 'वैसलेट' उतारना शुरू कर दिया । और मेमों ने भी ज़ेवर उतारना शुरू कर दिया । मिसेज जेम्स कांपते हुए बोली, 'ये लो, हम अपने ज़ेवर तुम्हें दे रहे हैं ।'

हवीवा ने हँसकर मिसेज काकन से पूछा, 'आपकी तारीफ़ ?'

मिसेज काकन बोली, 'आप कैप्टिन जेम्स की मेम साहब है । इन्हीं की बचची की आपने दो हज़ार की फ़ेरी लौटा दी थी ।

हवीवा ने मुस्करा कर मिसेज जेम्स को सलाम किया, 'अपनी बचची को हमारा प्यार कहिएगा मेम साहब । वह गुड़िया कैसी है ? उस दिन देखकर मुझे लगा जैसे वह मुरझाई हुई गुलाब की कली हो ।' फिर इधर-उधर देखकर बोला, 'मुझे बड़ा अफ़सोस हो रहा है कि आप लोग हवीवा को इतना ज़लील समझते हैं । हम फिर भी खाली हाथ तो जाएँगे नहीं, यह बात भी तय है । एक मशवरा आया है दिमाग में, आप कहें तो अर्ज करें ।

सब मेमों की टाँगें कांपने लगी थीं । मिसेज काकन ही ने हिम्मत करके कहा, 'कौन सा मशवरा आया है आपने दिमाग में ?' हवीवा दिल्दगी के मूड में था । वह मुस्करा कर बोला, 'मेजर साहब को आपने जो केक भिजवाया था उसका एक टुकड़ा उन्होंने मुझे भी पेश किया था । सचमुच आज भी जब उसका ज़ायका याद आता है तो मैं चटखारे लेता हूँ । अगर आप के पास केक हो तो मुझे दे दीजिएगा । पर हम केक भी आपसे छीनेंगे नहीं । सिर्फ़ माँगेंगे ।'

सब की शकल पर वापस खून दौड़ने लगा । उत्तेजित होकर मिसेज

जेम्स बोली, 'मेरे टिफन की टोकरी में पूरा का पूरा केक पड़ा है। आप जरूर ले लीजिए।' वह भाग कर गई और केक उठा लाई।

मिसेज काफ़न बोली, 'अफसोस, मेरा वाला केक रास्ते में फुरं हो गया पर मैं वादा करती हूँ कि अगर सुभीता हुआ तो आप को एक क्या दो केक बनवा कर भिजवा दूँगी।'।

हबीबा ने केक ले लिया। फिर हँसकर बोला, 'इसकी ऐवज में हम आपको क्या दे सकते हैं।'।

सब घबराहट मिली खुशी से बोली, 'हमें कुछ भी नहीं चाहिए। हमें कुछ भी नहीं चाहिए।'।

हबीबा बोला, 'अच्छा तो इसकी ऐवज में हम आप को दरें के आखरी छोर तक हिफाजत से छोड़कर ही वापस जाएँगे।'।

सब ने एक दूसरे की तरफ देखा। हबीबा का सुन्दर रूप और पत्थर जैसा तराशा शरीर उनकी आँखों में बस गया।

दरें के छोर पर छोड़ते हुए हबीबा बोला, 'आपको एक मशवरा और देता हूँ। सूरज ढलते वक़्त कभी आइन्दा सफ़र मत कीजिएगा। और मेजर साहब और कप्तान साहब को मेरा सलाम कहिएगा।'।

रास्ते में मिसेज काफ़न से मिसेज जेम्स ने कहा, 'मेरी बड़ी तमन्ना थी कि हबीबा को देखूँ। आज वह भी पूरी हो गई। हबीबा 'एडोनिश' जैसा सुन्दर है और हिरन के बच्चे जैसा कोमल दिल रखता है, यह मैंने आज देखा।'।

सब की सब हबीबा के गुण गाती हुई वापस लौट आईं। घर पर आकर जब यह वाक़या सुनाया तो आफ़िमसं मैस में मेजर काफ़न ने शराब का जाम उठाकर कहा, 'यं पेग हम अपने दोस्त और दुश्मन हबीबा के लिए पीएँगे।'।

सबने गिलास टकराने हुए कहा, 'टू हबीबा, आवर फ्रैंड एंड एनिमी।'।

गुलसमन जब मेले से लौटकर आई तो उसे खुशी भी थी और रंज भी । खुशी तो इस बात की कि महजवीं की ओर से कोई शोला नहीं भड़का था वल्कि एक नफ़रत की चिनगारी उड़ी थी जिसे सुनकर गुलसमन को भी अपना सिर नीचा करना पड़ा । और दुख इस बात का हुआ कि कवीले का होने वाला सरदार इस कदर गिर रहा है कि जा-वेजा तक का इम्तयाज़ नहीं रहा । गुलसमन सीधे नूरा के घर पहुँची तो पता लगा कि वह शायद पेशावर गया हुआ है ।

गुलसमन लौट कर आई और उसे सहसा पेड़ के नीचे पोटली दवाने वाली बात याद हो उठी । वह रात को करवटें बदलती रही और फिर आधी रात के बाद उठकर उस जगह को बेलचे से खोदने लगी । करीब आधा घंटे बाद वह इस काम को अंजाम दे सकी । जब पोटली उठाई तो उसमें चाँदी के टकसाली रुपये भरे थे । जल्दी से उसने गड्ढा भर दिया, और पोटली घर में ले आई । दूसरे दिन जब उसकी माँ बाजार से सौदा-मुलफ लेने गई तो गुलसमन ने रुपये गिने । पूरे दो हजार रुपये थे ।

गिनने के बाद वह पशोपेश में पड़ गई कि अब क्या किया जाए । उसने फँसला किया कि वह रुपयों की पोटली को नूरा के घर के ऐन सामने वाले पेड़ के नीचे दाव आएगी । वहीं लकड़ी का तख्त बिछाए सरदार हिलाल खाँ बैठ कर हुक्का पिया करते थे और गाँव वालों से इधर-उधर के हालचाल सुना करते थे ।

रात को गुलसमन ने रुपयों की पोटली को सरदार के तख्त के नीचे गाड़ दिया और फिर ज़मीन चौरस करके वापस आ गई ।

दोपहर को वह ईदू खाँ को बेचैनी से ढूँढ़ रही थी । आखिर नूरा पेशावर किस वजह से गया है उसे यह फिक्र लगी हुई थी । ईदू खाँ नूरा का बचपन का दोस्त था ।

जब नूरा पेशावर गया था तो ईदू तक को उसने यह राज़ नहीं बतलाया था । ईदू को इस बात से मलाल हुआ । वस दुबका-चोरी उसके पीछे-पीछे चल दिया था । नसीर खाँ के साथ क्या-क्या नूरा ने गुल खिलाए यह सब देख रहा था । ईदू समझ गया कि नूरा हवीवा की नफरत में अंधा हो गया है और वह कवीले का ईमान तक बेचने पर उतारू हो गया है । ईदू नूरा

का खास दोस्त था। नूरा ने ही उसे एक दुनाली भेंट की थी। ईदू ने यह भी जमीर की तराजू में तोल कर देखा था कि हबीबा स्वाह दुश्मन नहीं, पर है जांबाज बहादुर। ईदू भी बहादुरी का कद्र मनारा था। कैप्टिन जेम्स की बेटी वाला क्रिस्ता वह भूला नहीं था। उसके दिल से हबीबा के लिए बाह-बाह निकली थी। और आज ईदू देख रहा है कि नूरा अपने बुजुर्गों के कफन तक के सौदे कर रहा है। ईदू ने अलग होने का तहय्या कर लिया था। नूरा के लौटते ही ईदू ने भारी मन से उसमें पूछा, 'कहाँ गए थे सरदार?'

नूरा ने चौंककर कहा, 'पेशावर गया था ईदू। मेरा इरादा अब फल की दुकान करने का है। लूटा-खसोटी में कुछ भी नहीं रखा है।'

ईदू मांस भर कर बोला, 'ये तुमने नेक बात सोची सरदार। बाकई लूटा-खसोटी में क्या रखा है।' और उसने दुनाली उठाकर नूरा को वापस देने हुए कहा, 'आपकी अमानत लौटा रहा हूँ सरदार।'

नूरा चौंका, 'तो क्या तुम मेरे माय पेशावर में हाथ बँटाओगे?'

ईदू ने भराए गले से कहा, 'नहीं सरदार, आपका हाथ बँटाने तो उका-खेल का नसीर खाँ आपको मिल ही गया है। मैं कुछ न कुछ कर नूंगा।'

नूरा ने तड़पकर ईदू के मुँह पर तमाचा मारा। 'तो तू मुखबिरी और जामूमी भी करने लगा है!'

ईदू ने ओठ के किनारे से खून पोछने हुए कहा, 'मेरी ऐसी कहीं हिम्मत कि मुखबिरी करूँ सरदार। मुखबिरी बड़े-बड़े लोग ही कर सकते हैं।' और ईदू वापस लौटने लगा।

नूरा माँप जैमी आँखों से उसे देखता रहा।

जाने बख्त ईदू बोला, 'सरदार, मैं कुरान प्ररीफ की कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे इन राज को बिमी को भी नहीं बताऊँगा।'

ईदू आज उदान अपने घर की देहरी पर बैठा था कि गुलमनन आ गई। गुलमनन ने उसकी तबियत उचाट देखी। 'क्यों ईदू भाई, नूरा कहीं गया है?' उसने पूछा।

'नूरा पेशावर में फलों की तिजारत करने वाला है और शानद वहीं बस भी जाएगा,' ईदू बोला।

गुलसमन पर मानो विजली गिर पड़ी हो। कुछ देर इधर-उधर की बात करके उसने डरते हुए दो हजार रुपयों की बात छोड़ी। यह सुनकर ईदू चौंक पड़ा और बोला, 'हवीवा कितना नेक और बहादुर है गुलसमन। ये मैंने आज जाना। ऐसे बहादुर के साथ रहने में कितना गरूर होगा मुझे।'।

ईदू ने दो हजार वाली बात गुलसमन को बतला दी। गुलसमन भारी मन से सब कुछ सुनती रही।

ईदू खाँ अपना घोड़ा लेकर उरकजई कबीले की ओर उड़ा जा रहा था। आज उसने तय कर लिया था कि वह हवीवा के गिरोह में मिल जाएगा। नूरा उसका बचपन का दोस्त जरूर था पर ईदू को अब अहसास होने लगा था कि नूरा सच्चाई का रास्ता छोड़कर ग़लत मंज़िल की ओर बढ़ने लगा है। शराब, जुआ और बाज़ारू भीरतों का चस्का नसीर खाँ लगा ही रहा है जिससे नूरा हमेशा-हमेशा के लिए कबीले से छिन जाएगा। ये बातें मन में निबेड़ता हुआ ईदू घोड़े पर सरपट जा रहा था। उसके पास सिर्फ एक तलवार थी जो उसके अब्बा की यादगार थी। नूरा की दुनाली बन्दूक उसने लौटा दी थी। बन्दूक दे देने से उसे लगा जैसे उसका एक हाथ कट गया हो।

उरकजई कबीले से थोड़ी ही दूर हवीवा का खास मुखद्विर परचम खाँ उसे रास्ते में मिला। परचम खाँ की याददाश्त बड़ी तेज़ थी। राज़ को पचाने का हाज्मा भी बहुत अच्छा था। आसपास के कबीलों की हरकत और उनके सरदार एवं साथी के नाम उसे रटे पड़े थे। ईदू को देखकर फ़ौरन ही परचम खाँ ने अंदाज़ लगाया कि हो न हो ईदू खाँ हवीवा से मिलने जा रहा है। उसने घोड़ा मोड़कर दूसरे रास्ते पर डाल दिया।

हवीवा बरगद के नीचे अपने साथियों से सलाह-मशवरा कर रहा था। परचम खाँ ने पास आकर घोड़ा रोका और बोला, 'सरदार, नूर खाँ का

ख़ास दोस्त ईदू खाँ आ रहा है। ये तो आप जानते ही होंगे कि नूर खाँ आजकल पेन्नावर में घुसपैठ कर रहा है।'

हबीबा ने सोचते हुए सर हिलाया।

'मुझे तो इसमें कुछ चाल नजर आती है,' अनवर बोला।

'देखेंगे, पहले ईदू को आने तो दो,' हबीबा बोला। थोड़ी ही देर में उम्रे घोड़े की टाप सुनाई देने लगी। सब सँभलकर बँठ गए।

ईदू खाँ घोड़ों से उतर कर आया और सलाम करता हुआ बोला, 'सलाम वालेकुम, सरदार।'

'वाल कुम अस्सलाम, ईदू खाँ' मुस्कराकर हबीबा बोला।

ईदू खाँ अपना नाम हबीबा के मुँह से सुनकर चौंका, पर उसने अचरज को जाहिर नहीं होने दिया।

ईदू खाँ बोला, 'सरदार, मैं पहले नूर खाँ का ख़ास दोस्त और बचपन का साथी था। अफसोस, नूर खाँ के पाँव डगमगा गए हैं। मुझे अहसास हुआ कि मुझे उससे अब अलग हो जाना चाहिए। उसकी दी हुई बन्दूक को मैंने उसे वापस कर दिया है। मैंने ये भी तहय्या कर लिया है कि जाँ भी नया काम वह पेशावर में शुरू करने वाला है उसमें मैं शिरकत नहीं कर सकता।'

बीच में बात काटते हुए परचम खाँ बोल पड़ा, 'पेशावर में कौन-सा नया काम करने जा रहे हैं तुम्हारे दोस्त?'

ईदू खाँ उसकी आँखों में आँख डालता बोला, 'खान, मैंने बरमाँ नूर खाँ का नामक खाया है। एक दोस्त का फ़र्ज है कि दूसरे दोस्त को ग़लती को ढककर रखे। मैंने उसे समझाया तो नूर खाँ ने मेरे मुँह पर भरपूर तमाचा मारा। मैं तमाचे को बरदाश्त कर गया।'

परचम खाँ फिर बोला, 'पर नया काम कौन-सा है जो वह करने गया है?'

ईदू खाँ धीरे से हँसा, 'मैंने कहा ना। उसका ऐव ढकना मेरा फ़र्ज है। वह ग़लत रास्ते पर चल रहा है पर कभी न कभी उसे अकल आएगी।'

हबीबा बोला, 'मेरे पास किस मुद्दे से आए हो, खान?'

ईदू खाँ ने जवाब दिया, 'मैं बहादुरी का इत्दान हूँ, सरदार। मैंने'

आपकी वहादुरी को परखा है। इसके अलावा आपका किरदार भी इस कदर ऊँचा है कि दुश्मन तक आफ़री कहने पर मजबूर हो जाता है। क्या आप मुझे अपने गिरोह में शामिल करना गवारा समझेंगे ?'

एक सन्नाटा छा गया। सबकी आँखें हवीबा की ओर लगी थीं।

'ईदू खाँ, तुम साफ़गो आदमी हो,' हवीबा बोला, 'मैं साफ़गो आदमी की इज्जत करता हूँ। मुझे तुम्हें अपने गिरोह में शामिल करने में कोई उज्र नहीं है पर एक दरखास्त में ये जरूर कहूँगा कि तुम एक सच्चे दोस्त का फ़र्ज अदा करो तो ज्यादा बेहतर होगा। नूर खाँ के कदम अगर बहक गए हैं तो उसे इस वक़्त तुम्हारी मदद की सख़्त जरूरत है। तुम्हारा फ़र्ज है कि हज़ार बातें सुनकर भी उसको सही रास्ते पर लाओ।'

ईदू सुनता रहा। हवीबा ने पास आकर उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम ये मत समझना कि मैं तुम्हें बहलाकर टाल रहा हूँ। अगर तुम्हें इसी में तस्कीन है तो तुम आज से ही गिरोह में शामिल हो जाओ। पर हक़ बात कहने पर कोई हर्ज़ नहीं। तुम्हें पहचानकर ही मैंने ये बात कही है दोस्त।'

ईदू खाँ ने जवाब दिया, 'शुक्रिया सरदार, आपकी सलाह नेक है। मैं नूर खाँ को समझाने फिर जाऊँगा। इसके अलावा जो ख़बर तुम्हारे फ़ायदे की होगी वह भी तुम्हें जरूर पहुँचाऊँगा।'

ईदू खाँ सलाम करके वापस चलने लगा।

'ठहरो ईदू खाँ,' हवीबा बोला, 'तुमने दोस्ती का हाथ बढ़ाया है तो हमें भी तो कुछ दोस्ती का फ़र्ज अदा करने दो। नूर खाँ को ये भी समझाना कि हम दोनों के अब्बा दोस्त हैं, दोनों कबीले दोस्त हैं। नूर खाँ की हरकतों को मैं पसन्द नहीं करता। मेरी उससे कोई जाती दुश्मनी नहीं है।' फिर हाल ही में अंग्रेज़ी चौकी से छीनी हुई एक राइफल उठाकर हवीबा ने ईदू खाँ को देते हुए कहा, 'ये हवीबा की तरफ़ से एक नज़राना है दोस्त। इसे कबूल करो।'

ईदू खाँ अवाक़ रह गया। उसका गला भरपिया, 'सरदार, एक पठान की इससे ज्यादा इज्जत और कुछ नहीं है। मैं आपकी इस राइफल की क़सम खाकर कहता हूँ कि ये राइफल तुम्हारी ही तरफ़ से गरजेगी। मैं

तुम्हारा नमक-हलाल दोस्त हूँ ।’

हबीबा से हाथ मिलाकर ईदू खाँ घोड़े पर बैठकर चल दिया । कंधे पर हबीबा की राइफल टेंगी हुई थी ।

ईदू खाँ सोचता जा रहा था, ‘बहुत भारी बोझ तुमने मेरे कंधे पर रख दिया है हबीबा । खुदा करे, इस बोझ को मैं उतार पाने के काबिल बन सकूँ ।’

जिम दिन से ईदू खाँ नूरा में जुदा हुआ था उसी दिन से उसके बाकी के साथी भी इधर-उधर हो गए । एक तो काब्रून चला गया और दूसरे ने बन्नू में नौकरी कर ली । नूरा बिल्कुल अकेला रह गया था ।

उसे बस एक ही धुन सवार थी । किसी तरह से हबीबा को पकड़वाना ।

वह घोड़े पर बैठे-बैठे इधर-उधर झांक उड़ाता रहा । उसने हबीबा के किसी भी आदमी को तोड़ने की बहुत कोशिश की, पर नाकामयाब रहा । हबीबा के आदमी हबीबा को प्यार करते थे । उन्हें कभी यह अहसास नहीं हुआ कि वे हबीबा के नीचे मातहत साथी हैं । हबीबा ने प्यार की बेड़ियाँ उन्हें पहना रखी थी । नूरा ने बहुत सर पटका पर किसी को फोड़ नहीं सका ।

तभी सहसा उसे महजबी का खयाल आया । हबीबा और महजबी की मुलाकात के वारे में उसे भनक पड़ गई थी । सहसा उसके चेहरे पर खुशी की लाली छा गई । ‘ये तो तूने सोचा ही नहीं, नूरे’ वह स्वयं अपने से बोला, ‘महजबी का नाम लेने पर तो ये खन्बीर हबीबा जहन्नूम तक आ जाएगा ।’

उसी दिन से नूरा जोड़-तोड़ बैठाने लगा, पर कामयाबी के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे ।

नूरा अकेला दरदत के साथे के नीचे लेटा सोच रहा था । उसे यह नहीं

मालूम था कि सौ गज दूर हवीवा की राइफल लटकाए ईदू खाँ भी छिपकर उसका पीछा कर रहा है। ईदू खाँ उसी दिन से उसके पीछे-पीछे साये की तरह चलने लगा था।

नूरा थोड़ी देर बाद चल दिया और पीछे-पीछे ईदू खाँ भी चल दिया। दस दिन गुजर गए पर हवीवा की कोई भी खबर उसके हाथ नहीं लग पाई थी। नूरा को पेशावर का जुआघर याद आने लगा था। शराब के जाम, जुए की वाज़ी और फिर ख़रसाना की मरमरी वाहें। पिछली बार वह अपने अब्बा हिलाल खाँ से दो सौ रुपये ले चुका था जो पेशावर में पाँच दिन में उड़ गए थे। नूरा को रुपये चाहिए थे। कहाँ से लाए वह रुपये। इसी उधेड-धुन में था। सहसा उसे हवीवा के दिए दो हज़ार रुपयों की याद उठ आई। उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। दो हज़ार में तो वह एक महीने तक दिलबोर कर ऐश कर सकता है। नूरा को बड़ी तसल्ली हुई।

रात को करीब डेढ़ बजे उसकी हवेली का दरवाज़ा चरमराया। गुलसमन को उसके आने का पता चल गया था। वह लेटी हुई करवटें बदल रही थी। न जाने उसकी नींद कहाँ चली गई थी। जब उसने हवेली के दरवाज़े की चरमराहट सुनी तो वह चौंक पड़ी। जल्दी से खिड़की से झाँककर उसने देखा। हल्की चाँदनी में उसने अंदाज लगा लिया कि नूरा बाहर निकल रहा था। गुलसमन का दिल धक्-धक् करने लगा। हो न हो नूरा अपनी पोटली निकालने जा रहा है जिसे गुलसमन ने पहले से ही निकालकर सरदार हिलाल खाँ के लकड़ी के तख्त के नीचे छुपा रखा है। काँपती हुई गुलसमन पीछे-पीछे चल दी। उनका अंदाज ठीक ही निकला। नूरा ने पोटली वाली जगह को खोदा और फिर वह भौचक्का-सा देखता रहा। वीखलाहट में वह आसपास भी खोदने लगा और जब कुछ हाथ नहीं आया तो बैठकर सोचने लगा। नूरा अपने दिमाग में पेशावर के सपने सँजोए बैठा था और इधर पोटली ही नदारद हो गई है। नूरा सहसा उठा और दाँत पीसने लगा। हल्की चाँदनी में उसका चेहरा विकृत लगने लगा।

उसने इधर-उधर देखा और फिर बाज़ार की तरफ़ चल दिया। बाज़ार पहुँचकर वह ग़ेख़ रमजान की दुकान के पास रुका और फिर पीछे जाकर उसने सेंध लगानी शुरू कर दी। कोई आधे घंटे के अंदर उसने काफ़ी बड़ा

उदर बना लिया और फिर वह अदर घुम पडा ।

गुलसमन यह देखकर काँप उठी, 'नूरा, चोरी करने लगा है । कबीले के सरदार का बेटा और एक जनील चोर !' कुछ ही देर बाद नूरा बाहर आया । वह नगे बदन था । अपने कुरते में उसने पैमे भर रखे थे । दुकान के चोरी करके वह चला गया ।

गुलसमन घंटों तक विस्तर पर पड़ी रोती रही । दूसरे दिन कबीले में शहाकार मच गया । आज तक कबीले में कभी चोरी नहीं हुई थी । शायद यह पहला मौका था जब चोरी की वारदात हुई हो । सब तरफ चोरी के चर्चे होने लगे । स्वयं सरदार हिलाल खाँ मौके वारदात पर आए और आश्चर्य में देखने रहे । एक अनहोनी हुई थी कबीले में ।

गुलसमन शाम को ईदू के घर पहुँची और उसने मारा चश्मदीद वाकया उसे सुना डाला । ईदू मुनकर उदास हो गया ।

'नूरा को यह क्या होता जा रहा है, गुलसमन,' वह दुखी स्वर में बोला, जब से वह पेशावर की हवा खा आया है, बदलता जा रहा है !'

एक-दो दिन के बाद नूरा पेशावर चल दिया । शेष रमजान की दुकान से उसे सौ रुपये नकद और कुछ चाँदी के जेवर मिले थे । नूरा खुश था । ईदू उसके पीछे-पीछे साये की तरह लगा हुआ था ।

सबसे पहले नूरा ने बाजार में जाकर चाँदी के जेवर बेच डाले, जिनके उसे चालीस रुपये मिले । इसके बाद वह गुनगुनाता हुआ नसीर खाँ के नकान पर पहुँचा । नसीर खाँ ने तपाक से उससे हाथ मिलाया, 'आओ नूर खाँ, क्या खबर लाए हो ?'

नूरा ने कहा, 'हकीमा का पता अभी नहीं चल पा रहा है खान । पर मुझे एक तरकीब सूझी है, उसी के बारे में तुमसे सलाह-मशवरा करना है । मेहतर है कि हम कुछ जाम ढालने के बाद गुप्तगू करें ।'

नसीर खाँ ममझा कि नूरा फिर से उसके पीसे खर्च करवाने आया है । वह कुछ अनमना-सा हुआ पर इसी बीच नूरा जेब खनखनाता हुआ बोला, 'पैसे की फिक्र न करो, खान । आज तुम मेरे मेहमान हो ।'

नसीर खाँ ने आँखें छोटी करके उसे देखा और फिर साय हो लिया ।

'चलो आज तुम्हें एक और बढ़िया जगह ले चलूँ,' नसीर खाँ ने कहा ।

बोला । नूरा का चेहरा खिल उठा । नसीर खाँ उसे एक बढ़िया नाचघर में ले गया । मेजों के आसपास सिगरेट का धुँआ इतना घना था कि लगता था कि आवारा बादलों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ हॉल में तैर रही हों । स्टेज पर एक खूबसूरत लड़की नाचते हुए गा रही थी । उसका सीना और कमर ही ढका हुआ था, बाकी हिस्सा सब नंगा था । स्टेज के किनारे से कभी उस पर नीली रोशनी पड़ती तो कभी लाल । रोशनी पड़ने से वह और भी खूबसूरत लगने लगती ।

नूरा ने आज पूरी बोटल और तंदूरी मुर्गा मँगवाया था । एक मेज छोड़कर ईदू बैठा हुआ शरबत के घूंट भर रहा था ।

‘तुम कुछ तरकीब बता रहे थे नूरा भाई,’ नसीर खाँ बोला ।

‘हाँ, पर वह तरकीब मैं वाद में बताऊँगा,’ नूरा बोला, ‘दीवारों के भी कान होते हैं दोस्त ।’

घंटे भर वाद वे दोनों ही नशे में हो गए थे । नसीर खाँ उसे अब रुखसाना के पास ले चला था । रुखसाना को आने में देर थी इसलिए वे दोनों बैठे इन्तजार करने लगे । नसीर खाँ को बस एक ही रट लगी थी, ‘तो कौन-सी तरकीब है वह नूरा भाई?’

नूरा हँसा और बोला, ‘हवीवा का इश्क महजवीं से चल रहा है, खान । अगर महजवीं के नाम से उसे बुलवाया जाए तो हवीवा जरूर आएगा । बाक्री का जाल तुम बुन डालो ।’

नसीर खाँ ने गम्भीर होकर ‘हूँ’ कहा । ‘ये महजवीं है कौन नूरा भाई? उसने पूछा ।

नशे की झुनक में नूरा ने सब किस्सा बतला दिया और फिर दाँत पीसकर बोला, ‘उस फुलझड़ी से मुझे भी बदला लेना है खान । इन्शाअल्लाह कभी न कभी तो मेरे पहलू में आएगी ही ।’

नसीर खाँ पुराना जालसाज था । उसने बात को समझा और फिर वह कुलावे भिड़ाने लगा । थोड़ी देर बाद नूरा को रुखसाना के पास छोड़कर वह चल दिया ।

नसीर खाँ सीधा घर गया और सो गया । सुबह उठकर वह थाने पहुँचा और दारोगा से सलाह-मशवरा करने लगा । दारोगा पुराना घाघ था । सारी

दास्तान मुनकर बोला, 'अगर य बात सच है तो काम बन सकता है। पर मारी ऊँच-नीच को तोलना पड़ेगा। जरा-सी चूक में सारा खेल बिगड़ सकता है।'

दारोगा ने अपने दो चुने हुए मुखविर भेजे थे। महजबी का पता और उमके भाई गुलफाम की आदतें वे देख रहे थे। उन्होंने यह भी पता लगा लिया था कि पिछली बार हबीबा और महजबी मेले में मिले थे और उन्हें मिलवाने में महजबी के भाई गुलफाम का हाथ था। पूरा पड़्यत्र दारोगा ने अपने हाथों में ले लिया। महजबी की चाल-ढाल, कपड़ोंकी पसन्द, जेवर की पसन्द - सब कुछ उमने पैमा खर्च करके पता लगाया था। उसे पता चला कि महजबी लाल रंग के मखमल का लिबास बहुत पसन्द करती है। हाल ही में शाह नजीर के मजार का मेला फिर होने वाला था। दारोगा सत्रकें हो गया था। उसने महजबी के कपड़े सीने वाले दर्जों तक का पता लगा लिया था। नमीर खाँ को भेजकर उसने हू-ब-हू वैसे ही कपड़े मिलवाए थे। इसके बाद वह चौकप्रा होकर मेले का इन्तजार करने लगा। नसीर और नूरा भी माजिश में शामिल थे। इनके अलावा चार-पाँच सिपाही भी मुस्तैद थे।

आखिर मेला आ ही गया। हबीबा को गुलफाम ने ही खबर करवाई थी कि वह शाह नजीर के मेले में उसके साथ खाना खाए। हबीबा खुद भी महजबी से मिलने को बेकरार था। हबीबा अपने चार-पाँच साथियों के साथ चल निकला। गुलफाम के साथ लाल मखमल में उसने महजबी को दूर से देख लिया था। हबीबा मुस्कराया। वह महजबी को तग करके फिर मिलना चाहता था। आखिर इन्तजार का मजा भी तो कुछ मायने रखता है। उधर दारोगा और उसके साथी गिद्ध जमी नजरो से सब कुछ देख रहे थे।

पहली बाल दारोगा ने यह चली कि चार आदमी और दो औरतों को गुलफाम और महजबी के पास भेजा जिन्होंने सादगी से कहा कि हबीब खाँ बड़े रहट के पीछे उनका इन्तजार कर रहे हैं। महजबी की आँखों में चमक आ गई। गुलफाम और महजबी अपने साथियों के साथ रहट की तरफ चल दिए। रहट पश्चिम की तरफ लगा था।

हबीबा उम वक्त चाँदी के पायजेव खरीद रहा था कि दारोगा की एक

मुखविर औरत ने पास आकर कहा, 'सरदार हवीवा खाँ, महजवीं बानो आपका इन्तजार कर रही हैं।' हवीवा ने चौंककर उसे देखा। तभी उस औरत ने मेले के एक छोर पर छोटी-सी पहाड़ी पर मखमल के लिबास में महजवीं को देखा। जैसे ही हवीवा ने उधर देखा, उसे महजवीं ने हाथ उठाकर सलाम किया।

हवीवा तड़प उठा और लम्बे-लम्बे डंग भरता हुआ पहाड़ी की ओर बढ़ने लगा। पहाड़ी पर पहुँचते ही उसने महजवीं को पीठ करे देखा। वह समझा कि महजवीं रुठी हुई है। पहाड़ी सुनसान थी। सिर्फ नीचे मेले की बहार फैली थी। उसने जाकर महजवीं के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'नाराज हो न, हो महजवीं? मैंने तो बहुत पहले तुम्हें देख लिया था। सुख मखमल में तो तुम कयामत ढाती हो।' और हवीवा ने महजवीं के कंधे पकड़कर उसे अपनी ओर किया।

चेहरा देखते ही हवीवा को विजली का करेंट जैसा लगा।

वह औरत महजवीं नहीं थी!

हवीवा सिर्फ इतना कह पाया, 'कौन हो तुम?' कि पीछे से दस आदमियों ने झपटकर उसे दबोच लिया। लाल मखमल की पोशाक में रखसाना उनके साथ आई थी। आनन-फानन उन्होंने हवीवा का मुँह बाँध लिया और पहाड़ी के उस तरफ खड़ी गाड़ी में उसे डाल लिया। उसे ले जाते वक्त नूरा हँसकर बोला, 'सलाम वालेकुम सरदार हवीव खाँ साहब।'

नूरा फिर दारोगा से बोला, 'महजवीं कहाँ गई हुजूर? उसे भी साथ ले चलना है।'

दारोगा ने डपटकर कहा, 'वको मत। उससे वाद में जैसे चाहो तुम निबट लेना। मुझे हवीवा चाहिए था सो मिल गया। अब देर बिल्कुल नहीं करनी है, नसीर खाँ। भाग चलो।'

नूरा 'महजवीं महजवीं' की रट लगाए वड़वड़ाता रहा। सब जल्दी से गाड़ी में बैठकर निकल गए। सिर्फ ईदू खाँ छपा हुआ सब तमाशा देख रहा था।

ईदू अकेला था। उसके दिमाग में तूफान सा खड़ा हो गया। फिर वह पलट कर मुड़ा। भीड़-भाड़ में गुलफाम और महजवीं को ढूँढ़ना फूस के ढेर

मे मुई ढूँढने के बराबर था। ईदू ने बकन खराब करना ठीक नहीं समझा। वह घोड़ा लेकर चल दिया। उसे मानूम था कि दर्रा पारकर के आगिर वे लोग हबीबा को पेशावर ही ले गए होंगे। वह मीघा पेशावर की तरफ चल दिया। सफर लम्बा था और काम जोखिम का था।

दूसरे दिन ईदू खाँ नसीर खाँ के घर के पास भेंडराता रहा। घर के सामने वाली दर्जी की दुकान पर वह बैठा रहा। रात को ग्यारह बजे के करीब नसीर खाँ और नूरा हँसते हुए वापस आए।

‘तुम्हें अपना शिकार तो मिल गया, खान,’ मोटी जवान से नूरा बोला, ‘मेरे शिकार का भी खयान करो ना।’

‘घबराओ मत, सबके काम बनेंगे,’ नसीर खाँ बोला।

ईदू खाँ थाने हो आया था। वहाँ हवानात में हबीबा बन्द नहीं किया गया था। इसके बाद वह पल्टन के कोट गार्द के आस पास भेंडराता रहा। पर वहाँ घुसना मुमकिन नहीं था। उसे हबीबा का पता लगाना बहुत जरूरी था। अब वह ठीक जगह पहुँच गया था। नसीर और नूरा जरूर उगलेंगे।

करीब पन्द्रह मिनट बाद नसीर खाँ और नूरा घर में कपड़े बदल कर निकले। ईदू खाँ ने चैन की साँस ली और पीछे-पीछे चल दिया। दोनों थाने की ओर जा रहे थे। थाने के पिछवाड़े दारोगा का बचाटर था। दोनों वहाँ जाकर रुक गए और फिर नूरा को छोड़कर नसीर खाँ ने दरवाजे की नाँकन घड़घड़ाई। दारोगा घेरदार शलवार पहने आया और नसीर खाँ को देखकर बोला, ‘नसीर, हम सब कश्त्रिस्तान के पीछे मिलेंगे। वही पर बातें होंगी। हबीबा के क्या हाल चाल हैं?’

‘ठीक है हूजूर,’ नसीर बोला, ‘चार-पाँच आदमी निगरानी भी कर रहे हैं।’

इसके बाद नसीर लौटकर नूरा के पास आ गया।

थोड़ी देर बाद दारोगा मुफती कपड़ों में निकला और वे तीनों चल पडे। अंग्रेजों के कश्त्रिस्तान के पास ही एक मावेदार पेड के नीचे वे जम गए। ईदू मिमटता हुआ पास की कन्न की ओट में बैठ गया। नसीर ने सहमते हुए कहा, ‘अब हूजूर ही आगे की स्कीम बतलाएँगे।’

दारोगा ने मूछों पर ताव देते हुए कहा, ‘ये तुम्हारा जमूरा जो है ना

वह एक नम्बर का उल्लू का पट्ठा है। चलते वक्त साला अपनी लैला का रोना ले बैठा। अवे, हमें पहले असली शिकार को हासिल करना था या इस सूअर की लम्डिया को !'

दारोगा का पारा चढ़ते देख नसीर ने नूरा से कहा, 'माफ़ी मांग दारोगा जी से, नूरा।'

नूरा ने फौरन माफ़ी मांग ली। दारोगा थोड़ा पिघला और बोला, 'मुनो, अब काम ऐसे होगा। हवीवा के गुम होते ही उसका कबीले और आसपास दोस्तों में खलवली होगी। हो सकता है कुछ वफ़ादार साथी हवीवा को ढूँढ़ने भी भेस बदल-बदल कर निकलेंगे। इसका हमें फायदा उठाना होगा सबसे पहले हवीवा के कबीले में खबर भिजवाओ कि हवीवा को जका-खेल के कुछ बदमाश उठा ले गए हैं और वे दो हजार फिरौती मागते हैं। मुझे पूरा भरोसा है, हवीवा का वाप फिरौती का इन्तज़ाम करेगा। दूसरे इस वेवकूफ़ की शीरीं के कबीले में भी खबर पहुँचाओ कि वह खुद एक हजार की फिरौती लेकर अपने भाई के साथ पोशीदा तरीके से यहाँ आए। एक हजार हम रखेंगे और लड़की ये ले ले, हमारी बला से। इसके बाद ही हवीवा की गिरफ्तारी का राज़ सरकार को बतलाया जाएगा। और दो हजार का इनाम और तमगा हमें मिलेगा और तुम्हारा मेहनताना हम देंगे।'

नसीर सर हिलाकर बोला, 'वाह हज़ूर मान गए आपके दिमाग को।'

नूरा भी बड़ा प्रभावित हुआ और सर हिला-हिलाकर बात की गहराई को सोचता रहा।

'तो इसका मतलब ये हुआ हज़ूर कि हवीवा कुछ दिन और उस जगह पर रखा जाएगा?' नसीर बोला।

'विलकुल' दारोगा बोला, 'और उसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारी है मियाँ।'

'अजी हज़ूर फ़िकर ना करें' नसीर बोला, 'मक्कखी तक वर्ग़ मेरी रज़ा के हवीवा के पास नहीं पहुँच सकती।' इसके बाद मीटिंग खत्म हुई। ईदू समझ गया कि हवीवा के पास जाने लिए उसे नसीर का पीछा करना पड़ेगा। नसीर और नूरा छावनी के बाजार की ओर हो लिए। कुछ दूर चले होंगे कि कैप्टन जेम्स सामने से आता दिखाई दिया। उसे देखते ही नूरा को साँप सूँघ गया। उसने आब देखा न ताव और वह भागकर पास की दुकान के

बगल में रखे सामान के ढेर में छुप गया। नमीर हक्का-बक्का सा देखता रहा। इधर ईद्रू कैप्टिन जेम्स को पहचान गया। यह वही साहब था जिसकी बेटी को नूरा ने उठाया था और हबीबा ने आकर फिरीती भी लौटा दी थी। ईद्रू को आस बंधी कि अगर कैप्टिन जेम्स को किसी तरह यह बतला दिया जाए तो कम से कम हबीबा सरकारी कैदखाने में आ जाएगा और नूरा को यहाँ जमना मुश्किल पड़ जाएगा। यह सब सोच समझ कर ईद्रू कैप्टिन जेम्स के पीछे-पीछे चल दिया। कैप्टिन जेम्स अफसर मँस जा रहा था। वह मँस का सेक्रेटरी था और अकसर सामान वगैरह चेक करने निकल पड़ता था। ईद्रू मँस के पिछवाड़े होकर घुसा और बावर्चीखाने के पास ही एक झाड़ी में बैठ गया। आबदार जबर खाँ पीछे से देगची साफ करते हुए आ रहा था। झाड़ी में खड़-खड़ सुन कर उसके कान खड़ हुए और उसने सारम-सौ गइँन सम्बी करके देखा तो ईद्रू मँस की तरफ देख रहा था। हाल ही में मँस का एक पतीला गायब हो चुका था और उसकी चोरी का हाल बावर्ची और आबदार छुपा गए थे। वर्ना पचास तरीके में और जलील होते। उन दोनों ने बेहतर यही समझा कि जेब से पैसे भर कर मामला दबा दिया जाए। जबर खाँ ईद्रू के ऊपर ऐसा झपटा जैसे विल्ली कबूतर पर झपटती है। 'आज आया पकड़ में ग्योचे?' जबर खाँ बोला, 'सच बता पतीला भी तू ही ले गया था न?'

ईद्रू घबरा गया और फिर बोला, 'खान, मेरी बात सुनो। मैं आपसे इम्दाद माँगने आया हूँ।'

'हूँ, इम्दाद माँगने आया है! और बावर्चीखाने के पास बर्तन ताक रहा है।' जबर खाँ पुराना राग छेड़ता हुआ बोला, 'किस कबीले का है खान?'

ईद्रू सितपिटा कर बोना, 'खान मैं कुरान शरीफ की कमम खाकर कहता हूँ कि मैं इम्दाद माँगने आया हूँ। हबीबा की जान खतरे में है और मुझे उसका अहमाम उतारना है।' हबीबा का नाम सुनते ही जबर खाँ की पकड़ ढीली पड़ गई।

'तुम हबीबा को कैसे जानते हो?' वह बोला, 'और उसकी जान क्यों खतरे में है, सब गुलासा बतलाओ।'

'तो क्या तुम हबीबा को जानते हो,' ईद्रू आश्चर्य से बोला।

'जानते हो ? अरे हम भी उरकज़ई कबीले का है,' जवर खाँ बोला ।
'हमारे सरदार का बेटा है हवीव खाँ ।' ईदू की जान में जान आई और उसने
सारी कहानी सुना दी । सुनकर जवर खाँ की आँखें बाहर निकल पड़ीं ।

'क्या नाम है तुम्हारा खोचे?' जवर खाँ बोला ।

'मुझे ईदू खाँ कहते हैं और मैं महमंद हूँ ।' ईदू बोला ।

'तुम हमारा दोस्त है, अजीज़ है,' जवर खाँ बोला, 'मैं तुम्हारे साथ
हूँ । चलो उधर पेड़ के नीचे बातें करते हैं । मैं तुम्हारे लिए चाय भी लाता
हूँ ।' ईदू को जवर खाँ पेड़ के नीचे ले आया और फिर बावर्चीखाने से
गरमा गरम चाय भी ले आया ।

'काम में गफलत नहीं होनी चाहिए खोचे,' जवर खाँ बोला, 'उस साले
मुखविर नसीर को मुझे दिखला दो ।'

ईदू बोला, 'ख़ान, मेरा मशवरा है कि तुम किसी तरह से हवीवा के
घर जाकर यह सब बतला आओ । हवीवा की फिरौती माँगी जाएगी, पर
फिरौती देते वक़्त ही नसीर या नूरा को काबू में करा जाएगा । यूसफज़ई के
कबीले जाकर सरदार गुलाबखाँ के बेटे गुलफ़ाम को आगाह करा जाए कि
वह अपनी बहन को लेकर यहाँ कतई न आए ।'

जवर खाँ सुनता रहा फिर बोला, 'मैं पहले हवीवा के घर जाऊँगा
और फिर उसके बाद यूसफज़ई कबीले जाऊँगा । ख़ान तुम चाहो तो मैं
में मेरे क्वाटर में आ जाओ । मैं तुम्हारी जान-पहचान कराए देता हूँ । पर
हवीवा का नाम तक मत लेना, वरना बात फूट कर अगर अंग्रेज अफसरों
तक पहुँच गई तो तुम भी धर लिए जाओगे ।'

'पर ख़ान ये जो कैप्टिन अभी-अभी घुसा है ये वही है जिसकी छोटी
बच्ची को नूरा ने उठाया था ।' ईदू बोला । जवर खाँ सोचने लगा । फिर
सर हिलाकर बोला, 'हाँ एक काम हो सकता है । नूरा को पकड़वाया जा
सकता है । मैं जेम्स साहब को खबर दूँगा पर ये काम बाद का है । पहले तो
मुझे हवीवा के यहाँ जाना होगा और फिर यूसफज़ई कबीले ।'

ईदू की जान में जान में आई । उसके मददगार मिल गए । वह अब
हवीवा की तलाश करेगा और नसीर और नूरा का पीछा करता रहेगा ।
तब तक हवीवा के कबीले में खबर भी पहुँच जाएगी । ईदू अपना बोरिया-

विस्तरा उठाकर मीम में जम गया और वहाँ से नमीर और नूरा का पीछा करने लगा।

नूरा को महजबी की बड़ी फिन्न थी। उसने नसीर से मिलकर एक उका-सेन का मुग़बिर फौरन ही महजबी के भाई गुलफ़ाम के पास भेजना चाहा। नमीर ने बात को ममझा और कहा, 'मेरे खयाल से हमें हबीबा से उसके बाप के लिए फिरौती का खत लिखवाना चाहिए और फिर उस खत में तब्दीनी कर के महजबी के नाम कर देना चाहिए। खत को देखकर ये छोकररी जरूर आनी चाहिए, अगर उसे सच्ची मुहन्बत हुई तो।'

यह मुनकर नूरा उठख पडा और नमीर के दोनों हाथ अपनी पेशानी में लगाकर बोला, 'मान गए नमीर खाँ तुमको, 'वया अकल भरी है आपके भजे में।'

उमी वक्त फागज-कलम का इन्तजाम करके वे दोनों चल पड़े। ईदू उनके पीछे-पीछे बिल्ली जैमी चाल से चल रहा था। काफी चलने के बाद एक मुनसान पगडडी पकड़े उत्तर की ओर चल दिए। थोड़ी ही देर में उन्हें एक टूटी हुई मस्जिद नजर आई। मस्जिद का सामने का हिस्सा टूटा हुआ था। पीछे का हिस्सा रहने लायक था। उस पर एक टाट का पर्दा टंगा था। मस्जिद के पीछे दो झोपडियाँ थी। एक में चाय की दुकान थी और बगल वाली झोंडी में छोटी-सी दुकान थी। दुकान के करीब सौ गज दूर पर एक छोटा-सा गाँव था जिसमें मुश्किल से सात-आठ झोंपडियाँ थी। चान की दुकान का होना यह सबूत था कि इस रास्ते से कुछ खास लोग गुजरने होंगे वना गाँव वाले कहीं से चाय का शौक करने का हीसला रख सकते हैं। बात ठीक ही थी। मलाकद की तरफ से कुछ पठान चोरी किया हुआ माल लुक-छिप कर लाते थे और चाय की दुकान पर उसके बेचने के इन्तजाम होते थे। चोरी की चीजों में पिस्तौल और बन्दूक खास माल ममझा जाता था।

नमीर और नूरा चाय की दुकान पर जैसे ही आए कि चाय वाला बूढा जाफर उठकर सलाम करता हुआ बोला, 'सलाम वालेकुम, चान साहब।'

नसीर मुस्कराया और बोला, 'सब ठीक-ठाक है, जाफर?'

'आपकी परवरिश है,' जाफर बोला। तब तक लड़के ने दो कुल्हड़े

चाय पेश कर दी। नसीर और नूरा बैठ कर चाय सुड़कने लगे।

‘और धंधा कैसा चल रहा है?’ नसीर अपनेपन से बोला।

‘क्या बताएं हज़ूर, मलाकंद की छावनी में बड़ी चौकसी होने लगी है,’ जाफ़र हाथ हिलाता हुआ बोला, ‘अब तो बड़ा माल मुह्त से नहीं आया। पिछली बार ‘मिस’ का एक बैरा चाँदी के दो कांटे उठा लाया था।’

‘घबराओ मत जाफ़र ख़ान,’ नसीर बोला, ‘थोड़े दिन में हम तुम्हें मालामाल कर देंगे। हमारा एक साथी आने वाला है मन्सूर ख़ाँ। उसने एक रैफ़ल मार दी है। जैसे ही वह आया, और हम उसे तुम्हारे पास लाए। पर अब की बार पैसे ठीक मिलने चाहिए।’

‘आप फ़िक्र न करें हज़ूर,’ जाफ़र बोला।

‘अजी, पीरावाद का ख़ान राइफ़ल के दो हज़ार रुपये देने को तैयार है। कई दफ़ा कह गया है कि एक अंग्रेज़ राइफ़ल दिलवा दो। इंशा अल्लाह, हज़ूर को ख़ूब अच्छे पैसे मिलेंगे।’

ईदू कान लगाकर सुनता रहा।

इसके बाद नसीर बोला, ‘हमारा मेहमान कैसा है?’

जाफ़र पीले-पीले दाँत निपोर कर बोला, ‘ठीक है हज़ूर। बन्दे लगा दिए हैं। बस पड़ा रहता है और सोचता रहता है। मैं भी उसकी चाय में रोज़ पोस्त मिला देता हूँ।’

ईदू समझ गया कि हवीवा को यहीं-कहीं छपा रखा है। इसके बाद ही नसीर और नूरा टाट के पर्दों के पास गए और दरवाज़ा खटखटाया। दो लम्बे-तड़ंगे पठान आए और नसीर को देखकर उन्होंने सलाम किया और दरवाज़ा खोल दिया।

थोड़ी देर बाद नसीर और नूरा खुश होकर लौटते नज़र आए। उनके हाथ में एक काग़ज भी था। ईदू ने काग़ज तो देखा पर समझ कुछ भी न पाया। बहरहाल उसने हवीवा के ठिकाने का पता लगा ही लिया।

नूरा ने हवीवा के खत पर से 'अब्बा' की जगह 'महजबी' लिखवाया और कुछ तन्दीलियाँ करा कर उसी दम जका खेल के मुखबिर को पकडा दिया। रातों-रात वह मुखबिर धोड़े पर भाग चला। मुमुफजई कबीले आकर उसने गुलफाम का पता पूछा और फिर बोला, 'सरदार, आपसे बहुत जरूरी बात करनी है। मैं हवीवा का दोस्त हूँ और हवीवा आजकल बड़ी मुश्किल में है।'

गुलफाम हवीवा का नाम सुनकर उधल पड़ा।

'कहाँ है हवीव खाँ,' वह जतावला होकर बोला।

मुखबिर बोला, 'हजूर, उसे जका खेल के कुछ लुटेरो ने अपने यहाँ बँद कर रखा है और उनका मशा फिरौती कमाने का है। एक बार हवीवा ने मेरी मदद की थी और उसका वह अहसान मुझे चुकाना है। हवीवा को पहचान कर ही मैंने उसका पीछा किया और फिर मौका देखकर ये खत में ले आया हूँ। उन्होंने मुझे आपके पाम भेजा है और ये खत बीबी महजबी के नाम दिया है।'

गुलफाम ने फौरन ही वह खत ले लिया और एक ही साँस में पढ़ डाला। मुखबिर उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव देखता रहा और फिर बोला, 'एक बात की हिदायत उन्होंने और की थी कि जोर-जबरदस्ती मुमकिन नहीं है। बेहतर तो यही है कि फिलहाल तो एक हजार की रकम लेकर आप बीबी और कुछ बफादार लोगो के साथ चुपचाप निकल चलें।'

गुलफाम हवीवा का खत देखकर काबू में आ गया था। उसने फौरन ही जाकर महजबी से मलाह की और मुखबिर को अपने एक साथी के यहाँ टिकाया। दूमरे दिन सुबह वह अपने अब्बा से शहर घूमने का बहाना करके महजबी और पाँच साथियों को लेकर चल दिया। मुखबिर उनको रास्ता बतलाता गया और वे सफर तय करके मुकाम पर आ पहुँचे।

मुखबिर ने उन्हें एक सराय में ठहरा दिया और स्वयं नसीर खाँ के पाम पहुँच गया। नसीर खाँ उसका काम देखकर खुश हुआ। पर गहबड़ यह हुई कि नूरा अपने कबीले गया हुआ था। वह रातों-रात भाग कर अपने अब्बा से कुछ रकम हड़पने गया था क्योंकि उसे महजबी को काबू करके कुछ दिन ऐशोआराम करना था।

जब नूरा वहाँ पहुँचा तो गुलसमन को खबर लग गई। उसे कुछ-कुछ आभास हो गया था। इधर ईदू भी लापता था। गुलसमन की मदद करने वाला फिलहाल ईदू का छोटा भाई करीम ही था। वह फौरन करीम के पास गई और सलाह-मशवरा करने लगी। तभी क्या देखती है कि ईदू स्वयं थका-माँदा वहाँ बैठा है।

‘अत्लाह का लाख-लाख शुक्र है ईदू भाई,’ गुलसमन बोली।

ईदू ने सब किस्सा सुनाया।

‘मैं नूरा का पीछा कर रहा था गुलसमन। इसके अलावा मुझे अपनी राइफल भी ले जानी थी। इसी राइफल के लालच में शायद जाफ़र मुझे हवीवा तक पहुँचा सके। इसके अलावा और कोई चारा नहीं है। मुझे कल सुबह महजवीं के भाई के पास भी जाना है कि वे कहीं नूरा की साजिश का शिकार न बन जाएँ। नूरा को वापस आते देख ही मैं भी चल पड़ा था।’

गुलसमन ने ईदू खाँ को हिम्मत दिलाई, ‘क्यों नहीं हमें अभी चल देना चाहिए, ईदू भाई। युसुफ़ज़ई का कवीला आखिर है ही कितनी दूर।’

ईदू बहुत थका था पर गुलसमन की मदद पाकर वह तैयार हो गया और दोनों ही चल दिए। जाने से पहले ईदू अपने दोस्त रफ़ीक को नूरा के पीछे लगा गया।

जब ईदू युसुफ़ज़ई के कवीले पहुँचा तो उसे पता लगा कि चार घंटे पहले गुलफ़ाम महजवीं, और उनके पाँच साथी पेशावर की तरफ़ गए गए हैं।

ईदू के पाँव तले ज़मीन खिसक गई। गुलसमन भी सुनकर दंग रह गई। सिर्फ़ तस्कीन यह था कि नूरा अभी कवीले में ही था।

गुलसमन ने उसी दम फैसला किया कि वह भी ईदू के साथ पेशावर जाएगी और नूरा के षड्यंत्र के खिलाफ़ लड़ेगी। उसकी आँखों में क्षोभ के आँसू आते तो कभी क्रोध के। उसे कभी सपने में भी खयाल नहीं था नूरा इतना गिर सकता है। नूरा शायद फल की दुकान का चकमा देकर सौ-दो सौ रुपये और पीटने ही आया था। रुपय काबू करके वह दूसरे ही दिन चल पड़ा था। उससे थोड़ी ही दूर पर ईदू और गुलसमन भी आ रहे थे।

पेशावर पहुँचकर जबर खाँ हवीवा के कवीले से वापस आ चुका था।

कबीले में बड़ी मरगर्मी थी। सब तरफ रोप या पर बात को दबा भी रखा था। सरदार तुर्रें खाँ फिरौती देने पर रजामन्द थे। उन्हें बम एक ही क्रिप्र खाए जा रही थी कि कहीं हबीबा अग्रेजों के हाथों नहीं पड़ जाए, वनाँ फिर उसे छुड़ाना मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने चार बड़े जीवट के आदमी जबर खाँ के साथ भेज दिए थे। जबर खाँ स्वय ईदू का इन्तज़ार कर रहा था कि आखिर इदू गया तो गया वहाँ। ईदू और गुलसमन को देखकर जबर खाँ बहुत खुश हुआ।

सबसे पहला अभियान तो हबीबा को छुड़ाना और महजर्बा को चगुल से बचाना था। ईदू दूसरे ही दिन टूटी मस्जिद के पास हबीबा के दो साथी लेकर गया। जाफर चाय की केतली भाग पर रख रहा था। सलाम-नुआ के बाद ईदू बैठ गया और उसने एक चाय माँगी। उसके माथी कुछ दूरी पर छपे थे। फिर उसने राइफल की बात छेड़ी। 'मेरा नाम मन्सूर खाँ है और मैं नसीर खाँ का दोस्त हूँ।' ईदू बोला। जाफर की आँखों में चमक आ गई। जाफर अपनापन दिखाने लगा। बातचीत में ईदू ने बतनाया कि यह राइफल उसने एक कबीले के लूटेरे से खरीदी थी जो आजकल गायब है। ये लुटेरा सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी के बराबर है क्योंकि इसे पकड़वाकर बड़े मजे में दो हजार का सरकारी इनाम और जमीन मिल सकती है।

जाफर ने कान खटे किए फिर सोचने लगा कि जो आदमी नसीर खाँ ने बन्द कर रखा है वह ही तो कहीं ये सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी नहीं है? वह दाढ़ी खुजाता हुआ बोला, 'खान, तुम आदमी को पहचान लेगा?'

'बयों नहीं मियाँ' ईदू बोला। फिर फुमफुमा कर बोला, 'सोचा मियाँ, दो हजार रुपये का सरकारी इनाम!'

जाफर बोला, 'एक आदमी हमने पकड़ रखा है। तुम उसे पहचानेगा गोचे?'

'बयो नहीं,' ईदू बोला, 'गुदा करे वह यही आदमी निकल आए तो तुम्हारे डेढ़ हजार और मेरे पाँच सौ पक्के।'

जाफर पहले सिरे का लालची और धोखेबाज़ था। इधर-उधर देखकर बोला, 'मेरे साथ आओ।' और टाट का पर्दा उठाकर उसने तीन बार दस्तक दी। अंदर से आवाज़ आई 'कौन है?'

जाफ़र धीरे से बोला, 'फ़ीरोज़ !'

दरवाज़ा खुल गया। अंदर दो लम्बे-तड़ंगे पठान बैठे ताश खेल रहे थे। ईदू को देखकर बोले, 'ये कौन है जाफ़र खाँ ?'

जाफ़र बोला, 'ये हमारा नया नौकर है जुम्मन खाँ।' ईदू ने सर हिलाया। पठानों ने उसे घूरकर देखा और उसे जाने दिया। सीढ़ी चढ़कर एक कमरे में हवीवा लुढ़का हुआ सो रहा था। कमरे के दरवाज़े पर साँकल पड़ी थी और ताला लटका हुआ था। जाफ़र ओठों पर अँगुली रखकर बोला, 'शी s s s ! देखो ये आदमी कौन है।'

ईदू ने हवीवा को देखा और फिर बोला, 'ये तो कहीं का टटपूँजिया लुटेरा लगता है। उसके तो बड़ी दाढ़ी है और इससे दुगुने वजन का होगा।'

निराश होकर जाफ़र लौट आया और ईदू से राइफल के सौदे पर बातें करने लगा।

ईदू अंदर का राज़ लेकर चल दिया और मंसूबे बनाने लगा।

जब ईदू लौटकर आया तो जवर खाँ ने खबर दी कि उसका आदमी अभी-अभी बतला गया है कि नूरा लौटकर अपने घर पहुँच गया है। ईदू बेहद थका हुआ था पर नूरा पर भी नज़र रखना जरूरी था। सो गुलसमन और हवीवा के कबीले के एक आदमी को लेकर चल पड़ा।

उसने नूरा के पीछे गुलसमन और शमशू को छोड़ दिया। दर्जी की दुकान के पास ही वे नूरा पर नज़र रखने लगे।

शाम को एक आदमी नूरा से मिलने आया और उसके साथ नूरा बहुत खुश होकर निकला। गुलसमन उस वक्त अकेली थी। नूरा वहाँ से सराय पर पहुँचा और उस आदमी को आगे करके अलग खड़ा हो गया। कुछ देर बाद गुलसमन ने देखा कि गुलफ़ाम और महजवीं उसी आदमी से बातें कर रहे हैं। गुलसमन उन्हें देखकर दंग रह गई।

कुछ देर बात करके गुलफ़ाम और महजवीं उस आदमी के साथ हो लिए। गुलसमन हिम्मत करके पीछे-पीछे चलती रही। उसके पास उसके खंजर के अलावा कुछ भी नहीं था। कुछ दूर चलकर वह आदमी गुलफ़ाम और महजवीं को लेकर एक मकान में घुसा। घुसते ही दरवाज़ा बन्द कर लिया। गुलसमन चक्कर में पड़ गई पर सहसा उसे तरकीब सूझी। उसने

अपने बड़े रुमाल में कंकड़ भरे और उभी दरवाजे पर दस्तक देने लगी। एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला।

'मैं बेगम की नौकरानी हूँ,' गुलसमन बोली, 'जो अभी-अभी अंदर गई हैं न, उन्हीं बीबीजी की। जल्दी में वे जेवर की घंटी भूल गई हैं। ये उन्हें देनी है।' जेवर का नाम सुनकर बुढ़िया ने अपने सूखे ओठों पर जुवान फेरी और अंदर आने दिया। अंदर घुसते ही गुलसमन ने कंकड़ वाली पोटली इतनी जोर से उस बुढ़िया के सर पर मारी कि वह कटे हुए पेड़ की तरह गिर पड़ी। गुलसमन ने अंदर जाकर देखा तो गुलफाम और महजबी एक कमरे में बैठे थे और नसीर खाँ का मुग्घिर बातें कर रहा था। कोई दस मिनट बाद दरवाजे पर दस्तक हुई। गुलसमन ने तब तक बुढ़िया को अंदर घसीटकर बांध दिया था और उसका बुरका ओढ़े वहाँ तैयार खड़ी हो गई थी।

गुलसमन ने दरवाजा खोला तो नसीर खाँ और नूरा नजर आए। बुर्का ओढ़े गुलसमन ने सलाम किया और हाथ से कमरे की तरफ इशारा कर दिया। नसीर बातें करता हुआ बढ़ने लगा। फिर कमरे के पास आकर धीरे से नूरा से बोला, 'तुम यही रहना। समझ गए ना?' नूरा बाहर खड़ा रहा।

नसीर खाँ अंदर पहुँचा और जाते ही उसने रुपयों की माँग की। गुलफाम ने कहा, 'पहले हबीबा से हमें मिलवाया जाए और उन्हें सौंप दिया जाए तब हम आपको रुपया देंगे।' नसीर खाँ बोला, 'ठीक है खान, हम रुपये भौंभालें और तुम अपना हबीबा। आओ पहले हबीबा से मिल लो।'।

मुग्घिर, गुलफाम और महजबी उठ पड़े। उन्हें नसीर खाँ ने आगे कर दिया और जैसे गुलफाम बाहर निकला कि बाहर खड़े नूरा ने जोर का ढंडा उसके सर पर मारा। गुलफाम 'ओह' करके गिर पड़ा। महजबी घबरा गई पर तब तक नूरा पिशाच जैसी हँसी हँसता हुआ बोला, 'बहो जानेमन, हमें पहचाना कि नहीं?'

नसीर खाँ और मुग्घिर ने गुलफाम को बांधकर कोने में डाल दिया और घंटी लेकर जाने लगे। चलते बचन नूरा से कहा, 'तुम रात-भर ऐग कर तो नूरा। कल सुबह हम इसे लेने आएँगे।' नूरा उत्तेजित भी था,

प्रसन्न भी था। काँपती हुई महजवीं को नूरा ने कमरे में धकेला और बाहर से कुंडी लगा दी।

नसीर खाँ बोला, 'ये बुरी वाली बुढ़िया अपनी ही है। यहाँ मर्जे से वक्त काटो। इसके भाई को दूसरे कमरे में बन्द करके डाले देते हैं। इसे भी कल हटाया जाएगा।' इतना कहकर नसीर खाँ गुलफ़ाम को नूरा के हवाले करके चल दिया। नूरा गुलफ़ाम को उठाकर दूसरे कमरे की तरफ़ ले चला।

नसीर खाँ दरवाज़े के पास आकर बोला, 'आज रात-भर नूरे के पास इस लड़की को रहने दो। इसका भी अरमान पूरा हो जाने दो। इसके बाद इस लड़की को कल हम तवाइफ़ों के मुहल्ले ले जाकर मर्जे से दो हजार खड़े कर लेंगे।' वे दोनों हँसे। गुलसमन सुनकर काँप उठी।

नसीर खाँ उससे बोला, 'होशियार रहना बुढ़िया। किसी भी हालत में ये लड़की घर से बाहर न निकलने पाए।'।

गुलसमन ने झुककर सलाम किया और धीरे से बनावटी आवाज़ में कहा, 'मुतमईन रहिए, हुज़ूर।'।

नसीर खाँ वापस चल दिया।

नूरा गुलफ़ाम को कमरे में डालकर वापस आया और महजवीं से हँसकर बोला, 'आज हमारी शबे विसाल मनेगी, जानेमन। मैं ज़रा बाहर जाकर दो-चार जाम चढ़ा आऊँ। फिर तो तुम हमें जन्नत की हूर लगने लगोगी।' उसने पास आकर महजवीं को अपनी बाँहों में भर लिया। महजवीं ने छूटने की कोशिश की और बड़ी जोर से उसकी अंगुली में काट खाया। नूरा तड़प उठा और उसने गुस्से में आकर महजवीं के गाल पर तमाचा मारा। महजवीं चीख उठी। फिर नूरा बोला, 'यहाँ तुम्हारी चीखें सुनने वह खन्ज़ीर का बच्चा हवीवा नहीं आ सकता। अब इन्तजार करना जानेमन। हम ज़रा शराब की मस्ती में डूबकर अभी आते हैं।' नूरा ने दरवाज़ा बन्द करके साँकल चढ़ा दी और जेब से ताला लगाकर जड़ दिया। चाबी को उसने सामने वाले आले में रखकर कहा, 'ये चाबी रखी है, पर तुम्हारा हाथ यहाँ तक नहीं पहुँच सकेगा। चाबी यहीं छोड़े जाता हूँ। पिछली बार जब हम सरूर करके लौटे थे तो चाबी कहीं गिर पड़ी थी। आज तो लौटते ही हमें चाबी चाहिए ना।' और नूरा दैत्य की तरह हँस पड़ा। जाते वक्त

दरवाजे के पाम बुर्का ओढ़े गुलसमन से बोला, 'दयाल रखना बुढ़िया । कल सुबह हम तुमको बहुत बड़ा इनाम देंगे ।'

गुलसमन ने हाथ उठाकर सलाम कर दिया ।

नूरा के जाते ही गुलसमन महजबी के कमरे की तरफ दौड़ी । महजबी उम वषत घुटनों में सर झुकाए रो रही थी । बुर्कें में छड़ी गुलसमन ने ताला देखकर कहा, 'क्या वह ताला लगा गया है ?'

महजबी ने चौंकर उसकी तरफ देखा और बोली, 'मेरी मदद करो । ये जालिम मेरी बगैर मर्जी के मुझे बरबाद करना चाहता है । चाबी उस थाने में रखी है ।'

गुलसमन ने थाने से चाबी निकाली और दरवाजा खोल दिया । महजबी भीचक देखती रही ।

सहमा गुलसमन ने बुर्का पलट दिया । महजबी उसे देखकर चौंक गई ।

'आप ?' वह बोली ।

'हां महजबी बहन, मैं ।' गुलसमन बोली, 'ये शब्रे बिसाल नूरा मेरे साथ ही मनाएगा बहन । जल्दी करो । अपने कपड़े उतार कर मुझे दे दो और मेरे कपड़े तुम पहन लो । तुम्हारा भाई बगल के कमरे में पड़ा है । उसे संभालकर तुम भाग जाओ और मुझे यहीं छोड़ जाओ । मैं देखूंगी कि मुझे महजबी समझ कर नूरा मेरा क्या हाल करता है ।'

महजबी की आँखों में आँसू भर आए, 'मैं तुम्हारा अहसान कैसे चुका सकूंगी, गुलसमन बहन ?'

गुलसमन बोली, 'जल्दी करो महजबी बहन । नूरा घोड़ी देर में वापस आ जाएगा । वह शराब पीने गया है । और हाँ, जो अहसान उतारने की बात तुम कह रही हो न, उस अहसान की कीमत भी मैं तुमसे अभी माँगे लेती हूँ ।'

'क्या ?' महजबी बोली ।

'कल सुबह यहाँ कुछ आदमी जरूर भेज देना,' गुलसमन बोली । 'बस यही अहसान काफ़ी होगा ।'

महजबी बोली, 'मैं जरूर चार पाँच आदमी भिजवा दूँगी । पर ये सब क्यों कह रही हो ?'

गुलसमन हँस कर बोली, 'नूरा जो ये नहीं मालूम है कि सुबह नसीर

प्रसन्न भी था। काँपती हुई महजवीं को नूरा ने कमरे में धकेला और बाहर से कुंडी लगा दी।

नसीर खाँ बोला, 'ये बुरकें वाली बुढ़िया अपनी ही है। यहाँ मजे से वक्त काटो। इसके भाई को दूसरे कमरे में वन्द करके डाले देते हैं। इसे भी कल हटाया जाएगा।' इतना कहकर नसीर खाँ गुलफ़ाम को नूरा के हवाले करके चल दिया। नूरा गुलफ़ाम को उठाकर दूसरे कमरे की तरफ़ ले चला।

नसीर खाँ दरवाज़े के पास आकर बोला, 'आज रात-भर नूरे के पास इस लड़की को रहने दो। इसका भी अरमान पूरा हो जाने दो। इसके बाद इस लड़की को कल हम तवाइफ़ों के मुहल्ले ले जाकर मजे से दो हजार खड़े कर लेंगे।' वे दोनों हँसे। गुलसमन सुनकर काँप उठी।

नसीर खाँ उससे बोला, 'होशियार रहना बुढ़िया। किसी भी हालत में ये लड़की घर से बाहर न निकलने पाए।'।

गुलसमन ने झुककर सलाम किया और धीरे से बनावटी आवाज़ में कहा, 'मुतमईन रहिए, हुज़ूर।'।

नसीर खाँ वापस चल दिया।

नूरा गुलफ़ाम को कमरे में डालकर वापस आया और महजवीं से हँसकर बोला, 'आज हमारी शबे विसाल मनेगी, जानेमन। मैं ज़रा बाहर जाकर दो-चार जाम चढ़ा आऊँ। फिर तो तुम हमें जन्नत की हूर लगने लगोगी।' उसने पास आकर महजवीं को अपनी बाँहों में भर लिया। महजवीं ने छूटने की कोशिश की और बड़ी जोर से उसकी अंगुली में काट खाया। नूरा तड़प उठा और उसने गुस्से में आकर महजवीं के गाल पर तमाचा मारा। महजवीं चीख उठी। फिर नूरा बोला, 'यहाँ तुम्हारी चीखें सुनने वह खन्ज़ीर का वच्चा हवीवा नहीं आ सकता। अब इन्तजार करना जानेमन। हम ज़रा शराब की मस्ती में डूबकर अभी आते हैं।' नूरा ने दरवाज़ा वन्द करके साँकल चढ़ा दी और जेब से ताला लगाकर जड़ दिया। चाबी को उसने सामने वाले आले में रखकर कहा, 'ये चाबी रखी है, पर तुम्हारा हाथ यहाँ तक नहीं पहुँच सकेगा। चाबी यहीं छोड़े जाता हूँ। पिछली बार जब हम सफ़र करके लौटे थे तो चाबी कहीं गिर पड़ी थी। आज तो लीटते ही हमें चाबी चाहिए ना।' और नूरा दैत्य की तरह हँस पड़ा। जाते वक्त

दरवाजे के पास बुर्का ओढ़े गुलसमन से बोला, 'ब्याल रचना बुझिया। कल सुबह हम तुमको बहुत बड़ा इनाम देंगे।'

गुलसमन ने हाथ उठाकर सलाम कर दिया।

नूरा के जाते ही गुलसमन महजबी के कमरे की तरफ दौड़ी। महजबी उम वक्त घुटनों में सर झुकाए रो रही थी। बुर्के में छड़ी गुलसमन ने ताला देकर कहा, 'क्या वह ताला लगा गया है?'

महजबी ने चौकर उसकी तरफ देखा और बोली, 'मेरी मदद करो। ये जालिम मेरी बगैर मर्जी के मुझे बरबाद करना चाहता है। चाबी उस थाले में रखी है।'

गुलसमन ने थाले से चाबी निकाली और दरवाजा खोल दिया। महजबी भौंचक देखती रही।

महमा गुलसमन ने बुर्का फलट दिया। महजबी उसे देखकर चौक गई। 'आप?' वह बोली।

'हां महजबी बहन, मैं।' गुलसमन बोली, 'ये शब्रे बिसाल नूरा मेरे साथ ही मनाएगा बहन। जल्दी करो। अपने कपड़े उतार कर मुझे दे दो और मेरे कपड़े तुम पहन लो। तुम्हारा भाई बगल के कमरे में पड़ा है। उसे मँडालकर तुम भाग जाओ और मुझे यहीं छोड़ जाओ। मैं देखूंगी कि मुझे महजबी ममझ कर नूरा मेरा क्या हाल करता है।'

महजबी की आँखों में आँसू भर आए, 'मैं तुम्हारा अहसान कैसे चुका सकूंगी, गुलसमन बहन?'

गुलसमन बोली, 'जल्दी करो महजबी बहन। नूरा थोड़ी देर में वापस आ जाएगा। वह शराब पीने गया है। और हाँ, जो अहसान उतारने की बात तुम कह रही हो न, उम अहमान की कीमत भी मैं तुमसे अभी माँगे लेती हूँ।'

'क्या?' महजबी बोली।

'कल सुबह यहाँ कुछ आदमी जरूर भेज देना,' गुलसमन बोली। 'बस यहाँ अहमान काफ़ी होगा।'

महजबी बोली, 'मैं जरूर चार पाँच आदमी भिजवा दूँगी। पर ये सब क्यों कह रही हो?'

गुलसमन हँस कर बोली, 'नूरा तो ये नहीं मालूम है कि सुबह नसीर

खां मुखविर उससे छीनकर मुझे कल रंडियों को बेच देगा ।’

महजवीं के शरीर में झन्नाटा उठा । वह आंखें बाहर करके बोली, ‘ओफ़ मुझे ये नहीं मालूम था ।’

गुलसमन ने कहा, ‘ये तो नूरा को भी नहीं मालूम है ।’

महजवीं बोली, ‘मेरा कहना मानो तुम भी मेरे साथ निकल चलो ।’

‘नहीं ।’ गुलसमन दृढ़ स्वर में बोली, ‘मैं नूरा की बहसत देखना चाहती हूँ । आखिर नूरा की मैं मँगेतर भी तो हूँ न । जहाँ तक बन सकेगा मैं किसी को भी नूरा का नहीं बनने दूंगी, भले ही वह हैवान है या इन्सान ।’

महजवीं टकटकी वाँधकर गुलसमन को देखकर बोली, ‘तुम्हारी मुहब्बत एक दावा है वहन । एक हक़ है, जिसे हरेक आबरूपसन्द औरत छीनना अपना फर्ज समझेगी । यकीन रखो वहन, सुबह तुम वाइज्जत ही यहाँ से निकलोगी । कोई भी ताकत तुम्हें और किसी रास्ते में नहीं फेंक सकती ।’

महजवीं ने गुलसमन के कपड़े पहन कर कराहते हुए गुलफ़ाम को उठाया और दरवाज़े से निकल कर गुलसमन से बोली, ‘शबे विसाल मुवारिक हो गुलसमन वहन ।’

गुलसमन की आंखों से दो आँसू जवाब में ढुलक गए । कोई घंटे भर में नूरा नशे में झूमता हुआ आया । दरवाजा उसे भिड़ा हुआ मिला । ये देख नूरा नशे में होकर भी थोड़ा चौखलाया और झटके से दरवाजा खोलता हुआ कमरे की तरफ डगमगाता हुआ आया । महजवीं के कपड़ों में गुलसमन सरझुकाए बैठी थी । एक लरजती हुई शम्मा पास झिलमिला रही थी । नूरा ने आकर आले से चाबी निकाली और दरवाजा खोला । वह आकर नाटकीय ढंग से गुलसमन की ओर बढ़ा और बोला, ‘महजवीं, मेरी जान, आज तुम्हें कोई भी मुझसे नहीं छीन सकता ।’ उसने झपट कर गुलसमन को बाँहों में भरा । गुलसमन सिसकियाँ लेकर रोने लगी । उसने रोते हुए कहा, ‘इसके बाद तुम मुझसे शादी करोगे न खान ?’ नूरा चौंक कर हँस पड़ा । ‘शादी ! नहीं महजवीं, जानेमन । हम तुम से शादी नहीं कर सकते । हम तुम्हारे साथ शबे विसाल जरूर मनायेंगे । आज की रात नहीं बल्कि कई रातें । पर शादी ! नहीं — नूरा की शादी होगी तो वस गुलसमन के साथ ही । अब्बा का हुक्म है, उन्होंने जुवान दे दी है ।’

नूरा ने जेब से आधी बोतल निकाली और एक घूंट भर कर बोला, 'गुलसमन में क्या कमी है। पर तुमसे हमें बदला लेना है। हवीबा जब जेल में सड़ेगा तब हम उसको देवने जाया करेंगे।' गुलसमन यह सुनकर अवाक रह गई।

और उमे महजबी समझ नूरा उस पर टूट पड़ा।

टूटी मस्जिद के पाम ईदू राइफल लिए पहुँचा था। जाफर के मुँह में पानी आ रहा था। राइफल पर ऐंसे हाथ फेर रहा था मानो वह कोई साल भर का प्यारा-प्यारा बच्चा हो।

'बहुत बढ़िया माल है खान,' जाफर बोला।

'कितने का माल है खान,' ईदू बोला।

'घोचे, नई वाली रैफल है,' जाफर बोला, 'कसम मे तीन हजार में कम क्या जाएगी। ओफ, कितना बढ़िया माल है।'

ईदू उमे देखता रहा और फिर धीरे से बोला, 'खान, इमकी एवज में हमारा काम करेगा।'

जाफर को जैसे विजली का करंट लगा हो।

'क्या?' वह भयभीत आँखों से देखता हुआ बोला।

'वह कंदी हमें दे दो खान,' ईदू उसकी आँखों में आँसू डालकर बोला, 'और रैफल तुम रखो। बोलो सौदा मजूर है?'

जाफर की साँस रुक गई। कभी यह राइफल की तरफ देखता तो कभी ईदू की तरफ। फिर बड़ी देर चुप रह कर बोला, 'खान, नगीर घाँ और दरोगा हम को जिन्दा नहीं छोड़ेगा।'

ईदू बोला, 'उसकी परवाह मत करो जाफर खान। मेरे पास भी आदमी सगे हुए हैं।'

यह सुनकर जाफर चौंका और फिर बोला, 'हाँ, एक बात हो सकती है।'

की जगह एक आदमी छोड़ दो तब हम कह सकता है कि न हमने
को उस रोज देखा और न ही उसे हम आज पहचानता है। फिर सब
त नसीर खाँ के साथ आने वाले, उस आदमी पर लग सकता है। क्योंकि
कई बार आया है और कैदी को दो-चार तमाचे और गाली सुनाकर
जा जाता है।'

ईदू समझ गया कि जाफ़र नूरा के बारे में कह रहा है। ईदू सोचता
रहा और बोला, 'ठीक है ख़ान, हमें सौदा मंज़ूर है। कल हम आएगा औ-
कैदी के एवज आदमी का भी इन्तजाम करेगा। कल कैदी बाहर होगा और
ये राइफल तुम्हारी होगी।'
जाफ़र ख़ान ईदू के चलते बकत बोला, 'ये राज़ सिर्फ़ हमारे और तुम्हारे
बीच है ख़ान।'

'हाँ जाफ़र ख़ान। कुरान शरीफ़ की कसम खाकर मैं ये कहता हूँ।'
ईदू वहाँ से लौटकर सीधा मैस आया था। उसने जबर ख़ान को सब
वतलाया और कहा, 'ख़ान, तुम हमारे साथ कल चलोगे। मैं खुद हवीवा
की जगह कैदी बन कर रुक जाऊँगा। तुम हवीवा को लेकर पायल वाली
गली के नुक्कड़ पर हुसैनी दर्जी की दुकान पर जाना। वहाँ गुलसमन
मिलेगी। उससे मिलकर महजबीं को नूरा के चंगुल से बचाने कोशिश
करना। हवीवा की दी हुई राइफल जाफ़र खाँ को देनी पड़ेगी। अगर
बचा तो कहीं न कहीं से हवीवा को एक राइफल लाकर दूँगा।'
जबर खाँ उसे टकटकी बाँधकर देखता रहा।
'तुम पठान के बच्चे हो, ईदू खाँ,' जबर खाँ बोला, 'तुम्हारी अकीद

की उरफज़ई हमेशा इज्जत करेगा।'
और दूसरे दिन हवीवा की जगह ईदू उस कमरे में कैद हो गया
हवीवा निकलते बकत पोस्त की झुनक में कुछ समझ नहीं पाया कि
हो रहा है। मुरझाये हुए हवीवा को जबर खाँ और उसके साथी व
ले आए। ईदू के मुख पर एक तेज चमक रहा था। उसने चलते
जबर खाँ से कहा था, 'हवीवा से कहना, सब महमंद ख़राब नहीं
सिर्फ़ हालात उन्हें ख़राब कर देते हैं।'

नूरा मुबह जब उठा तो उमके सर मे शराब की सुमारी ने हल्का-हल्का दर्द उठा रखा था। उसने कोने में अस्त-व्यस्त पड़ी गुलसमन को देखा। नूरा मुस्करा कर पाम गया और उसे पलटता हुआ बोला 'महजबी—'

बस इतना ही कह पाया था नूरा। उसने सहसा अपनी आँखें जोर-सी मीठी और फिर सर को झटक कर फिर से गुलसमन को गौर से देखा।

फिर उसकी आँखें फट सी गईं।

'गुलसमन, तुम ?' वह बोला।

गुलसमन मुस्कराकर बोली, 'हाँ नूरा मैं। अभी नसीर खाँ आता होगा और अब वह मुझे महजबी समझ कर तुमसे छीनेगा और मुझे रडियों के यहाँ बेच देगा। ये तस्कीन रहेगा कि जिसकी मैं अमानत हूँ उसकी पहले पहल बनकर ही रही। इसके बाद जो कुछ भी कोठे पर गुजरेगी, भुगनूँगी।'

नूरा तडप कर खड़ा हो गया।

'नहीं, ये नहीं हो सकता। कोई भी तुम्हें मुझमे नहीं छीन सकता गुलसमन ! तुम सिर्फ मेरी ही नहीं पूरे कबीले की अमानत हो। तुम महमदों की इज्जत हो। उनके मरदार हिलाल खाँ के घर की रौनक हो।'

गुलसमन हँसी।

'तुम्हें अपने कबीले की इज्जत की इतनी फिक्र है नूरा ! क्या दूसरे कबीलों की इज्जत नहीं होती ? क्या उनकी अमानत नहीं होती ?' वह बोली।

'होती है, नूरा दाँत पीसकर बोला, 'पर दुश्मन पर हर बार जापज है।' सभी नसीर खाँ दो सावियों के साथ अन्दर आ पहुँचा। 'कहो नूर खाँ, वह हँसकर बोला, 'शब कमी गुजरी ?'

नूरा उसे देखता रहा। 'शब का क्या डिक्र नसीर खाँ ! ये तो अब

हमारी जिदन्गी की हरेक पाव को चाँद तारों से सजाया करेगी ।'

नसीर खाँ बोला, 'नहीं खान, सिर्फ एक पाव की बात हुई थी । तुम्हारे अरमान निकल गए । अब इसके पैसे खड़े होंगे और हम आपस में बाँटेंगे ।'

नसीर खाँ के यह कहते ही नूरा ने एक जोर का तमाचा उसके मुँह पर मारा । नसीर खाँ शौचकटा रह गया । और तभी उसके दोनों आदमी नूरा की तरफ़ धमके । गुत्थम-गुत्था शुरू हो गई । उसी वक़्त एक आवाज़ आई, 'ठहरो !' सब शौचक होकर रुक गए ।

गुलफ़ाम हाथ में दुनाली लिए खड़ा था । साथ में उसके चार साथी नगी तलवार लिए खड़े थे । उन्होंने बढ़कर गुलसमन को उठाया ।

'न नो बहन,' गुलफ़ाम बोला, 'नूर खाँ अपने दोस्तों से निपट कर ग़ुद आ जाएँगे ।'

गुलसमन ने कहा, 'नहीं, नूरा साथ चलेगा ।'

नूरा बोला, 'तुम जाओ गुलसमन । मैं अपने दोस्त नसीर खाँ की आँखें खोलकर फिर मिलूँगा ।'

गुलफ़ाम हँसा, 'नूर खाँ, नसीर खाँ हमारे साथ हमारे कबीले जा रहे हैं । एक हजार रुपया भिजवा देना और इन्हें छोड़वा लेना ।'

यह कहकर उन्होंने नसीर खाँ को दबोच लिया और उसे बाँधकर चल दिए । गुलसमन को भी गुलफ़ाम रजामन्दी बशीर ले चला ।

बाहर गाड़ी में डालकर गाड़ी चल दी ।

'सीधे सराय चलो, हलीम,' गुलफ़ाम बोला, 'महजबी को लेकर हम सीधे कबीले पर ही दम लेंगे । हबीब खाँ पिछड़े से बाहर आ गए हैं । शेर की परवाह अब नहीं रही । हम हबीब खाँ के दमखम जानते हैं । उन्हें अब कोई नहीं पकड़ सकेगा ।'

जबर खाँ हबीबा की 'अंग' ले इनादर भेजे जाना था। जबर खाँ को
तक हबीबा दोल्द के खुमार मे घोषा-घोषा सा इधर-उधर देखता था।
जबर खाँ ने 'जैन' ले थडिया बाँधी साकर धर्म-गर्भ रूप ले लिखाकर जो जो
बार सिनाई और घी मे धुन कर सुधे जिलाए। हबीबा को घेना लो-नी
तयो, और जेठे बीजे हुए स्वप्न को याद कर रतुा हो बीजे हो बरु सोचो
तया। हबीबा अँगडाई रोकर खड़ा हो गरा। अखर धी मे देखकर खुम हबी
ओर बोला, 'अब कैसे हो छोटे सरदार ?' हबीबा जवाब मे मुसक राया।

जबर खाँ ने हबीबा को सारा विरसा भादि ती भत सार गुना काना।
महजबी जाते वक्त किकर्तव्यविभूङ हबीबा को गिमतकर ली भरे भी पर
हबीबा उस समय घोषा-घोषा उठो देख रता था। गुलफाम मे जरी के कुंम
बैधाया कि हबीबा को नशीली भीत जिलाई गर्ई ती जमादी मकर से मिला बरु
रहा है। जबर खाँ और कबीरो धे. धार भागिगी भी लखीना भी सोलर ती
गुलफाम चल दिया था। उठो जल्दी ली उस इलाके मे जनावा हावा भा ओर
किर महजबी के अलावा उठावे: गाथ गधममान और नशील ली ली ली मे।

हबीबा ने पूरी दारतान गुलफार पहने ली तमा व मकी और भा-भा गुना
का लाग्यलाय शुक्र कि महजबी भी भावत पर गाग गमगी गगन। अग-
बाद हबीबा जबर खाँ मे धीना, 'जना, लरी गुंम राग मया भा मह दुरी
मस्जिद गुधे: मामुग है कही है? इगु ली मे अहमान मे. जनीर की जेन
नहो जेने दे रता है। यथादाय यामन मकी इनायन मे लीव जनायु मे री है।
मे जान पर ली येन मकर इगु ली को लुदा मे र म्म इभा है' जबर खाँ पर
दुठो मस्जिद के बागे मे गुना था। उमन हबीबा को जामात इवज है। पर
गुिम के सुधुई ली की मानी है. लीव भा-ली। मे जाम जबर खाँ की २३२२ २२।
हमेगा ररुई है, इलीया ली है ली माम मे लु मे मर मे री जनादी पर म
दरुई है।

की जगह कोठरी में ईदू बन्द है और नसीर खाँ यूमुफजई के कबीले में पहुँच चुका होगा। हबीवा बिजली की तरह झुटपुटे में टूटी मस्जिद पर टूटा था।

जाफर खाँ को उसने रस्सियों से बाँध दिया और ईदू की दी हुई राइफल छीन ली। इसके अलावा जाफर के टीन के बक्से में उसे दो चुराए हुए रिवाल्वर और मिले। टूटी मस्जिद में घुस कर उसने चारों पठानों को आनन फ़ानन में काबू कर लिया और उसके साथियों ने उनकी मुश्कें बाँध दीं। ईदू उस वक़्त असहाय-सा पड़ा था। हबीवा ने दरवाज़ा खोलकर ईदू को उठाया और गले लगाकर बोला, 'ईदू खाँ, तुम्हारी बफ़ा की मिसाल हमारे कबीले में जश्नों पर गाई जाया करेगी। तुम हबीवा का ग़रूर हो, ख़ान।'।

ईदू के आँसू भर आए। हबीवा ने उसकी कोठरी में जाफर और चारों पठानों को बन्द कर दिया और अपने साथियों के साथ चल पड़ा।

रास्ते में ईदू ने सारी दास्तान सुनाई। हबीवा ने ईदू के हाथ बार-बार चूमे।

'अगर तुम मेले में नहीं होते तो मैं तो ख़ैर बरबाद होता ही पर फरिश्ते जैसी पाक महज़बीं भी शारत हो जाती। तुमने दो कबीलों की आबरू की शमा को बुझने से बचाया है दोस्त। तुम्हारा अहसान एक खूबसूरत याद का जिब्रील जैसा बनकर हम पर छाया रहेगा।'।

हबीवा की आँखों में रह-रह कर नूरा का ख्याल उठ रहा था। जबर खाँ ने ही तो बताया था कि महज़बीं स्वयं कह गई थी कि जो भी हो इस ज़लील नूरा की नेक परवीन मँगेतर ने ही उसकी आबरू को बचाया। अगर वह न आती तो महज़बीं नूरा के हाथों ज़लील होकर जिन्दगी भर मौत से बदतर कोठों की सड़ाँध में कोढ़ी की तरह घुल-घुल कर मर जाती। महज़बीं ने इशारा भी दिया था कि जब हबीवा के होश जाग जाएँ तो यह बतलाना मत भूलना कि हालाँकि नूरा को तड़पा-तड़पाकर मारना भी कम होगा पर फिर भी वह गुलसमन का होने वाला ख़ाविन्द है। गुलसमन की मदद की क़ीमत और उसके अहसान का मोल है—नूरा की जिन्दगी। हबीवा बार-बार अपने गुस्से को पी जाता और स्वयं अपने से तर्क करता, 'इस खन्जीर की बोटी-बोटी काट कर मुझे चीलों को खिलानी चाहिए पर क्या कहूँ

महजबी का हुक्म मुझे मानना ही पड़ेगा। गुलममन और ईदू दोनों ही नूरा के पास अकीदतमन्द होते हुए भी मेरी जिन्दगी पर छाए हुए हैं। उन्होंने खुद गम और जुल्म सहे जिससे मेरी और महजबी की जिन्दगी झुलम न पाए। नहीं हबीबा, नूरा को सजा तो मिलेगी पर रहम के तकाजे मद्दे नजर रखने पड़ेंगे।' हबीबा ने अपने मुखबिर छोड़ दिए—जहाँ भी हो नूरा को पकड़ी।

ईदू की हिदायत के मुताबिक वैसे जबर खाँ ने भी कैप्टिन जेम्स के कान में बाल दिया था कि बेबी को उठाने वाला बदमाश और अपना नाम फ़ारेव से हबीबा बताने वाला जलीन—आजकल यही घूम रहा है। कैप्टिन जेम्स ने पुनिम कप्तान कैप्टिन पीटर्स को बतना दिया था। पीटर्स ने जब थानों को आगाह किया तो दारोगा चौका। उसे यह दास्तान नसीर खाँ ने नहीं बतलाई थी।

दारोगा सहमने हुए कोतवाल के पास पहुँचा और नए मुखबिरों का रजिस्टर उनके सामने रख दिया जिसमें नूरा की फोटो लगी थी। रजिस्टर पुनिम कप्तान के पास पहुँच गया और जब कैप्टिन जेम्स को उसे दिखाया गया तो उसने हर्ष में कहा कि यही वह शख्स है जिसमें जेम्स स्वयं निपटना चाहता है। दारोगा को जब हुक्म सुनाया गया तो उसने फौरन नसीर खाँ को तलब किया, पर नसीर खाँ वहाँ से कब का उठ चुका था। दारोगा अपने कुछ मिपाही लेकर टूटी मस्जिद पहुँचा तो वहाँ का सर्मा देखकर उसके देवता कूच कर गए। जाफर खाँ और उसके पठानों को खोला गया। जाफर खाँ ने माहौल देखकर रो-रो कर दूसरी कहानी सुनाई कि नूरा ही कैंदी को ले गया और नसीर खाँ भी गायब है। दारोगा सर पकड़ कर बैठ गया। नूरा तो गया सो गया पर हबीबा के चले जाने में उमका इनाम और तमगा हमेशा के लिए आँखों से ओझल हो गए। मुस्मे में दाँत पीसता हुआ दारोगा अपने मुखबिरों से बोला, 'सब जुआघर और नाचघर ध्यान डालो। आखिर जाएगा कहीं ये हरामजादा।' सबको एक एक कापी फोटो की पकड़ा दी गई और नूरा की तलाश में वे मधुमक्खी की तरह भनभनाते हुए घन पडे।

नूरा को तीन चाहने वाले तलाश कर रहे थे। कैप्टिन जेम्स, दारोगा और हबीबा। करीब चौबीस घंटे बाद एक मुखबिर खबर लाया कि नूरा

रखसाना के घर के अन्दर छुपा हुआ है। दारोगा फ़ौरन ही दस आदमी लेकर पहुँचा। रखसाना ने जब दस्तक सुनकर दरवाजा खोला तो दारोगा को देखकर वह सन्न रह गई। अन्दर जब तलाशी ली गई तो नूरा कमरे में पलंग के नीचे छुपा हुआ मिला। दारोगा ने नूरा को गिरफ्तार कर लिया। हंटर से नूरा की पीठ को नीली धारियों से भर दिया। नूरा रो-रोकर कहता रहा, 'हुज़ूर, नसीर खाँ को युसुफ़ज़ई कबीले वाले ले गए हैं।'

'सूअर के वच्चे, ये सब तेरी वजह से हुआ। अगर उस लड़की का रोना तू नहीं रोता तो मेरी स्कीम कितनी बढ़िया चल रही थी।' दारोगा ने खिसिया कर अब की बार अपने पाँव से जूता उतारा और नूरा के सर पर पिल पड़ा। नूरा पिट कर बेहाल हो गया। जब पीट-पीट कर दारोगा थक गया तो हँसकर बोला, 'खैर जो कुछ हुआ सो हुआ। अब मैं तुम्हें तुम्हारे एक और आशिक के पास भेज रहा हूँ। वह तुम्हारी खातिरदारी को बेचैन बैठा हुआ है बेटे।' नूरा भय से देखता रहा और सोचने लगा कि दारोगा उसे हवीवा को तो सौंपने से रहा, फिर उसका यह नया कद्रदाँ कहाँ से पैदा हो गया।

दारोगा दहाड़ कर बोला, 'दीवान गफ़ार खाँ, इस हरामजादे को बाँधकर गाड़ी में डाल दो और कैप्टिन जेम्स साहब के पास भेज दो। उसकी वच्ची को ये उठा ले गया था। कैप्टिन साहब उस अहसान को उतारना चाहते हैं।'

यह सुनकर नूरा की आँखों के सामने सितारे झिलमिलाने लगे। वह रोकर बोला, 'हुज़ूर, मुझे यहीं मार डालो पर वहाँ मत भेजो।'

जवाब में दारोगा ने कस कर एक लात जमाई और उसे बोरी की तरह उठाकर गाड़ी में फेंक दिया गया।

कैप्टिन जेम्स नूरा का बेसत्री से इन्तज़ार कर रहा था। जैसे ही गाड़ी बँगले में घुसी, जेम्स उठकर खड़ा हो गया। उसकी मेम और बेटी बरामदे में खड़े थे। गाड़ी से अधमरे नूरे को उतारा गया। जेम्स ने अपनी पत्नी को पास बुलाकर उसे दिखाया।

'ये शकल से ही शैतान जैसा लगता है' वह बोली।

जब छोटी डैफनी को जेम्स ने बुलाया तो पास आकर वह डर गई

और बोली, 'ये ही है वह 'डैविल,' पापा !'

जेम्स ने अपना बेंत डैफनी को दिया और कहा कि नूरा को जी भर कर मारे। डैफनी का एक बेंत नूरा की पीठ पर पड़ा। नूरा भयभीत और आंशु भरी आंखों से देख रहा था। डैफनी ने हाथ रोक लिया और तुतना कर बोली, 'ये रहम की भीख मांग रहा है मम्मी। तुमने कहा था ना कि ईसा मसीह दया, रहम और प्रेम का पाठ पढ़ाने महीं आए थे। इनको मैंने माफ कर दिया।'

जेम्स और उसकी पत्नी सुनकर अवाक् रह गए।

जेम्स ने नूरा के बाल पकड़कर उमका सर उठाया और कहा, 'तुमने सुना, कुत्ते, मेरी बच्ची क्या कह रही है ! वह कहती है कि तुम पर रहम करके उसने माफ किया।'

नूरा हाथ जोड़ कर रोता हुआ बोला, 'हूनुर, आप यकीन करें। मुझे वह मजा दी है मिसी दादा ने जिससे मैं जिन्दगी भर तड़पता रहूँगा।'

जेम्स ने सिपाहियों को हुक्म दिया, 'इसे क्वाटर गार्ड में बन्द कर दो। इसे चीफ कमिश्नर के पास पेश किया जाएगा।'

वे लोग नूरा को उठा ले गए और फौज के क्वाटर गार्ड में बन्द कर दिया। जब मस में यह चर्चा शाम को अफसरों के बीच छिड़ी तो जबर याँ ने कान खड़े किए। उसने ही दूसरे दिन हबीबा को बतलाया कि नूरा पल्टन के 'कोट गारद' में बन्द है।

क्वाटर गार्ड पर हमला करना जोयिम का काम था। पहले पर सतक गोरों का दल था। दो मशीन गन हमेशा तैयार रहती थी। क्वाटर गार्ड के चारों तरफ दोहरे काँटेदार तारों का परकोटा बिचा था। हबीबा बड़े साँच में पड़ गया। रात को उसने सलाह-मशवरे किए। वह स्वयं भी क्वाटर गार्ड को दूर से देखकर आया था। वहाँ हमला नामुमकिन था।

यकायक हबीबा के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। 'एक तरकीब है,' वह हँसकर बोला। और उसने सब साधियों और जबर याँ को वह बात बतलाई। स्कीम जोधों की थी पर बिल्कुल नामुमकिन भी नहीं थी।

'कल शाम को सब तैयार रहना। काम होने ही हमें चन देना होगा, हबीबा बोला।

एक बहुत बड़े संतरे की तरह कबीले पर टँगा हुआ था।
'खुदा का शुक्र है कि हम सूरज के डूबने से पहले वापस आ गए,'
काम बोला।

सब कबीले के अंदर पहुँच गए थे। नसीर खाँ बँधा हुआ एक कोने में
बैठा था। गुलसमन को महजवीं ने अपनी बगल में बैठा रखा था।

उत्तर कर हाथ-पाँव सीधे करने लगे।
'मामूँ खाँ', गुलफ़ाम बोला, 'इस कमीने को हवेली के तहख़ाने में बन्द
कर दो। इसको खाना-पानी देना है जिससे ये मर नहीं जाए। बन्द करने से
पहले देख लेना कि कोई हथियार वगैरह तो इसके पास नहीं है।'
नसीर मियाँ नीचे बन्द कर दिए गए। गुलफ़ाम के सर पर पट्टी देख
कर संरदार गुलाब खाँ चौंके।

'ये क्या हुआ बेटे?' उन्होंने पूछा।

गुलफ़ाम ने ख़ास-ख़ास वाकया सुना डाला, सिर्फ़ महजवीं वाली बात
दवा गया। गुलाब खाँ सुनता रहा और फिर धीरे से बुदबुदाया 'शायद
महजवीं का झुकाव तुरें खाँ के लड़के हवीवा की तरफ़ है। अत्लाह को ये
मंजूर लगता है कि ये दोनों कबीले अपनी पुरानी रंजिश को दफ़न कर दें।
फिर भी रिश्ता पहले तुरें खाँ की तरफ़ से आना चाहिए।'
महजवीं गुलसमन को अपने साथ अंदर ले गई। रात को उसे अपने
कमरे में ही सुलाया। सोने से पहले गुलसमन ने उदास स्वर में कहा,
'ना जाने नूरा पर क्या बीत रही होगी?'

महजवीं उसकी पीठ पर हाथ रखकर बोली, 'नूरा के गुनाह उसकी
जिन्दगी के हर पहलू से उभर आए हैं वहन। क़ौम के साथ गद्दारी, कबीलों
के पुराने रिश्तों में ज़हर घोलना, दूसरे की लड़की की आबरू लूटने की
साजिशें, क्या नहीं किया उसने! पर वहन, तुम्हारी हज़रपसन्दी ने मेरे गुस्से

को काफूर कर दिया है। तुम्हारा अहसान नूरा की जिन्दगी पर एक खुदाई रहम की तरह गाया जा सकता रहेगा। मैं भी ये नहीं चाहती कि तुम्हारी जिन्दगी की खुशी मैं अपनी इज्जत के बचने की आड़ में बरबाद करूँ। यकीन रखो बहन, हबीब खाँ बहादुर के अनावा माँम जैमा दिल भी रखते हैं। नूरा का वाप भी वाँका नहीं होगा।'

गुलसमन नूरा के कारनामों का ख्याल करके महजबी में आँखें मिमाने बनराती, पर आखिर जैमा भी है नूरा उगकी शमा-ए-जिन्दगी की सरजती हुई ली हो ली है। महजबी की तमल्लनी उमे भनी लगती।

महजबी ने गुलसमन को अपना ग्राम मेहमान जैमे रखा और दूसरे दिन गुलसमन और उमके मायी गुलसमन को उमके कबिले में छोड़ आए।

गुलसमन अपनी माँ में लिपट कर बहुत रोई थी और उमने गिफ्त यह बतनाया कि नूरा मुश्किल में है। वह उमे बचाने गई थी और सिंगी हद तक वह उमकी खरियत का इन्तजाम भी कर आई है।

नाम को गुलसमन नहा-धोकर सरदार हिलाल खाँ के पाम पहुँची। सलाम करके वह बोली, 'अब्बा जान, मैं आपमें कुछ जरूरी बातें करने आई हूँ।'

सरदार हिलाल खाँ बोले, 'कीन-सी बातें करने आई हो बेटी गुलसमन?'

गुलसमन ने कहा, 'आपके खानदान की मैं होने वाली इज्जत हूँ, अब्बा जान। आपके खानदान की बेहतरी के लिए अगर मुझे जहर-आनूदा मच भी बोलना पड़ेगा तो मैं बानूंगी क्योंकि बजुर्गों से गलनियाँ छुपाना एक मशीन गुनाह है।' हिलाल खाँ अचरज से देखते रहे।

'अब्बा जान, मैं आपको पेड के नीचे अकेले में सब बातें बताऊँगी। गलती भी इनमान में ही होती है। दामन के दागों को बजुर्ग अपने तजुबों में धोकर मिटा सकते हैं। उनका इतना तजुबा है कि दाग दामन में मिट जाए पर दामन फट कर बरबाद भी न हो।'

हिलाल खाँ चिन्तित से उमके पीछे-पीछे चन दिए। गुलसमन ने नूरा के बारे में कुछ भी नहीं बताया। महजबी में पहली जबरदस्ती, हबीबा का आकर बचाना, जेम्ग की बर्फी को उड़ाना और किरानी का हरीषा को कबूल न करके भी अपने पाम में दो हठार सरदार हिलाल खाँ को देना। गुलसमन ने सब कुछ उगन दिया और आँखें नीची करके बोली, 'अब्बा

जान, मेरे गुनाह की सजा देना भी न भूलिएगा। महज्जी की आबरू मैंने नहीं बचाई बल्कि अपने बहके हुए खाविन्द के ऊपर अपने हक को मैंने घोखे से हासिल किया। निकाह से पहले ही मैं आपके कबीले के चिराग की रोगनी बन चुकी हूँ। ये चलन के खिलाफ मेरी मुहब्बत की बगावत के सिवा और कुछ नहीं है, अब्बा जान। पर मैं मजबूर थी। एक औरत होने के नाते मैं कमजोर हूँ। अपनी मुहब्बत की तोहीन मैं बरदाश्त नहीं कर पाई। मुझे ये गवारा नहीं हुआ कि मेरी जानकारी में होते हुए कोई गैर लड़की नूरा के पहलू में मचल कर मेरे हकूक छीन ले।'

हिलाल खाँ की आँखों में खून के आँसू उतर आए। वह गुलसमन की पीठ पर हाथ रखते हुए बोले, 'तुम अब घर जाओ बेटी। मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूँ कि तुमने मेरे घर में छापे अँधेरे से मुझे वाकिफ कराया। मुझे नाज है कि तुम मेरे बफ़ादार दोस्त की बेटी हो। मुझे शरूर है कि तुम मेरे खानदान के सहन में पाक चाँदनी फैला कर हरेक अँधेरे पर शालिव होती रहोगी। मैं तुम्हें अपनी बहू कबूल करता हूँ। नूरा ने जो मेरे कबीले की शान पर कालोंछ पोती है उसकी कीमत मैं खुद उससे बसूल करूँगा। जाओ बेटी, अपनी माँ को बतला देना कि कल से तुम मेरे खानदान की बहू-बेटियों के बीच रहा करोगी।'

गुलसमन ने आँसू भरी आँखों से हिलाल खाँ को देखा और कहा, 'अब्बा जान, चलते वक्त एक भीख मैं आपसे माँगूँगी?'

'कौन-सी, बेटी गुलसमन?' हिलाल खाँ बोले।

'नूरा की जिन्दगी की हिफ़ाजत,' गुलसमन काँपते ओठों से बोली।

हिलाल खाँ गहरी साँस छोड़कर बोले, 'ये भीख तुम रोज नमाज पढ़ते वक्त खुदा से माँगना मेरी बच्ची। ये भी मिनत करती रहना कि मैं एक कबीले के सरदार का हक अदा कर सकूँ और एक बेटे के बाप का भी।'

यह कहकर हिलाल खाँ भरे हुए तूफ़ान की तरह उठ खड़े हुए।

उन्होंने फ़ौरन अपने सलाहकार को बुलवाया और फिर देखते ही देखते पचास सवार इकट्ठा हो गए। पीठ पर बन्दूक टाँगे हिलाल खाँ ने एक हजार की थैली रखी और वे साथियों को लेकर चल दिए।

गुलसमन फड़फड़ाते ओठों से कुरान की आयत पढ़ने लगी। हिलाल

याँ मीघे मूगुकुर्दई कबीले की हद पर पहुँचे और गिकें एक मायी को लेकर मरदार गुलाब याँ के दर पर पहुँचे। मरदार गुलाब याँ ने हिलाल याँ का सत्कार किया।

‘गुलाब याँ, हम तुम्हारे बेटे में एक मोदा करने आए हैं।’

गुलाब याँ हँसकर बोले, ‘बमान है, थाप में बात तक नहीं कर रहे हो और बेटे को हम पर भी तरजीह दे रहे हो हिलाल याँ।’

अन्दर खबर कर दी कि याँने ~~अ~~ इत्तजाम किया जाए। मरवत भी भिजवाया जाए।

जब गुलफाम आया तो उसने हिलाल याँ को मलाम किया। हिलाल याँ बोले, ‘बेटे, हम तुममें एक मोदा करने आए हैं पर बातें तुम्हारे अच्चा में दूर होगी।’

गुलाब याँ उठने हुए बोले, ‘लो यार, मैं ही उठा जाता हूँ।’

हिलाल याँ गुलफाम को पेड के नीचे ले जाकर बोले, ‘बेटे, मैं बड़ी हिम्मत करके अपनी शसन तुम्हें दिया रहा हूँ। मुझे सब कुछ कल गुलममन—मेरी बहू ने बतला दिया है। मेरे लडके ने मेरे बुजुर्गों की लान में उनका बपुन उतार-उतार कर उमें कौडियों के मोन बेच दिया है। मैं बहुत गमिदा हूँ। नूरा को बिगाडने में कुदरत का हाथ तो घंर था ही, परे इन नमीर याँ ने रही मही कसर भी नहीं छोडी। मैं एक हजार रुपये लेकर आया हूँ। मेरा मग्गा है कि तुम ये फिरोती कबूल करके नमीर याँ को मुझे सौंपे दो। मैं इसके गून में अपने कबीले के पाक दामन पर लगे दागों को छुड़ाऊँगा।’

गुलफाम संजीदगी से मुनता रहा। फिर मांग छोडकर बोला, ‘मुझे ये सोदा मंजूर है बचा जान।’

हिलाल याँ धीरे से बोले, ‘शुत्रिया बेटे। एक और ख्वाइन है। मैं अभी गुलाब याँ से इत्तजा करता हूँ कि दो बात महजबी बेटे में भी कर सकूँ।’

गुलफाम उमें देग्रता रहा। गुलाब याँ ने वहाँ ही महजबी मर शुकाए आ गई और मलाम करके खडी हो गई। हिलाल याँ उमें देखकर बोले, ‘गुदा तुम्हारी हमेशा मदद करे बेटे। मैं तुम्हें देग्रना चाहता था। मुझे गुलममन ने सब कुछ बतला दिया है। वह एक बहादुर पञ्जान और मेरे बदा-दार दोस्त भी बेटे है। उसकी दास्तान गुनकर मैं उमें इत में अपनी शंकी’

अपनी बहू कबूल कर रहा हूँ। अपने बेटे नूरा से तुम्हारा बदला लेने मैं चल दूँगा। मैं पठान हिलाल खाँ की हैसियत से जा रहा हूँ, एक जलील के बाप की हैसियत से नहीं। मेरी बन्दूक उसे सिर्फ ये बतलाएगी कि एक पठान की लड़की पर बदनज़र उठाने की सज़ा एक पड़ोसी पठान किस तरह देता है।'

महजबीं सुनकर काँप उठी। उसने धीरे से सर उठाकर कहा, 'चचा जान, मैंने नूरा भाई को मुआफ़ किया।'

हिलाल खाँ बोला, 'ये तुम्हारे खान्दानी खून का रंग बोल रहा है बेटी। तुमने इसे माफ़ किया पर हिलाल खाँ ने नहीं।'

गुलाब खाँ दूर से सब देख रहे थे। जब महजबीं चल दी तो हिलाल खाँ ने गुलाब खाँ के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'अब तुमसे भी कुछ कहना चाहता हूँ।'

गुलाब खाँ हँसकर बोले, 'भाई हिलाल खाँ तुमने मेरे पूरे खानदान से बातें कर डालीं। बस मैं और तुम्हारी भाभी जान ही बचे हैं!'

हिलाल खाँ संजीदगी से बोला, 'गुलाब खाँ, हम दोनों साथ-साथ एक ही मैदान में लड़े हैं। गोलियों की भनभनाहट के बीच एक ही दस्तरख्वान पर खाया भी है। मैं जो कुछ कह रहा हूँ गौर से सुनना। अगर बुरा लगे तो मुझे मुआफ़ कर देना।'

गुलाब खाँ गौर से हिलाल खाँ की ओर देखने लगे।

हिलाल खाँ आँखों में आँखें डालकर बोले, 'एक शेर की बच्ची दूसरे शेर के बच्चे के साथ ही फवती है गुलाब खाँ! मेरा मन्शा है कि मैं तुम्हें खाँ को लेकर तुम्हारे दर पर उसके बेटे हवीवा के लिए बेटी महजबीं का हाथ माँगने आऊँ।'

गुलाब खाँ ने एकटक हिलाल खाँ की तरफ़ देखा और फिर हाथ ब दिया।

'मुझे ये रिश्ता मंजूर होगा वशतें कि तुम ज़ामिन बनो और तुरंत को यहाँ उसूल के मुताबिक ला सको।'

हिलाल खाँ ने गुलाब खाँ को गले लगा लिया।

फिर एक हज़ार की थैली गुलाब खाँ को पकड़ा कर बंधे हुए नसीब लेकर हिलाल खाँ चल पड़े।

ईदू का मश्विरा ही हबीबा को सबसे ज्यादा पसन्द आया। शनिवार की शाम अंग्रेज बड़ी फरागदिली में मनाने हैं। क्लब, डान्स, शराब—यह कोई कमर नहीं छोड़ने हैं। शाम को रंगीन बनाने में। क्या अफसर और क्या सिपाही, सभी शनिवार की शाम को त्यौहार की तरह मनाने हैं।

हबीबा ने ईदू राँ का मश्विरा ही बेहतर समझा। जबर राँ मँस में सफेद बर्दियाँ घोंबी के यहाँ में लायेगा। बर्दों आने ही मँस में यह नाटक होगा कि कोई धुली-धुलाई बर्दियाँ चुरा ले गया।

बजाटर गाँड़ पर दमगोरो का पहरा रहता है। बारी-बारी में शनिवार की शाम को सबको ड्यूटी देनी पड़ती है। ड्यूटी वाले गोरे अफसर मुँह लटकाए रहने हैं पर ड्यूटी तो करनी पड़ती है।

शाम को ईदू राँ और शम्भू मँस की बर्दियाँ पहनकर बजाटर गाँड़ जाएँगे और एक पेटी 'शेम्पेन' शराब और धीमी आँच पर मिके हुए मुर्गों का घाल लेकर गाँड़ कमांडर को बतलाएँगे कि कैप्टिन जेम्स माह्व का प्रमोशन हो गया है। उम्मी खुशी में सबको पार्टी दी जा रही है। बजाटर गाँड़ के गोरो के लिए सामान भिजवाया जा रहा है।

जब सामान आया तो मतरी चौका पर 'अफसरमँस' की बर्दियों में बैरादल देगकर वह मक्ते में भी आ गया। 'शेम्पेन' की पेटी देरकर उमने जीभ को ओठों पर फिराया और फिर गाँड़ कमांडर को आवाज दी। गाँड़ कमांडर कारपरल स्ट्रुँची था, जो माना हुआ शराब का प्रददी था। उमने सब कहानी सुनी और फिर टोटी गुजाकर बोला, 'पर ड्यूटी के दौरान हम शराब नहीं पी सकते। सामान खैर ले लो पर पीना-पिलाना कल ही होगा।' नकली बँरे तो सामान उतार कर चलते बने और दूर में देगने रहे। धीरे-धीरे और भी गोरे आ गए। 'शेम्पेन' की एक बोतल उटाई तो वह बर्फ से भी ज्यादा ठंडी हो रही थी। गारी बोतलें मुपह से बर्फ में दबी थीं। बोतलों में

हुआ जो भूखी चील के घोंसले में मांस का होता है। धीरे-धीरे कुछ कारपरल को पटाने लगे, 'ऐसा करते हैं, जो इस वक्त ड्यूटी पर नहीं थोड़ी-थोड़ी पी लेंगे। वरना ये वोतलें गर्म हो जाएँगी। सोचो कारपरल, लर्स हीडसिक' की शोम्पेन है और ये गर्मागर्म मुर्गे ! और यहाँ ही कौन-अटक होने वाला है !'

सब भूखे गिट्टों ने एक दूसरे की हाँ में हाँ मिलाना शुरू कर दिया और योंकि उनके कारपरल की भी लार टपकना शुरू हो गई थी, लिहाजा वोतलें पहले एक-एक करके खुलीं और फिर जैसे-जैसे सहर छाने लगे, इकट्ठी खुलने लगीं। करीब दो घंटे बाद गोरे लड़खड़ा कर पहरा देने लगे और वाक्की कमरे में वेसुरे सुर से गाना गाने लगे।

हवीवा ने मौका देखकर ही घावा बोल दिया। चपचाप विल्ली की तरह वे आए और हरेक को मजे से दबोच लिया।

शम्सू मशीनगन और नई राइफलें देखकर ललचाने लगा पर हवीवा बोला, 'नहीं शम्सू भाई। हम सिर्फ नूरा को लेने आए हैं। अगर हम हथियार भी ले चले तो कैप्टिन जेम्स साहब की वेइज्जती हो जाएगी।' सबने बात मानी। आनन-फानन नूरा को पकड़कर बाहर निकाल लिया गया। हवीवा को देखकर नूरा की जान सूख गई। हवीवा हँसा, 'डरो मत, अंग्रेजों से हम कम सद्गती बरतेंगे।' वगैर कुछ और छुए सब चल दिए। जाते वक्त हवीवा ने एक चिट्ठी कैप्टिन जेम्स के नाम छोड़ दी जो संतरी की राइफल पर बाँध दी गई। नूरा को लेकर सब घोड़े कबीले की ओर भाग निकले। करीब एक घंटे बाद स्कीम के मुताबिक जवर खाँ ने क्लब में कैप्टिन जेम्स को फ़ोन कर दिया।

जेम्स डान्स छोड़कर फ़ौरन भागा था। क्वाटर गार्ड आकर उसने देख कि करीब-करीब सब ही नशे में आँधे पड़े हैं। जेम्स को काठ मार गया सहसा उसकी नज़र संतरी की राइफल पर बँधे खत पर पड़ी। उसने खत से उसे खोला। लिखा था :

'कैप्टिन जेम्स साहब बहादुर, सलाम। नूरा को सजा देना बज़हरी था इसीलिए उसे ले जा रहा हूँ। यक़ीन मानिए आपकी मिसी का बदला मैं पूरा-पूरा लूँगा। इसके अलावा मुझे भी नूरा से निवटन

इसीलिए मुझे 'कोट गारद' में उसे ले जाना पड़ा। यक़ीन मानिए साहब, मित्राय नूरा के मने किमी और चीज को छुआ तक नहीं है। चाहे आप चेक कर लेना। मेम साहब को सलाम कहिएगा। उनका केरु बहुत पसंद आया था उस रोज़। मिसी बाबा को प्यार कहिएगा।

आपका दोस्त और दुश्मन—हबीबा।'

जेम्स ने पढ़कर गहरी सांस छोड़ी।

'तुम यकीनन बहादुर हो हबीबा' वह स्वगत बोला।

तोर घामा के करीब हबीबा ने अपने दोस्त ताला घाँ के यहाँ नूरा को मौज दिया था। नूरा उम बचन अधमरा-मा हो गया था। दारोगा के बँतों की नीची धारियाँ उमकी पीठ पर छोटे-छोटे माँप जैसी बन गई थी। उमके सर पर भी काफ़ी चीट थी। सर पर जूने पड़ते बक़्त उसकी नाल और इबना-दुबरा निकलीकीचों ने कई जगह पर ज़दम कर दिए थे। नूरा की अब कमरे में घकेना तो वह अमहाय और भयभीत शक्ति में हबीबा को देखने लगा। उसने टूटी हुई मस्जिद में बँधे हुए हबीबा के मुँह पर कई धप्पड़ मारे थे। पिछले अत्याचार को वह भूला नहीं था। अब उने हबीबा में दया की आशा भी नहीं थी। फर्ग पर गिरने ही वह काँप उठा। शापद अब हबीबा उमकी पिटाई करेगा।

हबीबा उमके पास आकर बोला, 'उरो मत नूरा। मैं घायल दुश्मन पर बहादुरी नहीं दिखलाता। अपने काबू में आए हुए दुश्मन को तो ओग्त तक पीट लेती है। घबराओ मत। हबीबा तुमसे लडेगा, पर वह हरु की मझाई होगी। मुना है तुम तलवार बड़ी अच्छी चलाने लग गए हो। मैं तुमने तलवार में ही लडूंगा नूर घाँ, पर अभी नहीं। पहले तुम्हारे सर घाव ठीक हो लें। इसके बाद तुम कुछ दिन घा-पी भी लो जिसमें ज़िस्म में जान आ जाए। फिर हम काबुल नदी के मगरबी किनारे पर लडेंगे। मिऊँ एक गवाह रहेगा। वह भी मने ऐना आदमी छाँटा है जो तुम्हारा पुरान

नमक हलाल दोस्त है और मेरा कद्रशनास । ईदू खाँ ! ठीक है ना नूरा ?'

नूरा उसे साँप जैसी आँखों से देखता रहा । हवीवा लाला खाँ को हिदायत देते हुए बोला, 'इसकी दवा-दारू बढ़िया तरीके से करना लाले । इसको खूब मुर्गमुसल्लम खिलाना जिससे इसके जिस्म में फिर से लौ जल उठे । और हाँ, इस पर सख्त निगरानी रखना, भागने न पाए ।'

लाला खाँ सुनता रहा । हवीवा उठकर बोला, 'अच्छा फिर एक हफ्ते वाद मैदान में मिलेंगे नूर खाँ ।'

हवीवा चला गया । नूर खाँ ज़हरीली साँसें लेकर न जाने क्या-क्या सोचता रहा । उसे वैसे कैप्टिन जेम्स की नन्ही-सी लड़की डैफ़नी की क्षमा वार-वार शूल जैसी चुभती ।

लाला खाँ ने नूरा की देखरेख में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी थी । पाँचवें दिन ही नूरा विलकुल चंगा हो गया । उसे मन चाही गिज़ा खाने को दी जा रही थी । नूरा की वाँहों की मछलियाँ वार वार फड़क उठतीं । अपने दुश्मन हवीवा की दावत उसे याद थी । उसने लाला खाँ से अपनी तलवार माँगी जो उसे दे दी गई । नूरा रोज़ तलवार के हाथ भी खाँ करता रहा । हवीवा से उसे निवटना था । हवीवा की सूरत का ख़याल आते ही उसके शरीर में नफ़रत की वाढ़ उठती और फिर महजबी का चाँद जैसा चेहरा नज़र आता । दोनों वार महजबी उसके पहलू से निकल भागी । यह अफ़सोस नूरा को अभी तक था ।

ईदू खाँ ने हवीवा के धर्मयुद्ध की चुनौती को सराहा । उसने एक वार किसी से कहा भी था—

'हवीवा शेर दिल है । उसकी ज़मीर की तराजू इन्साफ़ के काँटे से नहीं डिगती । हवीवा सच्चाई की तरफ़ है और सच्चा हमेशा फ़तह हासिल करता है ।' ईदू खाँ को शाम को पता लगा कि नूरा के अब्बा सरदार हिलाल खाँ नूरा की खोज में इधर-उधर घूम रहे हैं । ईदू ने अपने एक साथी के हाथ खबर पहुँचवाई थी । जब हिलाल खाँ ने यह सुना तो बड़े फ़ख़ू से बोले, 'उरकज़ई के ऊपर अल्लाह ताला की मेहर छाई हुई है शायद । तुरे खाँ का बेटा वहादुर के अलावा नेक तवियत भी है । हक़ की लड़ाई देखने में बड़ा मज़ा आएगा । मैं नूरा और हवीवा की लड़ाई अपनी आँखों

में देवूगा ।'

सातवें दिन काबुल नदी के पार कुदरत ने मध्यमल की कालीन बिछा रखी थी। आस-पास मिऊं पहाड़ियाँ ही चश्मदीद गवाह बनी देग्य रही थी। इनके अनावा ईदू ग्यो भी या जो पंच गहो पर बँठा हुआ-मा सग रहा था। सबने अपने-अपने षोडे बाँध दिए। ईदू ग्यो ने दोनों की तलवारों को देया फिर टटोल-टटोल कर यह भी इत्मीनान किया कि किनी ने और कोई हथियार तो नहीं छुसा रखा है। नमकती तलवारों पर धार ऐसी लगती मानो मोड़ ग्याती नदी पर दोपहर के मूरज की धूप पड रही हो।

हबीबा जोर में बोला, 'नूर ग्यो, महजबी की तरफ हाथ बढ़ाने की नुमने जो जुरअन की थी दमका बदला में, हबीब ग्यो उरकजई, तुमसे लूंगा। सँभल जाओ।' और फिर लोहे की आवाज से घाटी गूँज उठी।

दोनों तलवार की ही लड़ाई नही लड़ रहे थे, बल्कि वह एक घायल जग्घात की लड़ाई भी थी। हक और नाहक की ताकत का इम्तहान भी था। मुनने आए हैं कि हक परम्त की तलवार में गुदा की मदद ममा जाती है। और शायद यही हो भी रहा था। हबीबा नूरा पर शुरू में ही हावी हो रहा था। उमने तीन बार नूरा को बाँह और मीने पर सान रग का सोता बहाया था। नूरा हाँफने लगा था पर शायद उमकी रूह की सियाही और नफ़रत ही उसे लड़ाई जारी रखने पर मजबूर कर रही थी। दोनों चील की तरह एक-दूसरे पर झपटने और फिर अलग हो जाते।

हबीबा की शकन पर गुम्मा-भरी मुस्कान बढी भली मालूम दे रही थी। वह नूरा को खिना-खिनाकर मारना चाहा रहा था शायद। उधर नूरा की शकन पर संतान की परछाँही नजर आती। वह दाँत पीमते हुए जी जान से लड़ रहा था। महंगा हबीबा की मुस्कान ग्रायब हो गई और जैसे पसाए हुए हाथी पर घेर हावी हाने लगता है वैसे ही हबीबा नूरा को पीछे धकेलने लगा। उमने आँठ बन्द करके एक जनेऊ का हाथ मारा जिससे नूरा के कन्धे में साल ग्यून का फव्वारा छूट पडा।

हबीबा जोर में चिल्लाया, 'परवरदिगार, कर मदद !'

और उसने बढी ताकत में नूरा की तलवार पर घोट की। नूर ने हाथ से तलवार झनझनाकर दम कदम दूर जा गिरी। हबीबा ने झपटकर

एक भरपूर लात नूरा के पेट में दी जिससे वह कराहकर गिर पड़ा। हवीवा सहज भाव से आया और अपनी तलवार की नोंक उसके टेंटुए पर रखकर बोला, 'नूर खाँ, अब वोलो।' नूरा घबराया हुआ बड़ी जोर से हाँफने लगा। पसीने और खून से सना उसका चेहरा और भी भयानक लग रहा था।

ईदू खाँ साँस रोके यह सब देख रहा था।

हवीवा चिल्लाया, 'ईदू खाँ, तुम गवाह हो। इस बात को याद रखना; पर किसी से कहना मत। मैं नूर खाँ महमन्द को जिन्दगी की भीख देता हूँ। इसलिए नहीं कि मेरे अंदर रहम बगावत कर उठा है, बल्कि इसलिए कि वीवी गुलसमन का अहसान मेरी महजवीं के ऊपर छाया हुआ है और महजवीं का इशारा मेरे लिए एक मुकद्दस हुकम से कम नहीं। इसके अलावा इसके अब्बा सरदार हिलाल खाँ एक माने हुए बहादुर पठान और मेरे दानिद के दोस्त हैं।'।

हवीवा फिर वहाँ गया जहाँ नूरा के हाथ से छूटी तलवार पड़ी हुई थी। उसने उसे उठाया और ईदू खाँ से बोला, 'ईदू खाँ, ये बहादुर महमंद कबीले की तलवार इस गुनहगार के हाथ में रहने से ऐतराज करने लगी है शायद। इसे सरदार हिलाल खाँ को दे देना जिससे वह इसे अपने कबीले के किसी मजबूत हाथों को सौंप सकें।'।

हवीवा ने अपनी तलवार म्यान में रख ली और मुड़कर चल दिया। नूरा साँप जैसी निगाह से उसे देखता रहा। इसके बाद नूरा झटके से उठा और अपने घोड़े के पास जल्दी भागकर आया। घोड़े की जीन से उसने पैतालीस वोर का भारी रिवाल्वर तेजी से निकाला और हवीवा की पीठ का निशाना बाँधा।

तभी 'घाय' आवाज हुई। तेजी से पलटकर हवीवा ने देखा। नूरा की कलाई टूट गई थी शायद। रिवाल्वर उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गया था। ऊपर पहाड़ी पर राइफल लिए सरदार हिलाल खाँ खड़े थे। नूर खाँ के अब्बा सरदार हिलाल खाँ !

वे चिल्लाए, 'नूरा, तुमने महमंदों की आबरू को रोंद डाला, जलील ! इस उरकजई के लड़के की बहादुरी और नेकनीयती मैं तस्लीम करता हूँ। एक बहादुर की पीठ का निशाना बाँधकर तुम शर्म से मर नहीं गए। पर

तुम्हारी ये जनीब हरकत देखकर मैं गर्म में हज़ार मौत मर गया। महमदों ने हमेशा मौनों पर निशाना बाँधा है। गाफ़िन दुग्मन तक की पीठ पर निशाना बाँधने से पहले एक हयादार महमद खुदकुशी करना ज्यादा पसन्द करता है। ओफ़, तुमने महमदों की इज्जत धूल में मिला दी।'

हिनाल घाँ जल्दी-जल्दी डग भरने हुए पास आए और जेब से कुरान-शरीफ निकाल कर नूरा को पकड़ने हुए कहा, 'कुरान शरीफ की मुकद्दस आयतें पढ़ लो नूरा। मरने से पहले इसमें ज्यादा और कोई सकून इन्सान को नहीं मिल सकता।' और उन्होंने अपनी राइफल की नली नूरा के सीने की तरफ उठा दी।

हबीबा यह देखकर हक्का-बक्का रह गया। वह नेज़ी से भागकर आया और नूरा के मामने अड गया। 'नहीं चचा जान, आप ऐसा नहीं कर सकते। ऐसा करने से मानिद की मुहब्बत बदनाम हो जाएगी। बुदरत का निशाम तड़प उठेगा। नूरा आपका चिराग है, आपके खानदान की तबक्का है। इसके जिम्म में आपके खून की खानगी बह रही है, चचाजान। इस चिराग में आपका दिया हुआ नेन जल रहा है। आप अपने चिराग को अपने हाथों नहीं बुझा सकते।'

हिनाल घाँ बोले, 'हट जाओ हबीब घाँ। तुमने जिन्दगी अता करने वाले चाप का गजब अभी नहीं देखा है। सूबेदार दारा घाँ पठान का नाम सुना है? जिमने अपने बेटे को अपनी राइफल में मैदान में मारा था।'

हबीबा बोला, 'नाम सुना है चचा जान, पर ये भी सुना है कि बेटे को मारने वाला वही चाप बाद में अपने आँसुओं के सैलाब में छुड़ ही डूब गया। उसी चाप ने अपनी राइफल, मँडिल और तलवार अपने बेटे के मज़ार पर चढ़ा दिए और हमेशा-हमेशा के लिए अल्माह के दर पर मुआफी की हमरत लिए आज भी न जाने वहाँ-वहाँ भटक रहा है।'

हिनाल घाँ की राइफल की नली शुक गई। 'तुम क्या चाहते हो बेटे?' वह भर्राए गले में बोले।

हबीबा बोला, 'नूरा को जब मैं दुग्मन होकर भी मुआफ करने का होमला रखता हूँ चचा जान तब आपका इमे माफ करना ठँबी रज़म के मानिद होगा। इन्सान के अदर मैतान और गुदा दोनों रहते हैं। मुझे

पूरा यकीन है कि नूरा भाई के अंदर का शैतान एक न एक दिन दफ़ा हो जाएगा और फिर खुदा का नूर इनके जमीर में उजाला कर देगा। चचा जान, नूर खाँ को गुलसमन बहन की ज़रूरत है।'

हवीवा सलाम करके जाने लगा। नूरा की खूनी आँखों में शीतल आँसू छलकने लगे।

हिलाल खाँ बुझे हुए-से बोले, 'वालेकुम अस्सलाम, हवीवा बेटे !'

कॉप्टिन जेम्स क्वार्टर गार्ड से सीधा अपने कर्नल के पास पहुँचा। कर्नल स्लेटर ने गौर से वाकया सुना और बोला, 'कल पेशावर में चीफ़ कमिश्नर की कान्फ़ेंस भी है जेम्स। ये वाकया वहाँ सुनाना ज़रूरी है। कारपरल स्ट्रैची और सारे संतरियों को चार्ज शीट आज दे देनी होगी।'

जेम्स ने सर हिलाकर तामील की।

दूसरे दिन डिवीज़नल हेडक्वार्टर्स के हॉल में कान्फ़ेंस थी। कर्नल सर हैरल्ड डीन ने सब से पहले पूरे साल के वाकयात की रिपोर्ट पढ़ी थी। सर-हदी पठानों का साहस दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था। हाल ही में ख़ैबर की चौकियों पर हमले बढ़ रहे थे। पिछले सात साल की रिपोर्ट के मुताबिक अंग्रेजी शासन के बत्तीस लोगों का खून हुआ था। उन्तीस लोग घायल हुए थे और सैंतीस को पठान उठा ले गए थे जो फिरैती मिलने पर ही छोड़े गए। बाज़ार घाटी के ज़का खेल के कुछ लुटेरों ने बड़े-बड़े गिरोह बना कर छूट-पुट हमले बढ़ा दिए थे। इन हमलों को दवाने के लिए युवा लेफ़्टिनेन्ट वेवल (जो बाद में हिन्दुस्तान के कमांडर-इन-चीफ़ और वाइस-राय बने) को भेजा गया था। उधर ये ख़बरें भी गर्म हो रही थीं कि रुस के जानूस और अफ़सर उत्तरी भाग में घुसपैठ कर रहे हैं। कान्फ़ेंस में ही हैरल्ड डीन ने कहा, 'अभी हाल में एक साहसी लुटेरे हवीवा का नाम बहुत सुना जा रहा है। यह शख्स बहादुर है, ऐसा मैंने सुना। बाकी पठानों के देखते

हुए मैं कहूँगा कि यह किमी हद तक एक शरीर बदमाश है जो बच्चों और औरों पर हाथ नहीं उठाता। इसकी सरगमी अगर जारी रही तो हो सकता है यह फ्रंटियर का 'रोबिनहूड' बन जाए और हमारे प्रशासन पर छा जाए। इसके पीछे जो दो हजार का इनाम रखा था उसे मैंने चार हजार का कर दिया है।'

मेजर काफ़न ने जैम्स की तरफ देखा और फिर मुस्कराया।

चीफ़ कमिश्नर ने एक अहम बात भी बतलाई। पेनाबर की क्षेत्र में कर्नल जॉन निकलमन को पठानों की एक पलटन बनाने की योजना दी गई है। हज़ारा के मुगलमान रिमानों को हथियार में लैम करना और उनको इस्तेमाल करना निकलमन ने सिखाया था। और यह किमी हद तक कामयाब भी हुआ था। यह मशिवरा मुनकर कर्नल स्लेटर बोला, 'मेरी राय है कि यह लुटेरा हवीवा अपने गश्त सापियों के साथ अगर निकलमन के 'पठान कोर' में आ जाए तो हमारी बहुत सी समस्याएँ हल हो जाएँगी। नि.मदेह चीफ़ कमिश्नर महोदय को हवीवा और उसके दल के लिए 'किंग्ड पार्डन' लेना पड़ेगा।'

मर हैरल्ड डीन ने मुझाव पर सोचा और फिर बोले, 'यह काम तभी शुरू किया जा सकता है जब यह बात पक्की हो जाए कि मरहदी पठानों का यह जन्मा हमारे 'कोर' में शामिल होने को राजामन्द है कि नहीं।'

मेजर काफ़न उठ खड़ा हुआ।

'मर, मैंने हवीवा और उसके कबीले को बहुत नज़दीक से देखा है। यह सबका बहादुर है और किमी हद तक देशप्रेमी भी है। मैदान में उड़ती हुई घूम और मनमनाती हुई गोलियों का इन्टें शोक लग गया है। हम वहाँ तक यह उम्मीद कर सकते हैं कि ये लोग हमारे मातहत अनुशासन की जंजीरों चुड़ी में पहन लेंगे? एक अजीब समस्या है। अगर मुझे इजाजत दी जाए तो हवीव ग्रा के पास मैं यह मशिवरा पेश कर सकता हूँ।'

हैरल्ड डीन मुस्करा कर बोले, 'ठीक है काफ़न, मैं तुम्हें इतने लिए इजाजत देता हूँ। तुम इस पठान के मेहमान भी रह चुके हो। मुझे यह जान कर खुशी हुई थी कि तुमने पठानों के किरदार का जवाब अफ़ेरी किरदार से दिया। बेगार, मैं और आप सब लोग ये तस्वीर भी करते हैं कि

वहादुरी और दरियादिली की हम हमेशा कद्र करेंगे भले ही हमारे दुश्मन की ही क्यों न हो। इसके अलावा एक बात और मद्देनजर रखना, काक्रन। अगर सरदार हमारी पेशावर की फ़ौज में आने से कतराए तो तुम इनसे ये पठान मेरी तरफ़ से खासेदारी समझौते के बारे में भी बात कर सकते हो। वाइस-राय और गवर्नर जनरल ने खासेदारों के लिए कानून कायदे अब बहुत अच्छे कर दिए हैं। हमारा मकसद है इन सरहद्दी पठानों की सरगर्मियाँ दबाना, भले ही वह तलवार के सहारे हो या दोस्ती का हाथ बढ़ाकर। सरहद्दी अनुशासन के लिए जो खर्च हम कर रहे हैं, अगर उसके आधे खर्च में हम इन्हें अपना खासेदार बना सकें तो कोई हर्ज नहीं है। हमें इनकी तरफ़ से निश्चित होना है।'

कान्फ़ेंस ख़त्म होने के बाद चाय शुरू हुई। मौका देखकर ही सहमते हुए कर्नल स्लेटर ने नूरा वाला वाक़या सुनाया। सर हैरल्ड डीन सुनकर स्तब्ध रह गया।

'कर्नल स्लेटर, इस बात को दवा दिया जाए। इससे हमारी बहुत बदनामी होगी। पूरी गाड़ की सजा दी जाए पर जुर्म कुछ और दिखाया जाए। जो कुछ भी हो, हवीवा दरियादिल आदमी है। अगर वह तुम्हारी मशीन-गनों और राइफल भी शराबी गाड़ की नाक के नीचे ढोकर ले जाता तो शायद मैं तो गवर्नर जनरल को अपना मुंह भी नहीं दिखा पाता।'

कर्नल स्लेटर और जेम्स की गर्दनें शर्म से झुक गईं।

'जैसे भी बन सके, इस हवीवा को हमें अपना बनाना होगा। अगर हवीवा दोस्त बनने में गुरेज भी करे, फिर भी कोई ऐसी चाल चलनी होगी कि वह अगर दोस्त न बन सके तो दुश्मन भी न रहे। मेजर काक्रन को मेरे दफ़्तर में भेज दो। मैं उसे 'व्रीफ़' करूँगा, स्लेटर। वह बहुत जरूरी काम लेकर जा रहा है। सोचो, हमारी छावनी में और हवीवा हमारी टोपी उतार ले जाए। काश, मैं हवीवा से मिल सकता तो उसकी पीठ ठोक कर कहता कि तुम निःसंदेह बड़े जीवट के लुटेरे हो।'

मेजर काक्रन को सर हैरल्ड डीन ने घंटे भर तक अपने आफ़िस में 'व्रीफ़' किया था। दूसरे दिन एक स्ववाङ्मन और चार पहाड़ी तोपों के साथ मेजर काक्रन दर्रे की तरफ़ चल पड़ा। उसके आगे वाले घोड़े पर उसका

मेजर मफेद झडा लहरावा चल रहा था ।

हबीबा के पाम जब खबर आई तो वह फौरन अपने साथियों को लेकर चलाया । दरें के मोहाने के पाम वह ऊँचाई पर अपने साथियों को लेकर गुदा हो गया ।

मेजर काफन ने यह देखकर अपने विगुलर को विगुल वजाने का हुकम दिया । काफन के मवार दूर गए । मफेद झडे वाने सवार के साथ अकेला मेजर काफन आगे बढ़ा । कुछ पाम आकर हबीबा ने उसे पहचान लिया । ह भी अपने एक साथी को लेकर आगे बढ़ा ।

मेजर काफन और हबीबा पचाम गज की दूरी पर अपने-अपने घोड़ों में टनर गए । काफन ने मुस्करा कर हाथ उठाया और हबीबा ने उसे मनाम किया ।

‘हबीब खाँ बहादुर,’ मेजर काफन पाम आकर हाथ मिलाते हुए बोला, ‘मुझे पेगावर के चीफ कमिश्नर कर्नेल मर हैरल्ड डीन ने भेजा है । हमारे ब्राउटर्स गाइड से नूर खाँ को ले जाना हिम्मत का काम था । हमारे हथियारों को न घना शराफत का काम था । चीफ कमिश्नर के अलावा हमारी कौम के सब लोगों ने तुम्हारे इस नैक इशारे की खुले दिल से तारीफ की है ।’

हबीबा मुस्करा कर बोला, ‘साहब, कोट गारद कप्तान जेम्स साहब था था । उन्हें मैं दोस्त कबूल कर चुका हूँ । हम लाख लुटेरे हैं पर दोस्त की दृष्टि कभी नहीं लूटने । हाँ, मैदान में जब मौत अपने नर्म गाने लगती है तब हम उस दोस्त में भी दुश्मन को तस्वीर देखने हैं और उसे लूटने और मारने में बड़ा प्रयत्न ममकते हैं ।’

मेजर काफन ने मर हिलाया, ‘हम तुम्हारी बहादुरी पर श्रद्धा है, हबीब खाँ । हम चाहते हैं कि किसी भी तरह हम तुम्हें अपना दोस्त बना लें । हाल ही में पेगावर में बहादुर पठानों की एक बड़ी पलटन खड़ी हो रही है । उन में तुम जैसे जीवाब मरदार अपने इन हीरो के साथ आ जाओ तो हमारी हिम्मत के दरवाजे खुल जाएँ ।’

हबीबा मुनकर मुस्कराया और बोला, ‘जंगल की आबोहवा की चाट जिन गेर को लग जाती है वह सोने के पित्रहे तरु को हिकारत की निगाह से देखता है । हम लोग आबारा त्रिन्दगी के आदी हो गए हैं, मेजर साहब ।

नीकरी हमसे शायद ही हो पाएगी। हाँ, आपकी दोस्ती का हाथ बढ़ा देखकर हम सोचेंगे कि किस तरह से हम आपके बन सकेंगे। लेकिन इसके लिए हमें अपने कबीलों के बुजुर्गों से इजाजत लेनी पड़ेगी। दर हकीकत वे लोग ही सरदार हैं। हम तो उनके बच्चे हैं। मुल्क की इज्जत और क़ौम की आवर के फ़ैसले वही करेंगे।'

मेजर काक्रन बोला, 'हवीव खाँ, अगर हमारी किस्मत में तुम और तुम्हारे बहादुरों को खाकी बर्दियों में देखना नहीं बदा है तो कम से कम हम इतना तो कर सकते हैं कि जब भी आमना-सामना हो तो हम दोनों के चेहरे पर मुस्कराहट फैल सके और बन्दूकों की नलियों झुक जाया करें। चीफ़ कमिश्नर साहब तुम्हें खासदार का खिताब और वँधी हुई रक़म सरकारी खज़ाने से देने को रज़ामन्द हैं। जिन भी कबीलों की सिफारिश तुम करोगे उन्हें माकूल रक़म हर महीने मिल जाया करेगी।'

हवीवा मेजर काक्रन को घूरते हुए बोला, 'और इस ऐजाज के बदले में हमें क्या करना होगा?'

'आपके हाथों में दोस्ती की खुशबू की हमें उम्मीद होगी', मेजर काक्रन बोले, 'उन पर से बनावटी हमदर्दी के दस्ताने उतार देने होंगे। बज़ीरस्तान से लेकर सफ़ेद कोह पहाड़ तक हमारे दस्तों और काफ़िलों के तुम जामिन होंगे। ज़रूरत पड़ने पर तुम हमारी इमदाद को आओगे और जब तुम्हें हमारी इमदाद की तबक्को होगी, तो हम हमेशा तुम्हारी बगल में खड़े नज़र आएँगे।'

हवीवा बोला, 'मैं अपने बुजुर्गों से सलाह करूँगा और उनसे इजाजत लूँगा। मेजर साहब, एक बात याद रहे। हम और हमारे कबीलों में जैसी भी हवा बहती है, हम उसकी खुशबू से ही मस्त हैं। हम पिछड़े हुए हैं तो भी अपने पिछड़ेपन में सकून महसूस करते हैं। आप तरक्कीपसन्द लोग हैं। अगर हमें आपकी तरक्की पसन्द आएगी तो हम खुद आपसे उसका जादू सीखने आगे बढ़ेंगे। आप तरक्की की मंजिल हमें दिखाने के बहाने हमारे इलाकों में कभी घुसने की ज़ुरअत नहीं करेंगे। तवारीख ने चीख-चीख कर हमें अगाह किया है कि आप उस पाए के मेहमान हैं जो मेजवान के घर में आकर फिर वापस नहीं जाते।'

मेजर कागन हुआ ।

'हबीब खाँ, हम जब भी मेहमान बनकर आएंगे तो आपकी सरहद पर ही दस्तरख्वान बिछा कर आपकी मेजबानी कबूल करेंगे और वहीं से वापस चले जाएंगे । आप के घर की तो क्या, आपकी सरहद तक की दहलीज तक नहीं लायेंगे । ये हमारी जुबान रही । गामादारी हम आपको अता करेंगे, उसके ऐवज में गामादारी की उम्मीद भी करेंगे ।'

हबीब ने हाथ मिलाया ।

'इन्शाअल्लाह, हम दोनों ईद के बाद यानी जुमेरात को यही मिलेंगे । मैं अपने बुत्रुमं रहनुमाओ से उनके फंगले और शर्तें मुनकर आप की बना सकूंगा ।'

इसके बाद दोनों के लश्कर मुह कर चल दिए ।

गुलसमन नूरा की बांह को संक कर पट्टी बांध रही थी । हिलाल खाँ ने धाकर खेंचारा और कहा, 'बेटी, मैं सरदार तुरें खाँ के यहाँ जा रहा हूँ । शाम तक वापस आऊँगा ।'

हिलाल खाँ अपनी औलाद को डिल पर पत्थर रख कर घर पर ले तो आए थे पर ये बात सिर्फ गुलसमन से करते थे । नूरा के जमीर ने अब तक कई हिचकोले खाए । गुलसमन उसकी शरीके ह्यात के असाया एक बेयाक दोस्त भी थी । सरदार हिलाल खाँ ने आठ दस सरदार इबट्टे करके अपनी हवेली के आंगन में ही नूरा और गुलसमन का निवाह पड़वाया था । नूरा हिलाल खाँ से और नहीं मिला पा रहा था । निवाह के बाद जब हिलाल खाँ ने नूरा के हाथ में छूटी तनवार गुलसमन को पकड़ा कर कहा, 'अपने कपीने की तनवार में तुम्हारे हाथों में साँप रहा हूँ ।' यह मैदान में छूटकर गिर गई थी । मुझे हार-जीत का यात की चोट मेरे दिमा पर नील डाल गई बेटी कि मेरे घू-

की पीठ पर निशाना बाँधा। काश, वह उसके सीने की तरफ निशाना बाँधता।'

गुलसमन ने दोनों हाथों में तलवार लेकर सँभाली थी। नूरा यह देख कर तड़प उठा था। उसके दिल से रफता-रफता सियाही के दाग मिटने लगे थे वह घंटों सोचता और फिर गुलसमन उसके टूटे दिल के टुकड़े बार-बार धीनकर जोड़ने की कोशिश करती। उसकी उदास मुस्कराहटों ने नूरा के दिल पर सच्चाई का साया डालना शुरू कर दिया और नूरा को अब अहसास होने लगा था कि उसके जमीर में एक नूर फट कर एक अजीब सकून की किरनें बनकर उसकी जिन्दगी के कोने-कोने में बिखेर रहा है। जब अपने किए पर इन्सान को पछतावा होने लगता है तभी वह खुदा की रहमत के काबिल बन पाता है। नूरा अकेले में कभी महजबीं से खयालों में माली माँगता तो कभी हवीवा से।

उस दिन जब बहुत अफ़सुर्दा होकर उसने गुलसमन से कहा, 'गुल, क्या मुझे महजबीं माफ़ कर सकेगी? क्या मैं कभी हवीवा की आँखों में झाँक कर उसका ऐतक़द पा सकूँगा।'

गुलसमन यह सुन कर बहुत खुश हुई थी। उसे लगा जैसे नूरा के दिल पर चढ़ी मँल की परतें जल्दी ही आँखों के रास्ते बह जाएँगी। वह हमेशा नूरा को गलती कबूल करने की हिम्मत जुटाने की बातें करतीं। नूरा उदास होकर बोला, 'अब्बा की नज़र में मैं इतना जलील बन चुका हूँ कि मुझे मुआफ़ी की कोई उम्मीद नज़र नहीं आती।'

गुलसमन ने उसके वालों में अँगुलियों फेरते हुए कहा, 'जिस दिन तुम्हारी नेकी बशावत कर उठेगी नूरा, उस दिन तुम ग़रूर का झूठा लबादा उतार फेंकोगे और तुम्हारे अल्फ़ाज़ में कुरान शरीफ़ की आयतों की मिठास घुला जाएगी। उस दिन तुम्हें ये सब मुआफ़ करने के अलावा अपने गले भी लग लेंगे।'

और आज हिलाल खाँ सिर्फ़ गुलसमन से बातें करके जब चले तो नूरा को अहसास हुआ जैसे कि उसके अब्बा हिलाल खाँ के गुस्से के अंदर एक बेजुबान दर्दबसा हो जिसे वे बतलाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हों।

हिलाल खाँ अपने कुछ आदमी लेकर सरदार तुर्रें खाँ के पास पहुँचे। तुर्रें खाँ ने बाँहें फैलाकर उन्हें सीने से लगाया। कुछ देर बैठ कर हिलाल खाँ

बोले, 'तुरेँ खाँ तुम शेर के मानिन्द हो, मगर तुम्हारा बेटा हबीब खाँ मेरे-बबर है। उरकजई की रूहे-खाँ है हबीब खाँ। मैंने तुम्हारे मेरे-बबर के लिए एक शेरनी तजवीज की है। मेरा मन्शा है कि तुम मेरे माय चल कर उमके अब्बा से उमका हाथ हबीब खाँ के लिए माँगो।'

तुरेँ खाँ चौंकर बोले, 'हिलाल खाँ, मेरे बेटे पर तुम्हारा भी तो हक है। बोली, किमके घर की चाँदनी चुराकर तुम मेरे सहन में छिटकवाना चाहते हो?'

हिलाल खाँ बोले, 'गुलाब खाँ की बेटी महजबी जब तुम्हारे यहाँ आएगी तो उरकजई कबीने की विस्मत चमक उठेगी। मैंने गुलाब खाँ से जिक्र किया था। उसने जबाब दिया कि जिस दिन तुरेँ खाँ उसके दरवाजे पर आएगा उग दिन उमके यहाँ ईद का सा माहौल छा जाएगा।'

तुरेँ खाँ ने हबीबा और महजबी की कशिश के विस्मय सुन रखे थे। वे बोले, 'हिलाल खाँ, आनेवाली इस ईद को ही मैं तुम्हारे साथ हबीबा को लेकर गुलाब खाँ के यहाँ चलूँगा।'

हिलाल खाँ की घाँटें खिल गईं। हिलाल खाँ ने घोड़े की पीठ से दो घँतियाँ उतारीं। घँतियों में दो हजार रुपये थे जो चलने वक्त गुलममन ने हिलाल खाँ को दिए थे।

'लो तुरेँ खाँ, तुम्हारे दो हजार में वापस कर रहा हूँ। मेरे बेटे नूरा के लिए मुझ में एक गूबगूरत झूठ बोल कर हबीब खाँ इन्हें दे गया था। बाद में मुझे पता चला कि ये रुपये तुमने अपने पाम में दिए थे। तुरेँ खाँ, तुम्हारी दोस्ती पर मैं नाब्र करता रहूँगा।' तुरेँ खाँ को हिलाल खाँ ने अपने गले में लगा लिया।

'ईद के रोज तैयार रहना, दोस्त।' हिलाल खाँ चलते वक्त बोले थे।

ईद के रोज हिलाल खाँ, तुरेँ खाँ, हबीब खाँ और कुछ मायी मुगुफजई की हद्द में घुमे थे। गुलाब खाँ ने बड़े इन्तजाम किए थे। चाँदी के कटोरोमें जाफरान और मूने मेवे में भरपूर मिमई बनवाई थी। जब दस्तरखवान बिछवाया तो लगामानो किमी यामोण शील पर चाँदनी ने चाँदी की परत चढ़ा दी हो।

तुरे खाँ और गुलाब खाँ जब गले मिले तो आँखों में ठंडे आँसू तैरने लगे थे । गुलाब खाँ ने कहा था, 'तुरे खाँ, मेरी उस बात को माफ़ कर देना । वह एक जज्वात का अंधड़ था । हमारे बेटे हवीवा ने पठान कौम का सर ऊँचा उठाया है । ऐसा मेहमान पाकर मैं खुशी से पागल सा होने लगता हूँ ।'

तुरे खाँ हँसकर बोले, 'गुलाब खाँ, मुझे अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मैं तुम्हारे आँगन के चाँद को जल्द ही चुरा कर ले जाऊँगा ।'

'ये चोरी तुम्हें मुबारिक हो तुरे खाँ', गुलाब खाँ बोले, 'हवीवा का महजवीं पर उसी दिन हक़ हो गया था जब उसने उसके भाई की जान बचाई थी । शेरों के बच्चे जब खेलते हैं तो खेल-खेल में खून बहने ही लगता है ।'

हिलाल खाँ बोले, 'अगले पीर के दिन निकाह पढ़ा जाएगा गुलाब खाँ सब इन्तजाम रखना ।'

सिमई और तरह-तरह के खाने खाकर वे ख़सत हो गए ।

अगले पीर के दिन निकाह पढ़ा गया और जब हवीवा उस घर का दुल्हा बनकर हवेली के अंदर गया तो महजवीं के रिश्तेदारों ने उसे सलामी दी । गुलफ़ाम हरेक को हवीवा से मिलाता जाता और वे रुपहली थैली और गिन्नियाँ दे देकर हवीवा का सलाम कबूल करते जाते । आखिरी कोने में गर्दन झुकाए कोई बैठा था । उसके पास बड़ी-बड़ी पलकें उठाये बड़ी उम्मीद से हवीवा को कोई देख रहा था ।

हवीवा गुलसमन के पास आकर खड़ा हो गया । गुलसमन के मुरझाए ओंठों पर एक मुस्कान फैल गई । हवीवा को लगा जैसे गुनहगारों पर खुदा ने रहमत बिखेर दी हो । गुलसमन ने चाँदी का शमादान पेश किया जिसमें फ़िरोज़े जड़े थे ।

'हवीव खाँ भाई, जब भी इसमें शमा फ़िरोज़ा होगी उसकी लरजती ली में तुम्हें इस बदनसीब बहन की खामोश सदा सुनाई देगी ।'

'नहीं गुलसमन बहन, इसकी ली में मुझे हमेशा अँधेरे पर गालिव होने वाली मुकद्दस रोगनी दिखेगी जो मुझे ज़िन्दगी की मंज़िलों की सही राह दिखाया करेगी ।'

बगल में बैठे नूरा की गर्दन झुकी की झुकी रही । हवीवा ने आकर नूरा के हाथ पकड़ लिए । उसके हाथों पर तभी दो गरम-गरम मोती नूरा

की आँगों में टपक पड़े।

‘नूरा भाई यकीन मानो, जितने भी रिश्तेदारों ने मुझे राखामी के तोहफे दिए हैं, वे सब मुझारे इन दो मोतियों के आगे गर्द हैं। ये मोती जमीर के सीपी में पलकर कुदरत का नायाब तोहफा बन गए हैं। मैं इन्हें बचूँ करता हूँ और तुम्हें अपना मगा भाई कबूल करता हूँ।’

नूरा की आँवों में सोने वह निकले। वह हवीवा में लिपटकर जार-जार रोया। रोते हुए बोला, ‘मैं अपना तजाराफ कराना भूल गया हवीवा भाई। मैं महजबी बहन का बदगुमाँ भाई हूँ।’

हवीवा की आँवें भर आईं। ‘तुम हम दोनों के भाई हो, नूरा भाई।’

हवीवा और नूरा के मिलन से माहीन पाक हो गया।

जब महजबी डोली में बैठकर कबीला छोड़ कर जाने लगी तो नूरा ने डोली उठाने बचन कथा दिया। यह देखकर गुलममन के चेहरे पर नूरानी तत्रली फैल गई। दूर खड़े हिलाल खाँ की कठोर आँखें नम हो गईं। जब उन्होंने आँखें बचाकर आँव की कोर आस्तीन में पोछी तो गुलाबखाँ ने उनके कंधे पर हाथ रख कर कहा, ‘हिलाल खाँ गृती के बचन ये आँसू कौन ? देख नहीं रहे हो, एक महमदजादा आज यूनुफजई की शराफत की मात देकर जा रहा है। मैं इस निरुस्त को कबूल करता हूँ। आज से नूरा और गुलफाम में कोई फर्क नहीं रहा।’

तुरें खाँ ने तभी कहा, ‘आमीन !’

हवीवा ने अर्प्रेत्र अरुगर मेजर कात्रन की बात सरदार तुरें खाँ के कानों में टाली थी। तुरें खाँ ने उमी बचन कहा, ‘ये ममता पूरी कौम का है बेटे। मेरा मशियर है कि मय कबीलों में खबर भिजवा दी जाए। एक जिरगा किया जाए और उगमें फ्रंमला हो। जिरगा सोई टक्का के पाम बाने मैदान में टीक रहेगा क्योंकि यह जगह मय कबीलों का मरकज पड़ता है।’

हवीवा मय एक कबीलों के मरदारों से मिला और बिरना होना भी

तय हो गया। लोई डक्का के मैदान पर अजीब समाँ था। चारों ओर कबीलों के खेमे लग गए। चारों तरफ पठानों का समूह था। शाम को बड़ा खाना हुआ। चारों तरफ समूचे बकरे सिक रहे थे। मेवे, जाफरान और घी की खुशबू से माहील तक के मुँह में बार-बार पानी आने लगा।

खाने के बाद एक बड़ा गोला बनाकर बुजुर्ग सरदार कुल्ले और साफ़े पहने बैठे। हुक्के धूमने लगे। खुशबूदार तम्बाकू के धुएँ सुरमई रंग की बदलियों की तरह छाने लगे। मसला पेश किया गया। अंग्रेजों की खासेदारी कबूल की जाए या नहीं। बड़ी देर तक बहस-मुवाहिसे होते रहे। सरदारों के बड़े लड़के भी उनके पीछे बैठे थे। हवीवा ने खड़े होकर मेजर काकन की बात सब को फिर से बतलाई। काफ़ी देर बाद भित्तानी के सरदार कुहन दिल खाँ, जो उम्र में सबसे बड़े थे, बोले, 'सरदार विरादरो, पिछले जिहाद की धूल बड़ी मुश्किल से बैठ पाई है। मेरा तजुर्वा है, पठानों में बहादुरी की कमी नहीं है। कमी है तो मैदानी फ़रेव की है, मैदानी निज़ाम की है। हार-जीत की लड़ाई शायद हम जम कर नहीं लड़ पाए, पर मौत की आँख-मिचौनी हम खेलना जानते हैं। मारो, लूटो, भागो का इल्म हमें आता है। हमारे दुश्मन इस चीज़ से डरते हैं। अब सवाल ये है कि हम खासेदारी कबूल करें या नहीं। मेरे ख्याल से खासेदारी की रकम हमारे हमलों की एवज़ में महज़ एक रिश्वत है। क्या हम अपने मुल्क की आज़ादी गिरवी रख दें? नहीं!'

हवीव खाँ बीच में सलाम करके खड़ा हो गया।

सरदार कुहन दिल खाँ मुस्करा कर बोले, 'तुम कुछ कहना चाहते हो मेरे बच्चे।'

हवीवा गला खँकार कर बोला, 'अब्बा हुज़ूर, अगर खासेदारी का मक़सद हमारी आज़ादी और बेवाक़ी को ख़रीदना है तो हमें इसको ठुकरा देना चाहिए। अगर अंग्रेज हमारे हमलों के राज़ब से तंग आकर हमारी दोस्ती ख़रीदना चाहते हैं तो इसमें कोई हर्ज़ नहीं है। उन्होंने कबूल किया है कि हमारी सरहद को वे किसी भी बहाने का सहारा लेकर नहीं लाँघेंगे। जिस दिन वह अपना इकरार तोड़ने की ज़ुरअत करेंगे हम तूफ़ान की तरह उन पर टूट पड़ेंगे। आप बुजुर्ग हमें रोशनी दिखाइए कि हम मुस्तकिल

है कि वच्चों का सरदार बनना हमारे वहादुर सरदार तुरे खाँ का बेटा हवीव खाँ कबूल करे।'

सब तरफ़ मुबारकवाद सुनाई देने लगा।

हवीवा खड़ा होकर बोला, 'बुजुर्गवार निगहवानो सुनिए, जो कुछ मैदानी हथकंडे मैं आप लोगों के तजुर्वे सुन-सुन कर जान पाया हूँ, उन्हें मैं अपने सब भाइयों को बताऊँगा। हरेक कबीले के सरदार का लड़का सरदार माना जाएगा। अगर कभी हम सबको इकट्ठा होकर लड़ने पर मजबूर होना पड़ा, तब हम सलाह करके ही फ़ैसला करेंगे। मैं अपने भाइयों का सरदार बनने के बजाय सिर्फ़ उनका सलाहकार दोस्त बन कर रहूँगा।'

सब तरफ़ लोग बोल उठे, 'आमीन। हमें अब भरोसा है कि पठान अब आपस की रंजिशों को निवटाने में अपना वक्त जाया नहीं करेंगे।'

जिरगे की रस्म के मुताबिक रात को चंग और डफ़ लेकर सब पठान मस्त होकर पशतों में गाने लगे।

हवीवा ने चलते वक्त सरदारों से इत्तिजा की कि जुमेरात के दिन सब कबीलों के छोटे सरदार अपने-अपने साथियों के साथ दर्रे के नजदीक मिलें जिससे खासेदारी की बाबत अंग्रेजों से बातचीत सबके सामने हो सके।

हिलाल खाँ जब नूर खाँ को लेकर जिरगे में शिरकत करने चले गए, उसी शाम को एक घुड़सवार कबीले में घुसा था। हिलाल खाँ के दरवाजे पर आकर उसने दस्तक दी। गुलसमन ने आकर दरवाजा खोला तो एक औरत सवार को अपने सामने देखा।

'सलाम वानो', वह बोली, 'मैं गुलसमन वानो से मिलना चाहती हूँ।'

'कहिए, मैं ही गुलसमन हूँ,' गुलसमन ने जवाब दिया।

'मुझे सहारा कहते हैं', वह सहमती हुई बोली, 'मैं नसीर खाँ की बदन-

सोच बोधी हूँ जो आजकल आपके यहाँ कूद हैं। मैं एक हजार फिरती के साई हूँ।'

गुलसमन ने गौर में उसे देखा, 'गालिबन आपको मालूम होगा कि मेरे गालिब नूर खाँ और अब्बाजान बाहर गए हैं। नसीर खाँ को अब्बाजान अपने पाम से एक हजार देकर लाए थे।'

'मुझे मानूम है बानो', सहरा बोली, 'इसी वजह से मैं यहाँ आई हूँ कि अपने गालिब को आपसे रहम की भीख माँग कर छुड़ा लाऊँ।'

'पर इगला फ़ैसला मिफ़्र अब्बाजान ही कर सकते हैं', गुलसमन बोली।

'मैं यह सुनकर आई हूँ बानो', सहरा बोली, 'कि गुलसमन बानो का फ़ैसला मरदार हिजाल खाँ का ही फ़ैसला माना जाता है। मैं अपने बशगुमा गालिब के लिए आपसे रहम की भीख माँगने आई हूँ। मैं भी कोशिश करूँगी, बानो, कि अपने गालिब को आपकी तरह नेकचलन बना सकूँ। आप एक औरत ही नहीं हैं, बानो, आप बहुत-सी कमजोर औरतों के लिए मजिब के चिराग के मानिन्द भी हैं।'

गुलसमन आजबाब हो गई। उसने एक हजार की धनी ले ली और पर के अंदर जाकर अहमद और गौर खाँ को साथ लेकर लौट आई।

'जाओ नसीर खाँ को तहज़ीबे से यहाँ ले आओ', शब्दों में गुलसमन ने हुक्म दिया।

घोड़ी हीं डेर में मुरसाया हुआ नसीर खाँ आ गया। अपनी बीबी को देगकर वह बड़न शमिन्दा हुआ।

'मैंने तुम्हारी बीबी सहरा बानो से फिरती कबूल कर ली है नसीर खाँ', गुलसमन बोली, 'अल्ताह करे इनकी मुराद पूरी हो और ये तुम्हें सही रास्ते पर ले जाने में कामयाब हो सकें। अपने अब्बाजान की रजा बगैर मैं नसीर खाँ को छोड़ रही हूँ।'

नसीर खाँ तिलमिना गया और बोला, 'जाने से पहले मैं आपकी टोनीब पर अपनी बीबी सहरा की अकीदत की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आज से किसी भी पड़ान की पुत्रबिरी नहीं करूँगा। मैं अब फलों की दुकान ही करूँगा त्रिमके बारे में मैंने नूर खाँ को सठ बुलवाया था। सरदार

हिलाल खाँ जब भी पेशावर आएँ मुझे छावनी की मंडी में दुकान पर आँगे। आपके दर पर मुख़विर नसीर खाँ मर चुका, वानो। आपके दर से अब एक बेचारा नसीर खाँ जा रहा है।'

गुलसमन ने आसमान की तरफ देखकर कहा, 'आमीन।'

सहरा नसीर खाँ को लेकर चल दी।

लौटने पर गुलसमन ने एक हजार की थैली हिलाल खाँ के आगे रख दी और कहा, 'अव्वा जान, एक हजार की फिरती लेकर नसीर खाँ की मासूम बीबी आई थी। मैंने फिरती कबूल करके उसे छोड़ दिया है। नसीर खाँ अपनी बीबी की कसम हमारी दहलीज़ पर खाकर गया है कि आज से नसीर खाँ मुख़विर मर गया। अलवत्ता नसीर खाँ फलफ़रोश ज़रूर पेशावर की छावनी की मंडी में मिलेगा। मैंने आपसे वग़ैर इजाज़त लिए उसे उसकी बीबी को साँप दिया है अव्वा जान।'

हिलाल खाँ ने गुलसमन के सर पर हाथ रखकर कहा, 'तेरा फंसला कभीगलत नहीं हो सकता बेटी। मेरे भटके हुए बेटे को तूने इन्सान बना डाला। मुझे यक़ीन है कि वह मुख़विर भी ज़रूर इन्सान बनकर ही गया होगा।'

रूपों की थैली उठाकर हिलाल खाँ ने गुलसमन के हाथों पर रख दी। 'इसे अपने ही पास रख ले बेटी,' वे बोले, 'तुझ पर खुदा के करम का साया है जो अब भी तेरी नेकनीयती की परछाई पड़ते ही नेक बन जाता है।'

जुमेरात से एक दिन पहले ईदू खाँ को गुलसमन ने हबीबा के पास था। ईदू ने हबीबा को जाकर बतलाया था कि महमंदों के कबीले के उनके छोटे सरदार नूर खाँ वग़ैर तलवार के आएँगे।

'क्यों?' हबीबा ने चींककर पूछा।

'गुलसमन भाभी ने कहलवाया है कि जो तलवार नूर खाँ के

आपने गिराई थी, उमे हिलात या अन्धा जान ने गुलममन को मोर दो और ताकोद को कि वह कबीने की हिफाजत का डिम्मा करून करे। ईदू सर शुकुकर बोना।

हबीबा ने मुनकर 'हूँ' कहा फिर बोला, 'गुलममन बहन को बताना कि मैं कन आऊँगा।'

दूसरे दिन हबीबा सरदार हिलात या के सामने मताम करके यड़ा हों गया।

'कैसे आना हुआ बेटे?' हिलात या बोले।

'अन्धा जान, मैं आपसे कुछ मांगने आया हूँ' हबीबा बोला।

हिलात या अचरज में आकर बोले, 'बया मांगने आए हो बेटे?'

हबीबा सर उठाकर बोला, 'अन्धा जान, गुलममन बहन को जो तनवार आपने दी है न, उमे मैं लेकर सरदार नूर या की बमर में बांधना चाहता हूँ।'

हिलात या बोले, 'बया तुम ममलने हो कि नूरा इत ब्राबिल बन गया है?'

'जी हाँ अन्धा जान', हबीबा बोला, 'नूरा भाई अब एन मरदिन और एनपमन्द सरदार है।'

हिलात या मुनकर अडर गत् और गुलममन से तनवार ले आए। नूरा को भी उमी दम बुनाया गया। हबीबा ने तनवार लेकर नूरा की बमर में बांध दी और उनसे बोला, 'नूर भाई, हजरत मुहम्मद साहब की यी तनवार पर निघा या कि ये इममीर गिफ्त जालिम के ऊपर मडलूम की हिमायती बनकर उठा करेगी। मैंने अन्धा जान को बोन दिया है कि नूरा भाई भी इत तनवार को हक के लिए ही गोचेंगे। मेरी इज्जत तुम्हारे हाथो है, नूरा भाई।'

नूरा ने तनवार पर हाथ रखकर बटा, 'मैं बमम घारर रहता हूँ, हबीबा भाई, कि तुम्हारी उमानन की मैं जी-जान में आवरू रगूँगा।'

हिलात या ऊपर हाथ उठाते हुए बोले, 'अन् हम्शो निल्लाह! दोनों बगीसों के बीलो-करार की इज्जत रचना।'

उन्होंने आकर नूरा और हबीबा दोनों को माप-माप अपनी बाहों में

भरते हुए कहा, 'तुम दोनों मेरी दोनों आँखें हो ।'

चलते वक्त हवीवा नूरा से बोला था, 'कल ठीक वक्त पर अपने बहादुरों के साथ पहुँच जाना सरदार नूर खाँ ।'

और फिर सरदार हिलाल खाँ को सलाम करके हवीवा ने अपने घोड़े को एड़ दे दी ।

सुबह की हवा में एक अजीब खुशबू वसी हुई थी । महजवीं अँगड़ाई लेकर जब उठी तब करीब साढ़े चार बजे थे । उसने हवीवा को झकझोर कर जगाया ।

'आज तुम्हें खासेदारी कबूल करने जाना है', धीरे से वह बोली । हवीवा ने आँखें खोलकर महजवीं की ओर देखा । महजवीं संगमरमर की मूर्ति की तरह लग रही थी, फ़र्क इतना था कि उसके जिस्म से चमेली की कलियों जैसी खुशबू आ रही थी जो कि पत्थर से नहीं आती ।

महजवीं ने उसके सर पर हाथ फेरते कहा, 'तुमने नूरा को दिल से भी मुआफ़ कर दिया है या सिर्फ़ ऊपर ही ऊपर से किया है ।'

हवीवा उठता हुआ बोला, 'नहीं महजवीं, मैंने उसे दिल से माफ़ कर दिया है । उसके अब्बा हिलाल खाँ एक पठान हैं । उन्होंने अपने बेटे की जान लेने में भी कतई हिचकिचाहट नहीं दिखलाई । अगर मैं बीच में नहीं आता तो वह उसे यकीनन मार डालते ।'

महजवीं धीरे से बोली, 'मैं गुलसमन बहन के अहसान नमाज़ की तरह दिन में एक बार दुहरा लेती हूँ । नूरा को रोशनी दिखाने में गुलसमन बहन और उसके अब्बा जान का हाथ है ।'

हवीवा ने हँसकर कहा, 'मुआफ़ करना भी किसी इबादत से कम नहीं, महजवीं । मुआफ़ी में खुदा की आवाज़ छुपी होती है ।'

महजवीं ने कहा, 'अब उठो । तुम्हें तैयार भी होना है ।'

महजवीं ने जाते वक्त हवीवा को अपने हाथ से पगड़ी बाँधी थी ।

हथोडा पठानों का विनाश दब लेकर दरें पर पहुँचा था। मेजर कात्रन भी अपने स्वराज्य के माप थापा था। दोनों ने हाथ विनाश कागद पर दम्नगन किए।

हथोडा बोला, 'मेरे दम्नगन के अनाया इन मरदारों के भी दम्नगन होंगे, मेजर साहब। हम में कोई छोटा नहीं है और न ही कोई बड़ा। ही उग्र में मैं मापद सबने थोड़ा-बहुन बड़ा होऊँ तो बट नहीं सकता।'

मेजर कात्रन बोला, 'हथोडा यों, तुम मैदान में दुरमन में जीना तो जानने ही हो पर दोस्तों का दिन भी जीना जानो हो। मेरा विनाश है कि अब वी बार जो तुम लोगों में इतहाद हुआ है वह कभी भी नहीं बिगड़ सकेगा।'

जाने बहा मेजर कात्रन ने पचाग हजार रुपये दिए थे जिन्हें हथोडा ने सब बचीलों के मरदारों को बराबर बाँट दिया।

मेजर कात्रन ने सब बचीलों के मरदारों को एक नई 'वी एनसीन्ड' राइफल और दो-दो सौ मोलियाँ भेंट कीं। हथोडा को राइफल के अनाया मेजर कात्रन ने एक पैतालीय बोर का नया रिवाल्वर दिया जिस पर साफेद पानिग घड़ी हुई थी।

'यह रिवाल्वर चीफ कमिश्नर ने ग्यास तीर पर तुमको भेंट में भेजा है। उन्होंने सारेसा भेजा है कि हथोडा यों ने बवाटर मार्ग के हथियारों को न धूरर दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। ऐसे बहादुर का यामी हाथ जाना उब नही देना। इसलिए उन्होंने उम दिन की बहादुरी और दोस्ती की एबब में ये तोहफा ग्यास तीर से आपके लिए भिबवाया है।'

हथोडा ने उसे लेकर अपने दिन में लगाया और कहा, 'उन्हें मेरा मलाम बहिएगा मेजर साहब और बतनाइएगा कि ये हथियार कभी आपके विनाश नहीं उठेंगे। हाँ, अगर हमारी आबादी के माप विनाश किया गया तो पहले हम आपके हथियार आपको वापस कर देंगे और फिर हम अपने हथियार आपके बर विनाश उठाएँगे।'

मेजर कात्रन सर हिलाकर बोला, 'यहीन रखो हथोडा यों, हम कभी तुम्हें विनाश का मोहा नहीं देंगे।'

सरहद के पठान खासेदारी की जिम्मेदारी कबूल करते हुए लौट पड़े। उनके इस्तक़बाल को सब बुजुर्ग सरदार इकट्ठे होकर काबुल नदी के मोड़ पर इन्तज़ार कर रहे थे। दूर से घोड़ों की कतार और कंधे पर लटकी बंदूकों की नलियों को देखकर सरदार गुलाब खाँ बोले, 'हमारे बच्चों ने एक शाइस्ता शिकस्त दी है अंग्रेजों को। जो हम जिन्दगी भर न कर पाए वह इन्होंने कर दिखाया।'

सरदार कुहन दिल खाँ बोले, 'हरेक वाप अपनी जिन्दगी में एक मीठी शिकस्त खाने को तरसता रहता है। वह है अपने बेटे से शिकस्त खाना। जब उसका बेटा उससे बेहतर बनकर दिखलाता है तो वाप को शिकस्त में भी एक गरूर का अहसास होता है। शिकस्त में भी पिनहा फ़तह झलकती है।'

सरदार हिलाल खाँ ने कहा, 'आपने सच कहा सरदार! खुदा करे सफ़ेद रोह के इस पार हमेशा हवीवा जैसा आवारा सूरज उरुज़ और गरूब होता रहे।'

जका खेल के सरदार ने ऊँची आवाज़ में कहा, 'आमीन।'

सरहद के घुघले सायों में हवीवा और उसके साथियों का झुंड बढ़ा चला आ रहा था। दूर से ऐसा लगता मानो अपना तेज फैलाता सूर्य अपने सौ घोड़ों के रथ को बड़े वेग से दौड़ाता आ रहा हो।

वज़र्ग सरदारों ने गरूर से सर उठाकर अपने मुल्क के आवारा सूरज को देखा और फिर मुस्करा कर जैसे उसे अपने से बेहतर कबूल किया हो, उन्होंने आँखों में प्यार के मोती घुल गए।

